महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत

श्री रास

श्री राज श्यामाजी

प्रकाशक
श्री ५ नवतनपुरीधाम
जामनगर

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

श्री रास

श्री श्री ग्रन्थ रास किताब अंजील वाणी पुरानी प्रमोध पुरी हबसा मध्य उतरी सो शुरु हुई.

मोहजलनुं प्रकरण

हवे पहेलां मोहजलनी कहुं वात, ते तां दुखरूपी दिन रात ।
दावानल बले कै भांत, तेनी केटली कहुं विख्यात ॥ १

इन्द्रावतीके रूपमें महामति श्री प्राणनाथजी कहते हैं, अब मैं सर्व प्रथम मोहजल (भवसागर) की बात कह रहा हूँ. इसमें दिन और रात दोनों दु:खरूप हैं. दावानलकी भाँति काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहङ्कार मनुष्यके अन्त:करणको हर क्षण जलाते रहते हैं. मैं इसका वर्णन कहाँ तक करूँ ?

विस्वने लागी जाणे ब्राध, मांहें अगिन बले अगाध ।
ते तां पीडे दुस्ट ने साध, नहीं अधखिणनी समाध ॥ २

मानों पूरा जगत ही इस रोगसे पीड़ित है. सबके अन्दर सन्तापरूपी अग्नि

जल रही है. यह माया सज्जन और दुर्जन दोनोंको पीड़ा पहुँचाती है. क्षणमात्रके लिए भी किसीको शान्ति नहीं है.

कृपा करो छो अमज तणी, सिखामण देओ छो अति घणी ।
अहिनिस लेओ छो अमारी सार, तो मोहजल उतरसुं पार ॥ ३

हे धामधनी सद्गुरु ! आप हम पर कृपा करते हैं. उपदेश भी अधिक देते हैं. रात दिन हमें संभालते हैं. तभी हम भवसागर पार कर पाएँगे.

ए माया छे अति बलवंती, उपनी छे मूल धणी थकी ।
मुनिजनने मनाव्या हार, सिव ब्रह्मादिक नव लहे पार ॥ ४

यह माया अधिक शक्तिशालिनी है, क्योंकि यह मूल स्वरूप श्रीराजजीकी प्रेरणासे ही उत्पन्न हुई है. इसके समक्ष ऋषिमुनियोंने भी अपनी हार स्वीकारी है. भगवान शंकर एवं ब्रह्माजी जैसे देवोंने भी इसका पार नहीं पाया है.

सुक सनकादिकने नव टली, लखमी नारायणने फरी वली ।
विस्नु वैकुंठ लीधां मांहें, सागर सिखर न मूक्यां क्यांहें ॥ ५

श्रीशुकदेवजी तथा ब्रह्माजीके मानस पुत्र सनकादि भी इसके प्रभावसे बच नहीं सके. इसने लक्ष्मीजी तथा भगवान नारायणको भी घेर लिया. यहाँ तक कि इसने भगवान विष्णुके वैकुण्ठको भी अपनी लपेटमें ले लिया है. सागरसे शिखर (पातालसे वैकुण्ठ) पर्यन्त इस मायाने किसीको भी नहीं छोड़ा है.

ए उपर हवे सुं कहुं, बीजा नाम ते केहना लऊं ।
एणे वचने सरवालो थयो, ब्रह्मांडनो धन सरवे आवयो ॥ ६

इसके उपरान्त मायाके विषयमें क्या कहूँ ? अन्य किन-किनके नाम लूँ ? उपर्युक्त वाक्योंमें ही सब कुछ (मायावी शक्तिका) निरूपण हो गया है. वस्तुतः ब्रह्माण्डकी सारी शक्तियाँ (धन) इन्हींमें समा गईं हैं.

तत्व सहुए एणीए जीती लीधां, चौदे लोक पोतानां कीधां ।
वली लीधो तत्व मोह, जे थकी उपन्या सहु कोए ॥ ७

इस मायाने पाँचों तत्त्व (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) तथा चौदह

लोक सहित पूरे ब्रह्माण्डको वशीभूत कर लिया है. जिससे इस विश्व ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति हुई है उस मोह तत्त्वको भी इसने अपने नियन्त्रण (काबू) में कर लिया है.

कहे इन्द्रावती वल्लभा, ए माया छे अति छल ।
हवे जुध मांड्युं छे अमसूं, एहनुं कह्युं न जाय बल ॥ ८

इन्द्रावतीके रूपमें महामति कहते हैं, हे प्रियतम धनी ! यह माया छल कपटसे भरी हुई है. अब इसने मेरे साथ युद्ध प्रारम्भ कर दिया है. इसकी शक्तिका वर्णन नहीं हो सकता है.

एहना आउध अम्रत रूप रस, छल बल वल अकल ।
अगिन कुटिल ने कोमल, चंचल चतुर चपल ॥ ९

युद्धके लिए मायाके अस्त्र (आयुध) इस प्रकार हैं – अमृत (भौतिक सुखोंका प्रलोभन), रूप (सौन्दर्य), रस (मधुर और मीठी भाषा), छल, शक्ति, दाँव-पेंच एवं बुद्धिचातुर्य तथा काम, क्रोधरूपी अग्नि, कुटिलता (कपट), कोमलता, चञ्चलता, चतुरता और चपलता.

हवे एहनो केटलो कहुं विस्तार, जोरावर अति अपार ।
मोसूं जुध मांड्युं आसाधार, जुध करे छे वारंवार ॥ १०

अब इसके प्रभाव क्षेत्रके विषयमें विस्तारपूर्वक कितना कहा जाए ? इसके पास अपार शक्ति है. इसने मेरे साथ असाधारण युद्ध प्रारम्भ किया है, यह वारंवार युद्ध करती आ रही है.

एहने लाग्यो कोई एवो खार, मारो केड न मूके नार ।
में बांध्यां सामा हथियार, तो जाण्यो जोपे एहनो मार ॥ ११

मेरे प्रति इसे ऐसी ईर्ष्या है कि यह मेरा पीछा ही नहीं छोड़ती है. जब मैंने इसका सामना करनेके लिए शील, सन्तोष और दयारूपी हथियार बाँध लिए तब मुझे इसकी घातक शक्तिका यथार्थ अनुभव हुआ.

एणे समे जे अममां वीती, केटली कहुं तेह फजीती ।
में तो रूडी रीते ग्रहीती, पण मुने लीधी जीती ॥ १२

इस समय मेरे साथ जो घटना घटी अर्थात् मेरी जितनी अवमानना (हँसी) हुई उसका वर्णन कहाँ तक करूँ ? मैंने तो सद्गुरुके चरणोंको भलीभाँति पकड़ा था अर्थात् धामधनी और सुन्दरसाथकी सेवाका कार्यभार ठीकसे उठा लिया था, तथापि उसने मुझे जीत लिया.

बांहे ग्रही लई निसरी, में त्रण जुध कीधां फरी फरी ।
पछे गत मत मारी हरी, लई वस पोताने करी ॥ १३

माया मेरा हाथ पकड़कर मुझे अपनी ओर खींच ले गई. मैंने उसके साथ तीन- तीन बार युद्ध किया. तत्पश्चात् उसने मेरी गति और मति दोनोंका हरण कर मुझे अपने वशीभूत कर लिया.

[मायाके साथ हुए तीन युद्धोंका विवरण :-

(१) प्रथम युद्ध :- सद्गुरुकी आज्ञासे अरब जाकर खेताभाईके कार्यमें पाँच वर्ष व्यतीत कर लौटते हुए मिथ्या आरोपमें एक महीना तक राज दरबारमें लेखा (गणना) स्पष्टीकरणके लिए उन्हें रुकना पड़ा. अन्तमें वे निर्दोष सिद्ध हुए.

(२) द्वितीय युद्ध :- फूलबाईका प्रसंग. ''आप धर्मको महत्त्व देंगे या पत्नीको'' इस प्रकार विहारीजीके पूछने पर श्रीजीको धर्मके लिए घर छोड़ना पड़ा. इसमें भी वे निर्दोष सिद्ध हुए.

(३) तृतीय युद्ध :- सद्गुरुकी स्मृतिमें मेला करनेकी इच्छा अधूरी रह गई. निर्दोष होते हुए भी उन्हें हब्सा (प्रबोधपुरी) में जाना पड़ा. विरहकी तीव्रताके कारण हृदयमें सद्गुरु बैठ गए और वाणी प्रकट होने लगी. इस प्रकार इन तीनों युद्धोंमें वे विजयी हुए.

किन्तु चौथी बार - राज्यका कर चुकानेके लिए दिए गए वचनोंके बदलेमें अपने मन्त्री (श्रीजी) को अहमदाबादके सूबेदारके पास (नजर कैदमें)

रखकर जामनगर नरेश वापस आए. समय पर कर न चुकानेके कारण क्रूर शासक सूबाने जामराजाके मन्त्री (श्रीजी) को दण्डित करनेका निर्णय लिया. कहा जाता है कि उस समय कानजीभाईने स्त्रीवेश धारणकर बन्दीगृहके अन्दर जाकर श्रीजीको बाहर भेज दिया. उस समय छद्मवेश धारण कर बाहर निकलना पड़ा. इसलिए श्रीजी कहते हैं, तीन-तीन बार तो मैंने मायाको जीत लिया था किन्तु चौथी बार उसने मुझ पर विजय प्राप्त कर ली है.]

तमे अनेक सिखामण कही, पण भरम आडे में कांई नव ग्रही ।
मोसूं एवी तोहज थई, जो वाणी तमारी में नव लही ॥ १४

हे सद्गुरु धनी ! आपने अनेक उपदेश दिए, किन्तु भ्रम और अज्ञानके आवरणके कारण मैंने कुछ भी ग्रहण नहीं किया. मेरी यह दशा इसलिए हुई कि मैं आपके उपदेश (वचन) का पालन न कर सका.

[ध्रोलसे आने पर सद्गुरुने पूछा था कि अब तो मायाके कार्यमें नहीं जाओगे न ! तब श्रीजीने कहा था, 'अब नहीं जाऊँगा.' किन्तु सद्गुरुके धामगमन पश्चात् पुनः राजकार्यमें लगना पड़ा जिससे उन्हें पुनः मायाका झटका लगा.]

तमे पेरे पेरे समझावी, मुने तोहे बुध न आवी ।
जुगते करीने जगावी, लई तारतमे लगावी ॥ १५

आपने मुझे अनेक प्रकारसे समझाया तथापि मुझमें विवेक बुद्धि नहीं आई. पुनः आपने मुझे युक्तिपूर्वक जगाया और तारतम्य ज्ञान दिया.

तमे अंतरगते दीधां द्रस्टांत, त्यारे भागी मारा मननी भ्रांत ।
हवे तमे आव्या एकान्त, संसार दसा थई स्वांत ॥ १६

हे सद्गुरु ! आपने मेरी अन्तरात्मामें (भीतर) बैठकर अनेक दृष्टान्त दिए, तब मेरे मनकी भ्रान्तियाँ मिट गईं. अब आप मेरे अन्तःकरणमें आकर बैठ गए हैं. इसलिए मेरी सांसारिक वृत्तियाँ सब शान्त हो गईं हैं.

ज्यारे धणी धणवट करे, त्यारे बल वेरीनां हरे ।
वली गयां काम सराडे चढे, मन चितव्यां कारज सरे ॥ १७

जब धामधनी रक्षा करते हैं अर्थात् अपनी शरणमें लेते हैं तब शत्रुका बल

भी हरण कर देते हैं, जिससे बिगड़े हुए काम पुनः ठीक हो जाते हैं और मनोवाञ्छित कार्य भी सिद्ध होते हैं.

मायाना मुख मांहेथी, जुगते काढी जोर ।
दई तजारक अति घणी, माया कीधी पाधरी दोर ॥ १८

मायाके मुखसे आपने मुझे युक्तिपूर्वक बाहर निकाला और उसे (मायाको) इस प्रकार दण्डित किया कि वह सीधी भाग गई.

धणीनी जेम धणवट, लीधी भली पेरे सार ।
आ दुख रूपणीना मुख मांहेंथी, बीजो कोण काढे विना आधार ॥ १९

पति जिस प्रकार अपनी पत्नीकी रक्षा करता है उसी प्रकार आपने मेरी भलीभाँति देखभाल की. अन्यथा हे प्राणाधार ! आपकी सहायताके बिना मुझे इस दुःखमय मायाके मुखसे कौन बाहर निकाल सकता था ?

तमे क्रपा कीधी अति घणी, जाणी मूल सगाई घरतणी ।
माया पाडी पडताले हणी, बल दीधुं मुने मारे धणी ॥ २०

हे धामधनी सद्गुरु ! मूल घर परमधामके सम्बन्धको दृष्टिमें रखकर आपने मुझपर अत्यधिक कृपा की. जिसके कारण मैंने मायाको पद प्रहारसे (ठोकर मारकर) गिरा दिया, यह शक्ति भी आपने ही मुझे दी है.

वली गत मत आवी सुध सार, छल छूट्यो ने थयो करार ।
दयानो नव लाधे पार, त्यारे अलगो थयो संसार ॥ २१

इस प्रकार गई हुई गति-मति, बल-बुद्धि मुझे पुनः प्राप्त हो गई. मायासे मुक्त हो जाने पर शान्ति और आनन्दका अनुभव होने लगा. आपकी दयाका पार पाया नहीं जा सकता है. तभीसे यह मायावी संसार मुझसे छूट गया है.

हवे आव्युं धन अविनासी, दुख दावानल गयुं नासी ।
रुदे ग्रहुं लीला विलासी, हवे ते हुं करुं प्रकासी ॥ २२

अब तारतमरूपी अविनाशी धन मुझे प्राप्त हुआ है. दुःखरूपी दावानल अर्थात् मायासे उत्पन्न काम, क्रोध इत्यादि नष्ट हो गए हैं. अब मैं धामधनीकी

अखण्ड (व्रज, रास, परमधामकी) लीलाओंको हृदयमें धारण कर इन्हें मुखरित (प्रकाशित) करता हूँ अर्थात् अखण्ड परमधामकी लीलामें विलसित (लीला-विलासी) स्वरूपको हृदयमें धारण कर उसे अभिव्यक्त करता हूँ.

हवे ए धन में जोपे जाण्युं, जिभ्याए न जाय वखाण्युं ।
मारा हैडामां आण्युं, अम विना कोणे न माण्युं ॥ २३

अब तारतम ज्ञानस्वरूप इस अखण्ड धनको मैंने भली-भाँति जान लिया है. इसका महत्त्व वाणी द्वारा वर्णित नहीं हो सकता. यह धन तो मेरे हृदयमें स्थिर हो चुका है. मेरे अतिरिक्त इस धन (अद्वैत वाणी) को अन्य किसीने भी अनुभव नहीं किया.

बल नथी आंही अमतणुं, नहीं अमारे वस ।
ए निध आवी तम थकी, ते में चित कीधुं चोकस ॥ २४

हे धामधनी ! मेरे पास तो कोई शक्ति भी नहीं थी और यह मेरे क्षमताकी बात भी नहीं है. ज्ञानका यह अखण्ड धन आपसे ही प्राप्त हुआ है. इस वास्तविकताको मैंने अपने हृदयसे स्वीकार कर लिया है.

में चित मांहें चितव्युं, जाण्युं करसुं सेवा सार ।
मल्यो धणी मुने धामनो, सुफल करुं अवतार ॥ २५

मेरे मनमें यह धारणा थी कि मैं सद्गुरु तथा सुन्दरसाथकी सेवा करूँगा क्योंकि सद्गुरुके रूपमें मुझे धामधनी प्राप्त हुए हैं. उनकी सेवा कर मैं अपना अवतार (मानव जीवन) सफल बनाऊँगा.

जे मनोरथ मनमां रह्यो, मारा धणी श्री राज ।
खरुं करतां खोटा मांहेंथी, पण नव सिध्युं एके काज ॥ २६

हे मेरे श्रीराजजी ! आप तथा सुन्दरसाथकी सेवा करनेका मेरा मनोरथ मनमें ही रह गया. इस झूठे संसारमें रहकर सत्य कार्य (सेवा) करनेका मेरा सङ्कल्प था, किन्तु यह भी सिद्ध न हो सका.

में मारुं बल जाण्युं, हुं तो छुं अति मूढ ।
ए थाय सरवे धणी थकी, ते में कीधुं द्रढ ॥ २७

मैंने अपनी शक्ति और सामर्थ्यको पहचान लिया है कि मैं वास्तवमें बड़ा अज्ञानी हूँ. धामधनीकी दयासे ही सब कुछ होता है. मुझे ऐसा दृढ़ विश्वास हो गया है.

मुने दुख साले ए मन मांहें, नव जाए कह्युं ते क्यांहें ।
गमे तमने तेहज थाय, बीजे सामुं कोणे न जोवाय ॥ २८

ए दुख लाग्युं मुने सही, ए उत्कंठा मारा मनमां रही ।
एणी दाझे ते मुने दही, निध हाथथी निसरी गई ॥ २९

मेरे मनमें यह दुःख (सद्गुरुका उत्सव अधूरा रहना) सदैव खटकता रहता है जो किसीसे कहा भी नहीं जाता. आपको जो प्रिय है वही हो रहा है. आपके अतिरिक्त किसीके समक्ष भी हमें देखना नहीं है. इस दुःखका अनुभव निश्चित रूपसे मुझे ही हुआ है, क्योंकि मेरे मनकी यह तीव्र इच्छा मनमें ही रह गई. इस पश्चात्तापरूपी अग्निकी ज्वालाने मुझे अत्यधिक जलाया, जिसके कारण सेवाकी निधि भी (सद्गुरुके उत्सवके लिए एकत्रित की गई सामग्री) मेरे हाथसे निकल गई.

जाण्युं लाभ मायानो लेसुं, निद्राने वासो देसुं ।
धणीने चरणे रहेसुं, माया कहेसे ते सरवे सहेसुं ॥ ३०

मेरे मनमें यह धारणा थी कि सद्गुरुका उत्सव मनाकर, मायामें रहते हुए भी सेवाका लाभ प्राप्त करूँ. अज्ञानकी निद्राको छोड़कर धनीके चरणोंमें रहूँ और मायाकी विघ्न-बाधाओंको भी सहन करता रहूँ.

एणे समे वली फेरवी लीधी, मायाए सिखामण दीधी ।
धणी थकी वेमुख कीधी, पाणीनी जेम पीधी ॥ ३१

इसी समय मायाने अपनी कुटिलतापूर्ण सीख देकर पुनः मेरी बुद्धिको भ्रमित कर दिया. धामधनीसे विमुख कर वह मुझे पानीकी तरह पी गई अर्थात् इसने मुझे धनीकी सेवा और दर्शनसे विमुख करा दिया.

एहवो छल करी छेतरी, मन मूल मांहेंथी फेरी ।
एणे आप सरीखी करी, चित चितवणी बहुविध धरी ॥ ३२

इस प्रकार छल कपटसे मायाने मुझे ठगा. इतना ही नहीं, मूल परमधामसे भी मेरा मन विमुख कर दिया. सत्य-धर्म और धामधनीसे विमुख कर उसने मुझे अपने अनुरूप बना लिया, इसके कारण चित्तमें भी विविध प्रकारके मायावी चिन्तन होने लगे अर्थात् मायाने मेरे चिन्तनको बहिर्मुख बना दिया और परिणामस्वरूप मेरी सद्बुद्धि भी नष्ट हो गई.

मन मांहें सवलुं देखे, जाणे माया सुख अलेखे ।
धणीनां सुख ना पेखे, विष अम्रत लागे विसेखे ॥ ३३

मनमें तो मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था कि माया सरल और सीधी-सादी है तथा इसमें अपरिमित सुख हैं. इसलिए इस भ्रममें फँसकर मैंने धनीके अखण्ड सुखोंके प्रति विचार नहीं किया जिससे मायाके विषयुक्त मिथ्या सुख मुझे अमृतके समान मधुर और रुचिकर दिखाई देने लगे.

जुओ भूलवी छेतरे केम, आगे छेतरी मुने जेम ।
सुकजी तो पुकारे एम, जे छल पुरी ए भरम ॥ ३४

देखो, यह भ्रामक माया हमें भुलाकर कैसे ठगती है ! इसने पहले भी सद्गुरुके जीवन कालमें मुझसे छल किया था. शुकदेवजीने तो इसे भ्रम और छल-कपटकी नगरी कहा है.

आहीं सोहेली थई तम थकी, एहने ओलखतुं कोय नथी ।
सुकदेवे तो कांईक कथी, बीजा रह्यां मथी मथी ॥ ३५

हे सद्गुरु धनी ! आपकी दयासे यह माया यहाँ हमारे लिए (हमारी दृष्टिसे) सरल और सुबोध बन गई है. वस्तुतः इसे कोई भी नहीं पहचानता है. शुकदेव मुनिने तो इसके विषयमें कुछ प्रासंगिक बातें कहीं हैं, किन्तु अन्य लोग तो इस विषयमें मन्थन ही करते रह गए.

एहने निरमूल करी नाखी तमे, हजी जोपे जाणी नथी अमे ।
एहना रमाड्यां सहु रमे, मांहें बंधाणां सहु को भमे ॥ ३६

हे सद्गुरु ! आपने इस मायाको निर्मूल कर दिया है. तथापि आज तक मैं

इसे भली-भाँति पहचान नहीं पाया. उसके संकेतानुसार सभी नाच रहे हैं, और इसके झूठे कर्मकाण्डके बन्धनमें बँधकर जन्म-मृत्युके चक्रमें फिर रहे हैं.

ए वचन तो आंही केहेवाय, जो अमे नव बंधावुं मायाए ।
एहना बंध पड्यां सहु कायाए, अमे छुट्या धणीनी दयाए ॥ ३७

मायाके विषयमें इस प्रकारके वचन तभी कहे जा सकते हैं जब हम स्वयं उसके बन्धनमें फँसें न हों. उसके बन्धनमें तो सभी शरीरधारी (जीव) बँधे हुए हैं जब कि मैं धनीकी कृपाके कारण इससे मुक्त हो सका हूँ.

एम चौद लोकमां कोई नव कहे, जे पार मायानो आ लहे ।
मोटी मत धणीमां रहे, बीजा भार पुस्तक केरा वहे ॥ ३८

चौदह लोक ब्रह्माण्डमें इस प्रकार कोई नहीं कह सकता कि उसने मायाका पार पा लिया है. प्रियतम धनीके चरणोंमें रहनेवाली बुद्धि ही श्रेष्ठ बुद्धि (महामति-श्रेष्ठ ज्ञान) कहलाती है. अन्य लोग तो पुस्तकसे प्राप्त ज्ञानका भार ही ऊठा रहे हैं.

सास्त्र पुराण वेदान्त जो, भागवत पूरे साख ।
नहीं कथा ए दन्तनी, सत वाणी ए वाक ॥ ३९

शास्त्र, पुराण, वेदान्त और श्रीमद्भागवत सद्गुरुके वचनोंके पूर्ण साक्षी हैं. यह वाणी केवल दन्तकथा (कल्पित) नहीं है. इस वाणीका एक-एक वाक्य सत्य है.

आ वेराट मांहें दीसे नहीं, पार वचन सुध जेह ।
लवो मुख बोलाए नहीं, तो केम पार पामे तेह ॥ ४०

इस जगतमें ऐसा कोई भी व्यक्ति दिखाई नहीं देता, जिसको पारके वचनों (संसारसे परे शून्य-निराकार तथा इससे परे अक्षर और अक्षरातीत) की सूझ हो, परमपद अक्षरातीतके विषयमें तो अंश मात्रका उच्चारण भी मुखसे नहीं हो सकता, तो यह पुस्तकीय ज्ञान परम तत्त्वका पार कैसे पा सकता है ?

हवे मायानो जे पामसे पार, तारतम करसे तेह विचार ।
ब्रह्मांड मांहें तारतम सार, एणे टाल्यो सहुनो अंधकार ॥ ४१

अब माया पर जो कोई विजय प्राप्त करेगा (अर्थात् ज्ञान वैराग्य द्वारा उसे जान लेगा) वही तारतम ज्ञान पर विचार कर सकेगा. इस संसारमें तारतम ज्ञान ही सार तत्त्व (सर्वश्रेष्ठ) है तथा शाश्वत मोक्षका साधन है. इसने सबके अज्ञानान्धकारको दूर कर दिया है.

लोक चौदे मायानो फंद, सहु छलतणां ए बंध ।
समझ्यां विना सहुए अंध, तारतम कहेसे सहु सनंध ॥ ४२

ये चौदह लोक मायाके बन्धनसे बँधे हुए हैं. मायाके ये सब बन्धन छल-कपटसे भरे हुए हैं. परम तत्त्वको समझे बिना सब कुछ अन्धकारमय है. तारतम ज्ञान ही इन सबका निराकरण कर सकता है.

नहीं राखुं संदेह एक, पैया काढुं सहुनां छेक ।
आ वाणी थासे अति विसेक, कहुं पारना पार विवेक ॥ ४३

अब मैं तारतमके माध्यमसे किसी भी प्रकारका सन्देह रहने नहीं दूँगा और सबके लिए परमधाम तकका मार्ग प्रशस्त कर दूँगा. इस वाणीका विशेष रूपसे प्रचार और प्रसार होगा. इसलिए मैं संसारसे परे निराकार और इससे भी परे अक्षर और अक्षरातीतका विवेकपूर्ण विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ.

न कहेवाय माया मांहें आ वाणी, पण साथ माटे कहेवाणी ।
साथ आवसे रुदे आंणी, ते में नेहेचे कह्युं जाणी ॥ ४४

यह वाणी मायावी जगतमें कही नहीं जा सकती, मात्र ब्रह्मात्माओंके लिए ही कही गई है. सभी सुन्दरसाथ इसे हृदयमें धारण कर एकत्र होंगे, इस विश्वासके साथ मैंने इसको व्यक्त किया है.

भारे वचन छे निरधार, साथ करसे एह विचार ।
जो न कहुं सतनो सार, तो केम साथ पहोंचसे पार ॥ ४५

यह तारतम वाणी (सद्गुरुके वचन) अतीव गहन और महत्त्वपूर्ण है.

सुन्दरसाथ इस पर विचार करेंगे. यदि मैं सत्य वस्तु (अखण्ड परमधाम) का वर्णन न करूँ तो सुन्दरसाथ किस प्रकार संसारसे पार होकर परमधाम पहुँचेंगे ?

साथ मलीने सांभलो, जागी करो विचार ।
जेणे अजवालुं आ कर्युं, परखो पुरुष ए पार ॥ ४६

हे ब्रह्मात्माओ ! आप सभी मिलकर सुनिए और जागृत होकर (अपने मूल स्वरूपको पहचानकर) विचार कीजिए. जिन्होंने इस अखण्ड ज्ञानको प्रकाशित किया है, ऐसे परम पुरुष (सद्गुरु) की पहचान कीजिए.

आपण हजी नथी ओलख्या, जुओ विचारी मन ।
विविध पेरे समजावियां, अने कही निध तारतम ॥ ४७

हम लोगोंने अभी तक उन्हें पहचाना नहीं है. इस तथ्य पर अपने मनसे विचार कीजिए. सद्गुरु धनीने हमें विभिन्न प्रकारसे (दृष्टान्त और साक्षी देकर) समझाया और तारतम ज्ञानरूपी अखण्ड निधिका वर्णन किया.

नित प्रते सहु साथने, वालोजी दिए छे ए सार ।
दया करीने वरणवे, आपण आगल आधार ॥ ४८

हमारे प्यारे सद्गुरु प्रतिदिन सभीको ये सार गर्भित (व्रज, रास और धामके) वचन कहते हैं. हमारी आत्माके आधार सद्गुरुने कृपा कर हमारे समक्ष इसका वर्णन किया है.

व्रजतणी लीला कही, वली विसेखे रास ।
श्री धामतणां सुख वरणवे, दिए निध प्राणनाथ ॥ ४९

प्राणनाथ सद्गुरुने सर्व प्रथम व्रजकी लीलाका, फिर विशेष रूपसे रास और परमधामके अनन्त सुखोंका वर्णन कर हमें अखण्ड निधि प्रदान की है.

हवे एह धणी केम मूकिए, वली वली करो विचार ।
मूल बुध चेतन करी, धणी ओलखो आ वार ॥ ५०

हे ब्रह्मात्माओ ! आप वारंवार विचार कीजिए. ऐसे धामधनी सद्गुरुको हम

कैसे भूल (छोड़) सकते हैं ? अपनी मूल बुद्धिको जागृत कर अब धामधनीकी पहचान कीजिए.

आ जोगवाई छे जाग्या तणी, अने विचार मांहें समजण ।
जे समझो ते जागजो, पण आ अवसर अरधो खिण ॥ ५१

यह मनुष्य जीवन आत्म-जागृतिके लिए है. ऐसा विचार करना ही बुद्धिमत्ता है अर्थात् इस वास्तविकता पर विचार करना ही विवेकशीलता है. जिन्होंने इस तथ्यको समझ लिया है, वे जागृत हो जाएँ, वस्तुतः यह अवसर (मानव जीवन) आधे क्षणके लिए ही है.

आगे धणी पधार्‌या अममां, अमे करी न सक्या ओलखाण ।
ए निखरपणे निध निगमी, थई अति घणी हाण ॥ ५२

हे ब्रह्मात्माओ ! सद्‌गुरु प्रथम बार हमारे यहाँ पधारे तब हम उन्हें पहचान न सके. हमारी इस बुद्धिहीनताके कारण हमने सद्‌गुरुरूपी अखण्ड निधिको खो दिया, जिससे हमें अत्यधिक हानि हुई है.

आव्या धणी ना ओलख्या, अमे भूल्यां एणी भांत ।
विना विचारे ना समज्यां, निगमी निध साख्यात ॥ ५३

धामधनी स्वयं सद्‌गुरुके रूपमें पधारे. हमने उन्हें नहीं पहचाना. इस प्रकार हमने बड़ी भूल की है. उनके वचनों पर विचार न करनेके कारण उन्हें नहीं पहचाना और साक्षात् निधि (सद्‌गुरु) को खो दिया.

जोई विचारिए एक वचन, तो अलगां थइए पासेथी केम ।
दीजे प्रदखिणा रात ने दिन, कीजे फेरो सुफल धन धन ॥ ५४

यदि सद्‌गुरुके एक ही वचन पर विचार कर उसका पालन करते तो हम उनसे अलग क्यों होते ? दिन रात उनकी परिक्रमा करते, उन्हें दण्डवत करते और इस मानव जीवनके सुअवसरको सफल (धन्य) बना लेते.

दीवे टाल्यो ज्यारे सुन सोहाग, त्यारे पतंग पाम्यो वेराग ।
कां झंपावी ओलवे आग, कां कायानो करे त्याग ॥ ५५

जब दीपककी ज्योति पतङ्गाके अन्धकारमय आश्रयस्थलका नाश करती है

तो पतङ्गाको वैराग्य हो जाता है. तब या तो वह दीपककी ज्योति पर झाँप खाकर उसे बुझा देता है या ज्योतिसे स्वयंको जलाकर अपनी देहका त्याग करता है.

जुओ जीवतणी ए रीत, नव मूके अंधेरनी प्रीत ।
धणी अमारो अक्षरातीत, अमे तोहे न समझ्या पतीत ॥ ५६

हे ब्रह्मात्माओ ! इस तुच्छ जीवके बलिदानका यह नियम तो देखो. वह अन्धकारकी आशक्तिको भी प्रेमवश नहीं छोड़ सकता. हमारे प्रियतम धनी तो अक्षरातीत (सच्चिदानन्द) हैं, तथापि हम इतने पतित हैं कि उन्हें समझ नहीं पाते हैं.

हवे घर मांहें ऊंचुं केम जोसुं, हंसी कही वात ना करी वरसुं ।
ए धणी विना केने अनुसरसुं, हवे अमे रोई रोईने मरसुं ॥ ५७

अब अखण्ड परमधाममें पहुँचकर मस्तक उन्नत करके गर्वके साथ हम उन्हें कैसे देख सकेंगे ? हमने अपने प्रियतम धनीके साथ (इस संसारमें आकर) हँसकर बातें भी नहीं कीं. ऐसे धनीके अतिरिक्त हम किसका अनुसरण करेंगे ? अब तो हमें रो-रोकर ही मरना है अर्थात् पश्चात्तापमें ही जीवन व्यतीत करना पड़ेगा.

ए अमारी वीतकनी विध, मुने मरडी कीधी बेसुध ।
अमने छेतर्‌यां एणी बुध, तो गई अखंड अमारी निध ॥ ५८

यह मेरे जीवनकी कथा है, मायाने मुझे जकड़कर मूर्च्छित कर दिया और मायावी बुद्धिने मुझे इस प्रकार ठग लिया (धनीके मार्गसे विमुख कर दिया) कि सद्‌गुरुके रूपमें प्राप्त अखण्ड निधि हमारे हाथोंसे निकल गई.

जो पाणीवल अलगां जाय, तो खिणमात्र वरसा सो थाय ।
धणी विना केम रहेवाय, जो कांईक निध ओलखाय ॥ ५९

(व्रज रासमें) पानीके बुलबुलेकी भाँति क्षणमात्रके लिए भी हम अपने प्रियतमके सान्निध्यसे दूर होते थे तो वह क्षण हमारे लिए युगोंके समान होता

था. यहाँ भी यदि हमें धनीकी थोड़ी-सी पहचान होती तो हम उनकी अनुपस्थितिमें कैसे रह पाते ?

मीन जल विना जेणी अदाय, अंतर व्रह न खमाय ।
तो व्रह आपण केम सहेवाय, जो एक लवो समझाय ॥ ६०

जिस प्रकार मछली जलके बिना तड़पती है और जलका वियोग नहीं सह सकती, उसी प्रकार सद्गुरुके वचनोंका जरा-सा भी सार हमें अनुभव होता तो हम उनके विरहको किस प्रकार सहन कर सकते ?

अमे व्रह धणीनो खम्यां, जे दिन व्रथा निगम्यां ।
अमे भरम मांहें भम्यां, जो अगनी व्रह ना दम्यां ॥ ६१

हमने धनीका वियोग सहन किया. धनीकी पहचान विहीन वे दिन व्यर्थ ही व्यतीत हुए. मोह मायाके भ्रममें पड़कर हम भटकते रहे, किन्तु विरहका सन्ताप शान्त न हुआ.

एणे मोहे माहुं कर्यां, करी न सक्यां विचार ।
सुनाई आवी सहुने, तो आडो आव्यो संसार ॥ ६२

इस मायाने मुझे भ्रममें डालकर वशीभूत किया इसलिए मैं विचारशून्य बन गया. समग्र इन्द्रियोंमें अज्ञानताके कारण निष्क्रियता (शून्यता) छा गई. इसके कारण यह संसार धामधनीके मार्गमें व्यवधान बन गया.

जो विध लहुं वचननी, तो संसार अमने सुं ।
एनुं कांई चाले नहीं, जो ओलखुं आपोपुं ॥ ६३

यदि सद्गुरुके वचनोंका विधिवत् पालन करेंगे तो संसारके बन्धन हमें किस प्रकार बाँध सकेंगे ? स्वयं (आत्मा) का परिचय होने पर मायाका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है.

आगल एम कह्युं छे, जे आंधलो चाले सही ।
ज्यारे भटके भीत निलाटमां, तिहां लगे देखे नहीं ॥ ६४

पूर्वकालके (पुरोगामी) विचारवान लोगोंने कहा है कि अन्धे लोग अपनी

धारणा शक्तिसे मार्ग पर चलते हैं. जब तक उनका मस्तक दीवारके साथ नहीं टकराता तब तक उन्हें भान नहीं होता.

ते तां अमने अनुभव्युं, अमे तोहे न जाणी सनंध ।
घण लाग्यो कपालमां, अमे तोहे अंधना अंध ॥ ६५

इतना तो हमने अनुभव कर लिया तथापि हम इस मायाके सम्बन्धको समझ नहीं सके. मस्तक पर लोहेके घनकी चोट लगने पर भी हम अन्धेके अन्धे रह गए.

आंख तोहे न उघडी, वाले कही अनेक विध ।
अंध अमे एवां थयां, निगमी बेठां निध ॥ ६६

इतना होने पर भी हमारे विवेक और विचाररूपी नेत्र नहीं खुले. यद्यपि सद्गुरु धनीने अनेकों प्रकारके दृष्टान्त देकर हमें समझाया परन्तु हम ऐसे अन्धे बन गए कि सद्गुरुके रूपमें प्राप्त अखण्ड धनको भी खो बैठे.

अंधने आंख रुदे तणी, पण अमने मांहें न बहार ।
तो निध खोई हाथथी, जो कीधो नहीं विचार ॥ ६७

अन्धेकी आँख हृदयकी होती है किन्तु हमारी आँखें न हृदयमें हैं और न ही बाहर. इसीलिए सद्गुरुके रूपमें प्राप्त निधि हम अपने हाथोंसे खो बैठे क्योंकि उनके वचनों पर जरा-सा भी विचार नहीं किया.

अंधने आंख रुदे तणी होय, पण अमने नव दीसे कोय ।
अमे तो रह्यां निध खोय, टाणे भूल्यां सुं थाय रोय ॥ ६८

अन्धेकी आँख हृदयकी होती है अर्थात् वह अन्तर्हृदयसे विचार करता है किन्तु हमारे पास अन्तर और बाह्य दोनों आँखें न होनेके कारण हम कुछ भी देख नहीं पाए. अतः हम सद्गुरुरूपी निधिको खोकर बैठे रहे, अवसर चूक जाने पर रोने और पछतानेसे क्या होता है ?

गए अवसर सुं थाय पछे, धन गये हाथ सहु घसे ।
मांहें हाण बहार सहु हसे, ते तो मांहेंनी मांहें रडसे ॥ ६९

अवसर चूक जाने पर होता भी क्या है ! हाथसे धन निकल जाने पर सभी हाथ मलते रह जाते हैं. स्वयं तो घाटा (हानि) सहते हैं साथ ही अन्योंका उपहास भी सहते हैं. जिससे वे मन ही मन रोते रहते हैं.

साथ ए पेर अमसूं थई, निध हाथ आवी करी गई ।
दिन घणां अम मांहें रही, पण अमे दुस्टे जाणी नहीं ॥ ७०

हे सुन्दरसाथजी ! हमारे साथ भी ऐसा ही हुआ है. सद्गुरुके रूपमें प्राप्त निधि हस्तगत होनेके बाद भी निकल गई. यद्यपि धनी तो कई दिनों तक हमारे पास रहे, किन्तु हमारी दुष्टताके कारण हम उनका परिचय प्राप्त न कर सके.

दुरमती करे तेम कीधुं, अमृत ढोलीने विष पीधुं ।
धणी सहेजे आव्यां सुख न लीधुं, कारज कोई नव सिध्युं ॥ ७१

दुष्ट लोग जिस प्रकारका व्यवहार करते हैं हमने भी उसी प्रकारका व्यवहार किया. सद्गुरु धनीके अमृतमय वचनोंको छोड़कर मायारूपी विषका पान किया. सरलतासे प्राप्त धनीके सुखोंका अनुभव नहीं किया जिससे कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हुए.

हवे ए दुख केने कहिए, अंग मांहे आतम सहिए ।
कीधुं पोतानुं लईए, हवे दोष कोने दईए ॥ ७२

अब दुःखकी यह कथा किसे सुनाऊँ, इसे स्वयं अपने हृदयमें ही सहन करना होगा. स्वयंके किए हुए कार्योंका फल स्वयंको ही भोगना पड़ेगा. अब इसके लिए किसे दोष दिया जाए ?

तोहे धणीए हाथथी मूक्यां नहीं, तो वली आपणमां आव्यां सही ।
ए निध मुखथी न जाय कही, जे आंहीं अम उपर दया थई ॥ ७३

इतना होने पर भी सद्गुरु धनीने हमारा हाथ नहीं छोड़ा. वे पुनः हमारे

अन्तःकरणमें विराजमान हुए. धामधनी सद्गुरुने यहाँ हम पर जो दया की है उस (तारतम वाणीरूपी निधि) का वर्णन मुखसे नहीं हो सकता है.

धन गयुं ते आव्युं वली, गयो अंधकार सहु टली ।
सुखना सागर मांहें गली, एने बीजो ना सके कोय कली ॥ ७४

खोया हुआ सद्गुरु स्वरूप धन पुनः प्राप्त हो गया. परिणामस्वरूप अज्ञानका अन्धकार पूर्णरूपेण हट गया. अब मैं आनन्दके सागरमें निमग्न हो गया हूँ. आनन्दकी इस चरम अवस्थाको कोई दूसरा भला कैसे समझ सकता है !

हवे में सुख अखंड लीधां, मननां मनोरथ सीधां ।
वाले आप सरीखडां कीधां, फल वांछथी अधिक दीधां ॥ ७५

अब मैंने परमधामके अखण्ड सुख ग्रहण कर लिए हैं. मनकी अभिलाषाएँ पूर्ण हो गईं हैं. सद्गुरुने मुझे अपने समान बना दिया और मेरी अपेक्षासे भी अधिक सुख (फल) प्रदान किया अर्थात् परमधामके साक्षात्कारकी इच्छा थी परन्तु धनी स्वयं हृदयमें आकर बैठ गए और वाणी व्यक्त होने लगी.

कृपा कीधी अति घणी, वली आव्या ततकाल ।
तेहज वाणी ने तेहज चरचा, प्रेम तणी रसाल ॥ ७६

सद्गुरु धनीने मुझ पर अत्यधिक कृपा की. वे पुनः मेरे हृदयमें आकर बैठ गए और पूर्वकी भाँति प्रेम-रसपूर्ण वाणीसे अलौकिक चर्चाका आनन्द देने लगे.

वली वचन सोहामणां, वली वरणवनी विध विध ।
आव्या ते आनंद अति घणे, लाव्या ते नेहेचल निध ॥ ७७

अब पुनः उन्हीं मधुर वचनोंके द्वारा परमधामका वैविध्यपूर्ण वर्णन होने लगा. हृदयमें आनन्दका प्रभाव उमड़ा. क्योंकि अचल निधि (तारतम वाणी) के रूपमें सद्गुरु धनीका पुनरागमन हुआ है.

ए निध निरमल अति घणी, दिए साथने सार ।
कोमल चित करी लीजिए, जेम रुदे रहे निरधार ॥ ७८

यह तारतम ज्ञानकी अखण्ड निधि अत्यन्त निर्मल है. सद्गुरुने सुन्दरसाथको

इसीका सार (व्रज, रास तथा परमधामका रहस्य) दिया है. हे ब्रह्मात्माओ ! अपने हृदयको अत्यन्त नम्र और कोमल बनाकर यह सार ग्रहण करें, जिससे यह निर्मल निधि निश्चय ही हृदयस्थ हो जाए.

पचवीस पख छे आपणां, तेमां कीजे रंग विलास ।
प्रगट कह्यां छे पाधरा, तमे ग्रहजो सहु साथ ॥ ७९

परमधामके पच्चीस पक्ष हमारे लिए हैं. आप इनमें आनन्द विलास कीजिए. सद्गुरु धनीने स्पष्ट और सीधे (सरल) शब्दोंमें कहा है. इसलिए आप उसे ग्रहण कीजिए.

आपणुं धन तां एह छे, जे दिए छे आधार ।
रखे अधखिण तमे मूकतां, वालो कहे छे वारंवार ॥ ८०

सद्गुरु धनी हमे जो दे रहे हैं, वे ही पच्चीस पक्ष हमारी वास्तविक सम्पत्ति (धन) है. हे ब्रह्मात्माओ ! आप आधे क्षणके लिए भी इनको न छोड़ें. सद्गुरु धनी भी वारंवार हमें यही कह रहे हैं.

पख पचवीस छे अति भलां, पण ए छे आपणो धरम ।
साख्यात तणी सेवा कीजिए, ए रुदे राखजो मरम ॥ ८१

परमधामके पच्चीस पक्ष अत्यन्त रमणीय हैं किन्तु अभी हमारा यह कर्त्तव्य (धर्म) है कि सद्गुरुको साक्षात् धामधनी मानकर उनकी सेवा करें और वह गूढ़ रहस्य (मर्म) हृदयमें धारण करें.

चित उपर वली चालिए, धणी तणे वचन ।
ए वाणी तमे चित धरो, हुं कहुं छुं द्रढ करी मन ॥ ८२

सद्गुरु धनीके चित्तके अनुकूल होकर और उनके वचनानुसार (आज्ञानुसार) चलना है. इसीलिए इस वाणीको आप हृदयमें धारण करें, यह मैं दृढ मनसे कह रहा हूँ.

दई प्रदखिणा अति घणी, करुं दंडवत परणाम ।
सहु साथना मनोरथ पूरजो, मारा धणी श्रीधाम ॥ ८३

हे धामधनी ! मैं (इन्द्रावती) वारंवार परिक्रमा कर दण्डवत् प्रणाम करती हूँ और पुनः कहती हूँ, हे मेरे धामधनी ! आप समस्त ब्रह्मात्माओंके मनोरथ

पूर्ण कीजिए.

मनना मनोरथ पूरण कीधां, मारा अनेक वार ।
वारणे जाय इन्द्रावती, मारा आतमना आधार ॥ ८४

हे धनी ! आपने मेरे मनकी कामनाओंको अनेक बार पूर्ण किया है. हे मेरे आत्माके आधार सद्‌गुरु ! यह इन्द्रावती आपके चरणोंमें समर्पित है.

प्रकरण १ चौपाई ८४

माया गई पोताने घेर, हवे आतम तुं जाग्यानी केर ।
तो मायानो थयो नास, जो धणिए कीधो प्रकास ॥ १

माया अपने स्थान पर चली गई अर्थात् मायाके गतिरोध दूर हो गए हैं. हे आत्मा ! अब तू जागृत होनेका प्रयत्न कर, अब तो सद्‌गुरुने अन्तर हृदयको प्रकाशित कर मायाका नाश कर दिया है.

केम जाणिए माया गई, अंतर जोत ते प्रगट थई ।
हवे आतम करे कांई बल, तो वाणी गाऊं नेहेचल ॥ २

माया लुप्त हो गई है यह किस प्रकार जाना जा सकता है ? (क्योंकि) अन्तरात्मामें ज्ञानकी ज्योति प्रज्वलित हो चुकी है. अब आत्मा थोड़ा-सा प्रयत्न करे तो मैं अखण्ड वाणीका गायन करूँ.

लघु दीरघ पिंगल चतुराई, एह तो किवनी छे बडाई ।
एनो अरथ हुं जाणुं सही, पण आ निधमां ते सोभे नहीं ॥ ३

ह्रस्व, दीर्घ (लघु-गुरु) एवं पिंगलशास्त्र (छन्दशास्त्र) की निपुणता तो कवियोंके लिए महत्त्वपूर्ण है. उसके यथार्थको भी मैं भली भाँति जानता हूँ, किन्तु यह अखण्ड वाणीरूपी निधिमें शोभा नहीं देता है.

मारे तो नथी कांई किवनुं काम, वचन कहेवा मारे धणी श्री धाम ।
जे आंहीं आवीने कह्यां, गजा सारुं मारा चितमां रह्यां ॥ ४

किसी कविकी भाँति कविता करना मेरा काम नहीं है. मुझे तो अपने धामधनीके वचनोंका वर्णन करना है. सद्‌गुरु धनीने इस ब्रह्माण्डमें आकर

मुझे ये वचन कहे हैं और मैंने इनको अपनी बुद्धिके अनुसार चित्तमें ग्रहण किया है.

साथ आगल कहीस हुं तेह, पहेला फेराना सनेह ।
धणीए जे कह्यां अमने, सांभलो साथ कहुं तमने ॥ ५

प्रथम अवतरण (व्रजलीला) के प्रेम और स्नेहकी बातें मैं अब धामकी सब अंगनाओंके समक्ष कहता हूँ. हे सुन्दरसाथजी ! जो वचन सद्गुरु धनीने स्वयं मुझे कहे हैं उनको आप सुनिए.

तमे जोपे ग्रहजो द्रढ मन करी, हुं तमने कहुं फरी फरी ।
साथ सकल लेजो चित धरी, हुं वालोजी देखाडुं प्रगट करी ॥ ६

हे साथजी ! आप इन वचनोंको दृढ़तापूर्वक हृदयंगम कीजिए. मैं आपको वारंवार आग्रहपूर्वक कहता हूँ. आप सभी इन वचनोंको हृदयमें धारण कीजिए. मैं प्रियतम सद्गुरु धनीके साक्षात् स्वरूपका दर्शन करवा रहा हूँ.

श्री देवचन्दजीने लागुं पाय, जेम आ दुस्तर जोपे ओलखाए ।
दई प्रदखिणा करुं परणाम, जेम पहुंचे मारा मननी हाम ॥ ७

मैं सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके श्रीचरणोंमें प्रणाम करता हूँ ताकि इस दुस्तर संसारको भलीभाँति पहचान सकूँ, इसलिए मैं उनकी परिक्रमा करते हुए उन्हें प्रणाम करता हूँ कि मेरे मनकी अभिलाषाएँ पूर्ण हों.

जेटली सनन्ध कही छे तमे, ते द्रढ करी सर्वे जोईए अमे ।
लीला तमे कही अपार, तेह तणो नव लाधे पार ॥ ८

हे सद्गुरु ! आपने जो कुछ यथार्थ (तारतम ज्ञानद्वारा) कहा है मैंने उसे दृढ़ता पूर्वक ग्रहण किया. आपने तो धामधनीकी अखण्ड लीलाओंका अपरिमित वर्णन किया है इसका तो कोई भी पार (अन्त) नहीं पा सकता है.

चौद भवन माया अंधार, पार नहीं मोटो विस्तार ।
तमने पूछुं समरथ सार, हुं केणी पेरे करुं विचार ॥ ९

चौदह लोक ब्रह्माण्डमें माया (अज्ञान) का अन्धकार फैला हुआ है. इसका क्षेत्र इतना विस्तृत है कि इसका पार पाना ही कठिन है. हे सर्व शक्तिमान

धनी ! मैं आपको विनयपूर्वक निवेदन करता हूँ कि इसका पार पानेके लिए किस प्रकार विचार किया जाए.

तमे तारतमना दातार, अजवालुं कीधुं अपार ।
साथ तणां मनोरथ जेह, सरवे पूरण कीधां तेह ॥ १०

हे सद्गुरु ! आप तो अखण्ड तारतम ज्ञानके दाता हैं जिसके द्वारा अपार (अनन्त) प्रकाश फैल गया है. सभी सुन्दरसाथकी मनोकामनाएँ आपने पूर्ण कीं हैं.

तारतम तणे अजवास, पूरण मनोरथ कीधां साथ ।
तमतणे चरण पसाये, जे उतकंठा मनमा थाय ॥ ११

दिव्य तारतम ज्ञानके प्रकाश द्वारा आपने हमारे समस्त मनोरथ पूर्ण किए हैं. अब मनमें जो भी उत्कंठा उत्पन्न होगी वह भी आपके चरणोंके प्रताप (कृपा) द्वारा अवश्य पूर्ण हो जाएगी.

जेटली मनमां उपजे वात, ते सहु आतम पूरे साख ।
मन जीवने पूछे जेह, त्यारे जीव सहु भाजे संदेह ॥ १२

मेरे मनमें जितनी शङ्काएँ उत्पन्न होतीं हैं उन सबकी साक्षी मेरी आत्मा देती है. मन जीवको जो कुछ पूछता है उसका समाधान जीव द्वारा होता है.

ए निध बीजे कोने न अपाय, धणी विना कोने सामुं न जोवाय ।
एने अजवाले थये सुं थाए, आ पोहोरामां धणी ओलखाय ॥ १३

अखण्ड ज्ञानमय यह निधि अन्य किसी(मायावी जीव) को नहीं दी जा सकती है और सद्गुरु धनीके अतिरिक्त इसका अन्य कोई दाता भी हमारे समक्ष नहीं है. इस तारतम ज्ञानके अखण्ड प्रकाशमें क्या नहीं हो सकता है ? इसी जीवनमें धामधनी और माया दोनोंका परिचय प्राप्त हो सकता है.

आप तणी पण खबर पडे, घर पर आतम रुदे चढे ।
ए अजवालुं ज्यारे थयुं, त्यारे वली पाछुं सुं रह्युं ॥ १४

तारतम ज्ञानके द्वारा अपने मूल स्वरूपका परिचय स्वयं प्राप्त हो जाएगा. मूल घर (परमधाम) तथा धामधनीका स्मरण हृदयमें प्रवेश करेगा. जब ये

सब (स्वयं परमधाम तथा परमात्मा स्वरूप) प्रकाशित होंगे तो फिर जाननेके लिए शेष क्या रह जाएगा ? अर्थात् इसके जानने पर सब कुछ जाना जा सकता है.

ए सुं माया करे बल, फेरवे कल करे विकल ।
अजवालामां ना रहे चोर, जागतां नव चाले जोर ॥ १५

यह माया अपने बलसे क्या कर सकती है. वह युक्तिपूर्वक सद्बुद्धिको दुर्बुद्धिमें अर्थात् शान्तिको अशान्तिमें बदल देती है. जिस प्रकार प्रकाशमें चोरका जोर नहीं चलता है उसी प्रकार जागृत होने पर मायाकी शक्ति भी काम नहीं कर सकती.

जदीपे जीते विद्याए, पण एने अजाण्युं न जाय ।
ज्यारे वालोजी साहे थाय, झख मारे त्यारे मायाय ॥ १६

यद्यपि विद्याके प्रभाव द्वारा मायाको जीता जा सकता है तथापि उसका प्रभाव पूर्णरूपेण नष्ट नहीं होता अर्थात् माया विद्वानोंको भी प्रभावित करती है. जब सद्गुरु धनीकी कृपा होगी तब माया कुछ नहीं कर पाएगी. यद्यपि संसारमें बहुत-सी विद्याएँ हैं किन्तु उनसे अज्ञेय (परमात्मा) नहीं जाना जाता. जब सद्गुरुकी कृपा होगी तब माया दूर होगी और परमात्मा प्रकट होंगे.

ते माटे तमे सुणजो साथ, एक कहुं अनूपम वात ।
चरचा सुणजो दिन ने रात, आपणने त्रूठा प्राणनाथ ॥ १७

इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! आप सुनिए. मैं एक अनुपम बात कहता हूँ, आप दिन-रात धनीकी चर्चा सुनें. क्योंकि प्राण प्रियतम सद्गुरु धनी हम पर प्रसन्न होकर वाणीकी वर्षा कर रहे हैं.

वचन कह्यां ते मनमां धरो, रखे अधखिण पाछा ओसरो ।
आ पोहोरो छे कठण अपार, रखे विलम्ब करो आ वार ॥ १८

हे ब्रह्मात्माओ ! सद्गुरु धनीके कहे हुए वचनोंको हृदयमें ग्रहण कीजिए. इस कार्यमें आधे क्षणके लिए भी विलम्ब मत कीजिए. यह समय बड़ा ही

विकट (परीक्षाकी घड़ी) है. इसलिए इस अमूल्य समयका लाभ लेनेमें विलम्ब करना उचित नहीं है.

आ जोगवाई छे जो घणी, साहे आपणने थया धणी ।
बेठां आपण माहें कहे, पण साथ मांहें कोई विरलो लहे ॥ १९

यह मानव शरीर (आत्म जागृतिके लिए) अमूल्य अवसरके रूपमें प्राप्त हुआ है और प्रियतम सद्गुरु धनी भी हमारी सहायताके लिए तत्पर हैं. वे मेरी अन्तरात्मामें बैठकर बोल रहे हैं परन्तु सुन्दरसाथमें-से विरले ही उनके वचनोंको ग्रहण कर रहे हैं.

साथ माहें अजवालुं थयुं, पण भरम तणुं अंधारुं रह्युं ।
ते टाल्यानो करुं उपाय, तो मनोरथ पूरण थाय ॥ २०

ब्रह्मात्माओंके बीच तारतमका दिव्य प्रकाश तो फैल गया किन्तु भ्रमका पट दूर न होनेके कारण अन्धकार (अज्ञान) पूर्णरूपसे नहीं हटा. इसको दूर करनेके लिए मैं युक्ति सोच रहा हूँ जिससे समस्त सुन्दरसाथके मनोरथ पूर्ण हो जाएँ.

जे मनोरथ मनमां थाय, ततखिण कीजे तेणे ताय ।
आ जोगवाई छे पाणी बल, आपण करी बेठा नेहेचल ॥ २१

सत्कर्म करनेकी अभिलाषा (इच्छा) मनमें उत्पन्न हो जाए तो उसे उसी क्षण पूर्ण करनेका प्रयत्न करना चाहिए, क्योंकि यह मानव शरीर क्षणभङ्गुर (पानीके बुलबुलेके समान) है और हम इसे अखण्ड मान बैठे हैं.

नेहेचल जोगवाई नहीं एणे ठाम, अधखिणमां थाये कै काम ।
इन्द्रावती कहे आ वार, निद्रा नव कीजे निरधार ॥ २२

यह नश्वर शरीर इस संसारमें अखण्ड और अविनाशी नहीं है. यहाँ एक क्षणमें ही अनेक घटनाएँ घटतीं हैं. इसलिए इन्द्रावती कहती है कि अब तो निश्चय करके अज्ञानरूपी निद्राको छोड़िए.

राग : मारु

भूंडा जीव जागजे रे,
कांई धणी तणे चरण पसाए, तुं भरम उडाडजे रे (टेक) ॥ १

हे दुष्ट जीव ! अब तू जागृत हो जा. प्रियतम धनीके श्रीचरणोंकी कृपा द्वारा अपनी भ्रमरूपी निद्राको त्याग कर स्वयंको (अपने मूल स्वरूपको) पहचान ले.

आपण निद्रा केम करुं रे, निद्रानो नथी लाग ।
भरमनी निद्रा जे करे, कांई तेहनुं मोटुं अभाग ॥ २

अब हम सोते रहेंगे तो काम कैसे चलेगा ? यह समय नींद (अज्ञान) में पड़े रहनेका नहीं है. जो भ्रान्तिके कारण नींदमें डूबे रहेंगे उनका यह बड़ा दुर्भाग्य होगा.

आ जोगवाई छे आपणी, नहीं आवे बीजी वार ।
हाथ ताली दीधे जाये छे, भूंडा का न करे हजी सार ॥ ३

यह मानव शरीर दूसरी बार प्राप्त नहीं होगा. एक-एक श्वासके द्वारा यह बीता जा रहा है. इसलिए हे दुष्ट जीव ! अब भी तू सावधान क्यों नहीं होता है ?

धणी रे आपणमां आवियां, भूंडा कां नव जागे जीव ।
पेरे पेरे तुंने प्रीछव्यो, तुं हजी करे कां ढील ॥ ४

प्रियतम धनी हमारे पास पधारे तथापि हे दुष्ट ! तू सचेत क्यों नहीं होता ? धनीने तो वारंवार अनेक प्रकारसे तुझे समझाया अब तू विलम्ब क्यों कर रहा है ?

धणिए धणवट जे करी, तुं तां जोने विचारी तेह ।
आ पापणीने परहरी, तुं कां न करे सनेह ॥ ५

प्रियतम धनीने जिस प्रकार तुझे स्वीकार किया और तेरी रक्षा की है, हे जीव ! वह तू स्वयं विचार पूर्वक देख. इस दुष्ट मायाको छोड़कर अपने प्रियतम धनीके साथ क्यों प्रेम नहीं करता है ?

आपणने तेडवा आवियां, आ दुस्तर माया माहें ।
ओलखीने कां ओसरे, भूंडा एम थयो तुं कांए ॥ ६

सद्गुरु धनी हम लोगोंको बुलानेके लिए परमधामसे इस दुस्तर मायामय संसारमें पधारे. उनका परिचय प्राप्त होने पर भी तू किस कारणसे उनसे विमुख हो रहा है हे मूर्ख जीव ! तू ऐसा दुष्ट क्यों हो गया है ?

धणिए आपणसुं जे करी रे, तुं तां जोने विचारी मन ।
कोडी ते हाथथी परी करी, तुने दीधुं छे हाथ रतन ॥ ७

धामधनीने हम पर जो कृपा की है उसे मनसे विचार कर देखो. कौड़ीके समान तुच्छ मायाको हाथसे छुड़ाकर अखण्ड तारतम ज्ञानरूप अमूल्य रत्न तुझे दिया है.

जीवडा तुं घारण केही करे, भूंडा घुट्यो दिन अनेक ।
जोवंता जोगवाई गई, भूंडा हजिए तुं कां नव चेत ॥ ८

हे जीव ! अज्ञानरूपी निद्राके वशमें पड़कर क्यों सोता रहता है ? हे दुष्ट ! तूने बहुत दिन नीदमें व्यतीत किए. देखते-देखते यह जीवन निरर्थक व्यतीत हो रहा है, फिर भी तू सावधान क्यों नहीं होता है ?

आपण उपर अति घणी रे, दया करे छे आधार ।
आपणे काजे देह धर्‌या, भूंडा हजिए तुं कां न विचार ॥ ९

हमारे प्राणाधार सद्गुरु धनी हम पर असीम कृपा करते हैं. हमारे लिए ही उन्होंने मानव शरीर धारण किया है. हे दुष्ट जीव ! तू अब भी विचार क्यों नहीं करता है ?

भरम भूंडो तमे परहरो, जेम थाय अजवालुं अपार ।
वचन वालाजी तणे, तुं मूलगां सुख संभार ॥ १०

हे जीव ! इस भ्रान्ति और अज्ञानका त्याग कर ले ताकि अन्तरात्मामें धनीके अखण्ड ज्ञानका प्रकाश फैल जाए. प्रियतम धनीके अमूल्य वचनोंको ग्रहण करते हुए तू मूल परमधामके सुखोंको याद कर.

आ वालो ते आवियां, ए सुख तणां दातार ।
आपण मांहें तेहज बेठां, जोई अजवालुं संभार ॥ ११

अखण्ड सुख देनेवाले प्रियतम अक्षरातीत धामधनी इस संसारमें (सद्गुरुके रूपमें) आ गए हैं. वे ही हमारे हृदयमें बैठे हैं. तारतम ज्ञानके इस प्रकाशमें उन्हें देखकर तू स्वयंको संभाल ले.

दुरमती तुं कां थयो, हुं तो पाडुं बुंब अपार ।
आंहीं आव्या न ओलख्या, पछे केही पेरे मोंह उपाड ॥ १२

हे जीव ! तू मन्दमति कैसे बन गया ? मैं तुझे वारंवार पुकार रहा हूँ. धामधनी यहाँ पधारे और तूने उन्हें पहचाना तक नहीं, अब तू परधाममें उनके समक्ष अपना मस्तक कैसे उठा पाएगा ?

आंख उघाडी जो जुए, जीव लीजे ते लाभ अनेक ।
आंहीं पण सुख घणां माणिए, अने आगल थाय वसेक ॥ १३

यदि अन्तर्चक्षुओंको खोलकर देखेगा तो हे जीव ! तुझे यहाँ (मानव शरीरका सदुपयोग कर) अधिक लाभ प्राप्त होगा. इस लोकमें भी अनेक आध्यात्मिक सुख प्राप्त कर ले, परमधाममें तो विशिष्ट सुख मिलने वाले ही हैं.

आ अजवालुं जो जोइए, जीव तारतम मोटो सार ।
वालाजीने ओलखे, तो तुं नव मूके निरधार ॥ १४

यदि सद्गुरु द्वारा प्राप्त इस ज्ञानके प्रकाशको तू देखेगा तो हे जीव ! तारतम ज्ञान ही एकमात्र सर्वश्रेष्ठ सारतत्त्व है यह तुझे ज्ञात हो जाएगा. इस ज्ञानके द्वारा सद्गुरुकी पहचान प्राप्त होने पर तू निश्चित रूपसे उनके चरणकमलोंको नहीं छोड़ेगा.

वालो वदेसी आवी मल्या, कांई आपणने आ वार ।
दुख मांहें सुख माणिए, जो तुं भरमनी निद्रा निवार ॥ १५

प्रियतम धनी विदेश (संसार) में आकर इस बार हम सबसे मिले हैं. इसलिए उन्हें पहचान कर जब अज्ञानरूपी निद्राको हटाएगा तभी इस दुःखपूर्ण

संसारमें भी सुखकी अनुभूति होगी.

आ जोगवाई छे खिण पाणीवल, केटलुं तुंने कहेवाय ।
पण अचरज मुने एह थाय छे, जे जाण्युं धन केम जाय ॥ १६

यह मानव शरीर पानीके बुलबुलेकी भाँति क्षणभंगुर है. तुझे इस सन्दर्भमें कितना कहा जाए ? मुझे तो इसलिए आश्चर्य हो रहा है कि जानकारी होने पर भी सद्गुरुरूपी अखण्ड धनको हाथसे कैसे निकल जाने दिया ?

आगल आपण सुं करियुं, ज्यारे अजवाले थई रात ।
आ तां वालेजीए वली कृपा करी, त्यारे तरत थयुं प्रभात ॥ १७

जब सद्गुरु थे उस समय हमने क्या किया ? तारतम ज्ञानके प्रकाशमें भी रात हो गई थी. अर्थात् हमारी जानकारीमें ही सद्गुरु अदृश्य हो गए. यह तो हमारे प्रियतम सद्गुरुने हम पर पुनः कृपा की है कि वे हमारे हृदयमें विराजमान हुए और तत्काल ज्ञानका प्रभात हो गया.

एवडी वात देखी करी, ते तां जोयुं तारी द्रष्ट ।
हजी तुं भरममां भूलियो, तुंने केटलुं कहुं पापिष्ट ॥ १८

इतनी महत्त्वपूर्ण घटनाको तूने अपनी आँखोंसे देखा है, समझा है तथापि अभी तक तू अज्ञानमें भटकता फिर रहा है. हे दुष्ट जीव ! अब मैं तुझे कितना समझाऊँ ?

अजवाले वालो ओलख्या, त्यारे पाछल रह्युं सुं ।
जाणी बूझीने मूढ थयो, भूंडा एम थयो कां तुं ॥ १९

इस ज्ञानके प्रकाशमें जब हमने प्रियतम धनीको पहचान लिया तो शेष क्या बचा. तू तो जान-बूझकर मूर्ख बन गया है. हे पापी जीव ! तुझमें ऐसा परिवर्तन क्यों आ गया ?

पेरे पेरे में तुंने कह्युं रे, सुण रे धणीनां वचन ।
अधखिण वालो न विसरे, जो तुं जुए विचारी मन ॥ २०

हे जीव ! मैंने तुझे वारंवार अनेक प्रकारसे समझाया कि धनीके वचनोंको

श्रवण कर. यदि तूने इस तथ्यका मनसे विचार किया होता तो एक क्षणके लिए भी तू धनीको नहीं भूलता.

अनेक वचन तुंने कह्या, मान एकनो करे विचार ।
अरध लवे तारो अरथ सरे, भूंडा एवडो तुं कां कहेवराव ॥ २१

हे जीव ! सद्गुरुने तुझे अनेक बातें कहीं हैं. उनपर विचार कर उनमें-से एक तो क्या आधे अक्षर पर भी विचार कर लिया होता तो तेरे सारे काम सिद्ध हो गए होते फिर भी हे दुष्ट ! मुझसे इतना कुछ क्यों कहलवाता है ?

हवे रे तुंने हुं जे कहुं, ते तुं सांभल द्रढ करी मन ।
पचवीस पख छे आपणां, तेमां झीलजे रात ने दिन ॥ २२

अभी मैंने तुझे जो कुछ भी कहा है मनको दृढ़ करके उसे श्रवण कर. परमधामके पच्चीस पक्ष हमारे हैं. तू उन्हींके मध्य रात-दिन आनन्दपूर्वक विहार कर.

ए मांहेंथी रखे निसरे, पल मात्र अलगो एक ।
मननां मनोरथ पूरण थासे, उपजसे सुख अनेक ॥ २३

इन पच्चीस पक्ष (परमधाम) से तू अपनी सुरताको एक क्षणके लिए भी पृथक् होने मत दे. तेरे मनके सभी मनोरथ पूर्ण हो जाएँगे और तुझे धामके अनन्त सुख प्राप्त होंगे.

साख्यात तणी सेवा कर रे, ओलखीने अंग ।
श्रीधाम तणा धणी जाणजे, तुं तां रखे करे तेमां भंग ॥ २४

हे जीव ! सद्गुरुके स्वरूपको पहचान. उन्हें साक्षात् धामधनी समझकर उन पर श्रद्धा रख और उनकी सेवामें कमी न आने दे.

मुखथी सेवा तुंने सी कहुं, जो तुं अंतर आडो टाल ।
अनेक विध सेवा तणी, तुंने उपजसे ततकाल ॥ २५

हे जीव ! सेवाके विषयमें मौखिक उपदेश देते हुए तुझे क्या कहूँ. यदि तू

अन्तरात्मासे अज्ञानका आवरण दूर करेगा अर्थात् भ्रममुक्त होगा तो अनेक प्रकारकी सेवाओंके भाव तेरे हृदयमें तत्काल प्रकट हो जाएँगे.

पहेले फेरे आपण आवियां, ते तो वाले कह्युं छे विवेक ।
ते तां लाभ लईने जागियां, हवे आपण करुं रे विसेक ॥ २६

प्रथम अवतरण (व्रज और रास) में हम लोग (गोपियोंके रूपमें) आए थे. हमारे प्रियतम धनी सद्गुरुने इसका विस्तारपूर्वक वर्णन किया है. उस समय थोड़ा लाभ लेकर हम क्षण मात्रके लिए परमधाममें जाग गईं थीं. (फिर इस ब्रह्माण्डमें आईं) अब इस जागनीके ब्रह्माण्डमें उससे भी अधिक लाभ लेना है.

पहेले फेरे थयुं आपणने, गौपद वछ संसार ।
एणे पगले चालिए, जो तुं पहेलो फेरो संभार ॥ २७

प्रथम अवतरणमें व्रजसे रासकी ओर जाते समय हमें यह संसार गायके बछड़ेके चरण-चिह्न पर भरे हुए पानीके समान तुच्छ लगता था. हे जीव ! उस प्रसंगको तू याद कर. अब भी हमें उसी मार्ग पर चलना है.

एटला माटे आ अजवालुं, वालेजीए कीधुं आ वार ।
नरसैयां वचन प्रगट कीधां, कांई व्रज तणा विचार ॥ २८

इसलिए सद्गुरुने इस बार भी उस मार्गको प्रकाशित किया है. व्रजकी इन बातों पर विचार करनेके लिए सद्गुरुने भक्त नरसी मेहताके वचनों द्वारा भी हमें स्पष्टता पूर्वक समझाया है.

कहे इन्द्रावती नरसैयां वचन, जो जोइए करीने चित ।
धणिए जे धन आपियुं, कांई करी आपणने हित ॥ २९

इन्द्रावती कहती है, हे सुन्दरसाथजी ! यदि हम नरसी मेहताके वचनोंको एकाग्र चित्त होकर सुनेंगे तो स्पष्ट होगा कि सद्गुरु धनीने तारतमरूपी धन देकर हम पर अत्यधिक उपकार किया है.

प्रेम सेवा वाले प्रगट कीधी, व्रज तणी आ वार ।
वचन विचारीने जो जोईए, कांई नरसैयां तणा निरधार ॥ १

प्रियतम सद्गुरु धनीने इस जागनीके ब्रह्माण्डमें व्रजकी प्रेमलीला और सेवाका स्पष्ट रूपसे वर्णन किया है. इस सन्दर्भमें भक्त नरसी मेहताके वचनों पर भी निश्चित रूपसे विचार कर लीजिए.

श्री धामतणां साथ सांभलो, हुं तो कहुं छुं लागीने पाय ।
जे रे मनोरथ कीधां आपणे, ते पूरण एणी पेरे थाय ॥ २

हे अखण्ड परमधामकी ब्रह्मात्माओ ! सुनिए, मैं चरणोंमें प्रणाम कर निवेदन करता हूँ. परमधाममें हम सभीने जैसा खेल देखनेकी इच्छा की थी वे सम्पूर्ण कामनाएँ इस प्रकार पूर्ण हुईं हैं.

व्रजमां कीधी आपण वातडी, ते तां सघली मांहें सनेह ।
काम करतां अति घणां, पण खिण नव छाड्यो नेह ॥ ३

व्रज मण्डलमें हम ब्रह्मात्माओंने जो लीलाएँ कीं वे सब प्रेममयी थीं, अर्थात् वहाँ तो सबके बीच प्रेम ही था. लौकिक कार्यमें व्यस्त रहने पर भी प्रियतम धनीके स्नेहको क्षणभरके लिए भी नहीं भूलतीं थीं.

विविध पेरे सिणगार जो करतां, मन उलास ज थाय ।
मननां मनोरथ पूरण करतां, रंग भर रैणी विहाय ॥ ४

विविध प्रकारके शृङ्गार करने पर हमारे मनमें विशेष उत्साह पैदा होता था. प्रियतम धनीके साथ रह कर सम्पूर्ण मनोकामनाएँ पूर्ण करते हुए परमानन्दमें ही रात व्यतीत हो जाती थी.

उठतां बेसतां रमतां, वालो चितथी ते अलगो न थाय ।
ज्यारे वन पधारतां, त्यारे खिण वरसा सो थाय ॥ ५

उठते, बैठते, खेलते किसी भी समय प्रियतम धनी श्रीकृष्ण हमारे चित्तसे नहीं हटते थे अर्थात् उनका (स्वरूप) ध्यान हृदयसे छूटता नहीं था. जब

वे (गाय और ग्वालोंके साथ) वनमें जाते थे तब एक क्षण भी हमारे लिए वर्षोंके समान होता था.

मांहोंमांहें विचार ज करतां, वात ज करतां एह ।
आतम सहुनी एकज दीसे, जुजवी ते दीसे देह ॥ ६

परस्पर मिल कर हम कोई भी विचार करतीं थीं तो प्रियतम (श्रीकृष्ण) के विषयमें ही करतीं थीं. हम सबकी आत्मा एक ही थी किन्तु बाह्यदृष्टिसे सबके शरीर भिन्न भिन्न दिखाई देते थे.

निस दिवस वालाजीसुं वातो, रामत करतां जाय ।
खिणमात्र जो अलगां थैए, तो विछोडो खिण न खमाय ॥ ७

रात दिन व्रजमें प्रियतम श्री कृष्णके साथ ही बातें होती रहती थीं. और उनके साथ क्रीड़ा करते-करते दिन बीत जाता था. यदि पल भरके लिए भी हम प्रियतमसे अलग होती तो वह क्षण भरका वियोग भी सहन नहीं होता था.

विविध विलास वालाजीसुं करतां, पूरण मनोरथ थाय ।
ज्यारे वाछरडां लई वन पधारे, त्यारे रोवंतां दिन जाय ॥ ८

प्रियतम धनी श्रीकृष्णके साथ अनेक प्रकारके आनन्द लेते हुए हमारी मनोकामनाएँ पूरी हो जाती थीं. जब श्रीकृष्ण गाय-बछड़ोंको लेकर वनमें जाते तो पूरा दिन उनका स्मरण करते और रोते हुए व्यतीत होता था.

दाण लीलानी रामत करतां, माथे मही माखणनो भार ।
वचन रंगनां उथलां वालतां, रमतां वन मंझार ॥ ९

(दही, मक्खन बेचने जाते हुए मार्गमें) दान लीलाकी रामत करते समय हमारे सिर पर दही और मक्खनकी मटकी रखी हुई होती थी. ऐसे समय परस्पर प्रेम पूर्वक उलटी-सीधी हास्य-विनोदपूर्ण बातें करती हुई हम वन प्रदेशमें खेलतीं थीं.

व्रज नरसैए प्रगट कीधुं, अति घणां वचन विवेक ।
ए वचन जोईने चालिए, तो आपण थैए विसेक ॥ १०

भक्त नरसी मेहताने व्रज लीलाओंके गीत विवेकपूर्वक गाए हैं. उनके वचनों पर विचार कर चलेंगे तो हमें व्रज लीलाका विशेष महत्त्व समझमें आएगा.

व्रजलीला अति मोटी छे, जो जो नरसैयां वचन प्रमाण ।
ए पगलां सरवे आपणां, तमे जाणी सको ते जाण ॥ ११

व्रजकी लीला अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है. नरसी मेहताके वाक्य इसके साक्षी हैं. हे ब्रह्मात्माओ ! यदि आप जानना चाहती हैं तो यह हमारा अपना ही मार्ग है.

कहे इन्द्रावती सुणो रे साथजी, इहां विलम्ब कीधांनी नहीं वार ।
ए अजवालुं कीधुं मारे वाले, आपणने आ वार ॥ १२

इन्द्रावतीके रूपमें महामति कहते हैं, हे मेरे सुन्दरसाथजी ! सुनिए. अब यहाँ पर विलम्ब करनेका समय नहीं है. इस समय मेरे धनी सद्‌गुरुने हम सबके लिए यह ज्ञानका प्रकाश फैलाया है.

प्रकरण ४ चौपाई १४७

राग : धन्यासरी

एणे पगले आपण चालीए, कांई पगलां ए रे परमाण, सुन्दरसाथजी ।
पेहेले फेरे आपण जेम निसरियां, तमे जाण थाओ ते चित आण ।
चित आणीने रंग माणो, सुन्दरसाथजी ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! हम उसी मार्ग पर चलें, जिस प्रेम मार्ग द्वारा हमने व्रजसे रासकी ओर प्रयाण किया था. वही मार्ग प्रमाणभूत है. प्रथम अवतरणमें व्रजसे रासकी ओर जाते समय हमने संसार और शरीरको तुच्छ समझकर उन्हें छोड़ दिया था. अब इस प्रसंगको हृदयमें धारण कर धनीके साथ उसी प्रकारका प्रेम आनन्द करें.

रास नरसैए रे नव वरणव्यो, मारे मन उत्कंठा एह ।
चरण पसाए रे वालातणे, तमे सांभलो कहुं हुं तेह ॥ २

भक्त नरसी मेहताने रास लीलाका वर्णन नहीं किया. मेरे मनमें यह इच्छा जागृत हुई है कि मैं उस लीलाका वर्णन करूँ. सद्‌गुरु धनीके चरणोंके प्रतापसे मैं रास लीलाका वर्णन करता हूँ. आप इसे सुनिए.

श्रीधणिए जे रे वचन कह्यां, ते में सांभल्यां रे अनेक ।
पण में रे मारा गजा सारुं, कांई ग्रह्या छे लवलेस ॥ ३

प्रियतम धनी सद्गुरु द्वारा किया हुआ व्रज और रास लीलाओंका वर्णन मैंने अनेक प्रकारसे सुना परन्तु उनमें-से मैंने अपनी बुद्धिकी क्षमता अनुसार थोड़ा-सा ही ग्रहण किया है.

सरद निसा रे पूनम तणी, आव्यो ते आसो रे मास ।
सकल कलानो चंद्रमा, एणी रजनीए कीधो रे रास ॥ ४

आश्विन मास आ पहुँचा है. शरद पूर्णिमाकी रात्रिमें चन्द्रमा सम्पूर्ण कलाओंके साथ अपनी छटा फैला रहा है, ऐसी रात्रिमें श्रीकृष्ण और गोपियों (ब्रह्मात्माओं) ने रास लीला की.

रास तणी रे लीला कहुं, जे भरियां आपणे पाय ।
निमख ना कीधी रे निसरतां, ततखिण तेणे रे ताय ॥ ५

मैं अखण्ड रास लीलाका वर्णन कर रहा हूँ. जिसमें प्रवेशके लिए हम ब्रह्मात्माओंने गोपीकाओंके रूपमें पाँव उठाए थे. व्रज मण्डलसे प्रस्थान करते समय एक क्षण भी विलम्ब नहीं किया था. वेणुकी ध्वनि सुनते ही हम तत्क्षण निकल पड़े थे.

संझाने समे रे वेण वाइयो, कांई वृन्दावन मोझार ।
एणे समे सहु ऊभुं मूकियुं, तेहने आडो न आव्यो रे संसार ॥ ६

सन्ध्याके समय श्रीकृष्णजीने वृन्दावनमें जाकर वेणुनाद किया. उस समय हम सभी गोपियाँ जो जिस स्थितिमें थीं, उसे ज्योंका त्यों छोड़कर निकल गईं थीं. उस समय हमारे लिए सांसारिक बन्धन मार्गमें बाधक नहीं बने.

नहीं तो कुलाहल एवडो हुतो, पण चितडां वेध्यां रे प्रमाण ।
साथ सहुए रे वेण सांभल्यो, बीजो श्रवण तणो गुण जाण ॥ ७

अन्यथा उस समय व्रजमें गाय तथा गोप ग्वालोंके आवागमनके कारण ऐसा

कोलाहल मच रहा था कि कुछ भी सुनना कठिन हो जाता था. किन्तु हम गोपियोंका चित्त सदैव श्रीकृष्णमें ही मग्न होनेके कारण उनका वेणु नाद ही हमें सुनाई दिया और हमारे चित्त व्याकुल हो उठे, जबकि दूसरोंको तो केवल श्रवण सुख ही प्राप्त हुआ.

कोई सखी रे हुती गाय दोहती, दूध घोणियो रे हाथ मांहे ।
एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गयो घोणियो रे तेणे ताए ॥ ८

कोई सखी गौ दोहन कर रही थी. उसके हाथमें दूध दुहनेका पात्र था. जिस समय श्यामकी वंशी बजी. उसे सुनते ही दूधका पात्र हाथसे तत्क्षण गिर पड़ा.

कोई सखी रे काम करे घर मधे, आडो ऊभो ससरो पत जेह ।
वेण सुणी रे पाटु दई निसरी, एणी द्रष्टमां सरूप सनेह ॥ ९

कोई एक सखी अपने गृहकार्यमें लगी हुई थी. पति और श्वसुर उसके सम्मुख खड़े थे. वंशीकी ध्वनि सुनते ही वह सुधि-बुद्धि खो बैठी और उनकी उपेक्षा करती हुई चली गई क्योंकि सखियों (ब्रह्मात्माओं) की स्नेहपूर्ण दृष्टिमें श्यामसुन्दरकी छविने स्थान बना लिया था.

कोई सखी रे वात करे पतसुं, ऊभी धवरावे रे बाल ।
एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गयो बाल तेणे ताल ॥ १०

कोई एक सखी अपने पतिके साथ बातचीत करते हुए खड़े खड़े अपने बालकको स्तनपान करा रही थी. अचानक प्रियतम धनीकी वंशीका स्वर सुनाई दिया और वह उसी समय बालकको वहीं छोड़कर चली गई.

कोई सखी रे हुती प्रीसणे, हाथ थाली प्रीसे छे धान ।
एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गई थाली ते तान ॥ ११

कोई सखी भोजन परोसनेमें लगी हुई थी. हाथमें थाली लेकर पकाया हुआ धान्य (अन्न) परोस रही थी. उसी समय श्रीकृष्णकी वंशी बजी और

भावावेशके कारण हाथसे थाली गिर पड़ी.

कोई सखी रे एणे समे निसरतां, एक पग भांडां रे मांहे ।
बीजो पग पतना रुदे पर, एणी द्रष्टे न आव्युं रे कोई क्यांहे ॥ १२

इस अवसर पर घरसे निकलते हुए किसी सखीका एक पाँव भोजनके पात्रमें पड़ गया तो दूसरा पाँव पतिकी छातीको छू गया. क्योंकि वंशीनाद सुनते ही उसकी दृष्टिमें सांसारिक वस्तुएँ नहीं आईं अर्थात् वह अपनापन खो बैठी थी.

कोई सखी रे वेगे वछूटतां, पडियो हडफटे ससरो त्यांहे ।
आकार वहेरे घणवे उतावला, चित जई बेठुं वालाजी मांहे ॥ १३

कोई एक सखी उतावली होकर निकलते समय अपने श्वसुरके साथ टकरा गई तो वे गिर पड़े. क्योंकि उस सखीका शरीर द्रुत गतिसे वहाँ पहुँचना चाहता था और चित्त पहलेसे ही श्यामसुन्दर श्रीकृष्णके पास पहुँच गया था.

माता पिता पत सासु ससरो, रोवतां न सुणियां रे बाल ।
वायने वेगे रे वछुटियो, वेण सांभलतां तत्काल ॥ १४

इन व्रजगोपिकाओंने माता, पिता, पति, सास, श्वसुर और अपने रोते हुए बच्चोंकी भी परवाह नहीं की. वंशीकी ध्वनि सुनते ही वे तत्काल पवनवेगसे निकल पड़ीं.

वस्तर विना सखी जे नाहती, तेणे नव संभारियां रे अंग ।
वेण सांभलतां रे वाला तणी, एणे वेगमां न कीधो रे भंग ॥ १५

जो सखी कपड़े उतार कर स्नान कर रही थी वह अपने अंगोंको संभाल न सकी. प्रियतम धनीके वेणुनादको सुनते ही उसने अन्य सखियोंकी गतिमें भंग नहीं होने दिया अर्थात् वह भी उनके साथ उसी गतिसे चलने लगी.

कोई सखी रे हुती नवरावती, हाथ लोटो नामे छे जल ।
सुणी स्वर पडियो लोटो अंग उपर, न बोलाणुं चितडे व्याकुल ॥ १६

कोई एक सखी (पतिको) स्नान करवा रही थी. हाथमें लोटा लेकर पानी डाल रही थी. वंशीकी सुमधुर ध्वनि सुनते ही पानीका लोटा पतिके अंग

पर गिरा. व्याकुल चित्त होनेके कारण मुखसे कुछ भी बोल न सकी.

गोपद बछ रे एणे समे, सुकजीए निरधारियो ते सार ।
त्राटकडे रे त्रटका करिया, कांई बंधडा हता जे संसार ॥ १७

इस प्रसंगको शुकदेवजीने श्रीमद्भागवतमें गोवत्सपद कहा है. (जिस प्रकार गायके बछड़ेके चरण-चिह्नमें भरे हुए पानीको लाँघनेमें कोई कठिनाई नहीं होती उसी प्रकार संसार सागरको पार करनेमें गोपियोंको किसी भी प्रकारकी कठिनाई नहीं हुई). संसारके सभी बन्धनोंको उन्होंने तिनकेके समान तुच्छ समझकर टुकड़े-टुकड़े कर डाले.

संसार तणां रे काम सरवे करतां, पण चितमां न भेद्यो रे पास ।
विलंब न कीधी रे वछूटतां, ए तामसियोना प्रकास ॥ १८

यद्यपि गोपियाँ सांसारिक कार्य कर रही थीं तथापि उनके मनमें संसारका लेशमात्र भी मोह नहीं था. इसलिए मायाके बन्धनोंको तोड़कर मुक्त होनेमें उन्होंने थोड़ा-सा भी विलम्ब नहीं किया. ऐसी गतिविधि स्पष्ट रूपसे तामस स्वभाववाली सखियोंकी थी.

कोई सखी रे सिणगार करतां, सुणी तेणे वेण श्रवण ।
पायनां भूषण काने पेहेरियां, कान तणां रे चरण ॥ १९

अनेक सखियाँ शृङ्गार कर रही थीं. उनके कानोंमें जब वंशीकी ध्वनि पड़ी तो शीघ्रतामें चरणके आभूषण कानमें और कानके आभूषण पाँवमें पहन लिए.

एक नैणे रे अंजन करियुं, बीजुं रह्युं रे एम ।
वेणनो स्वर सांभल्यां पछी, राजसियो रहे रे केम ॥ २०

एक आँखमें अञ्जन किया तो दूसरी आँख बिना अञ्जनकी ही रह गई. वंशीकी ध्वनि सुननेके पश्चात् राजस स्वभाववाली सखियाँ घरमें कैसे रह सकतीं थीं ?

राजसिए रे कांइक नैणे दीठो, पण विचार करे तो थाय वेड ।
तामसियो रे मोहोवड थैयों, राजसिए न मूक्यो तेहनो केड ॥ २१

राजस स्वभाववाली सखियोंने आँखें उठाकर चारों ओर देखा. यदि वे विचार

करने लगतीं तो विलम्ब होनेकी संभावना थी. तामस स्वभाववाली सखियाँ सबसे पहले निकल गईं थीं. राजसी सखियोंने भी उनका अनुसरण किया.

स्वांतसिए रे विचार करियो, तेने आडा देवराणां रे वार ।
कुटम सगा रे सहु टोले मली, फरीने वल्यां भरतार ॥ २२

सात्विक स्वभाववाली सखियोंने बाहर निकलनेका विचार किया ही था कि उनके लिए द्वार ही बन्द कर दिए गए. परिवारके सदस्य और अन्य परिचित व्यक्तियोंसे मिलकर उनके पतियोंने उनको चारों ओरसे घेर लिया.

त्यारे मनमाहें विचार करियो, ए कां आडा थाय दुरिजन ।
ए सुं जाणे वर नहीं एनो वालैयो, तो जातां वारे छे वन ॥ २३

जब सात्विक स्वाभाववाली सखियाँ मनमें विचार करने लगीं कि ये दुष्ट लोग हमारे मार्गमें रुकावट बनकर क्यों आ गए हैं ? उन्हें क्या इस बातका पता नहीं है कि हमारे प्रियतम पति तो श्रीकृष्ण हैं. फिर ये हमें किसलिए वृन्दावन जानेसे रोक रहे हैं ?

धिक धिक पडो रे आ संसारने, कां न उठे रे अगिन ।
व्रह तामस रे भेलां थयां, त्यारे अंगडां थयां रे पतन ॥ २४

सात्विक स्वभाववाली सखियाँ कहतीं हैं, ऐसे संसारको धिक्कार है ! इसमें अब तक आग क्यों नहीं लगी ! इस समय गोपियोंके हृदयमें श्रीकृष्ण वियोगका विरह और अन्य परिवार जनोंके प्रति क्रोध (तामस), दोनों एक साथ प्रकट हुए. तब उन्होंने शरीरको त्याग दिया.

वास्नाओ वहियो रे अति वेगमां, वार न लगी रे लगार ।
वस्त खरी रे केम रहे वाला विना, तेणे साथ समो कीधो सिणगार ॥ २५

इस प्रकार इन सखियोंकी आत्मा निकलकर तीव्र गतिसे वृन्दावन पहुँच गई. उन्हें क्षणमात्रका भी विलम्ब नहीं हुआ. सचमुच ब्रह्मात्माएँ प्रियतम श्रीकृष्णके बिना कैसे रह सकतीं हैं ? इन सात्विक आत्माओंने, योगमाया द्वारा रचित रासमण्डलमें पहुँच कर राजस और तामस वृत्तिवाली सखियोंके साथ दिव्य शृङ्गार किया.

व्रज वधु कुमारकाओनी, कही नहीं सुकजीए विगत ।
ते केम संसे राखुं मारा साथने, तेनी करी दऊं जुजवी जुगत ॥ २६

व्रजवधुओं (गोपियों) की कुमारिकाओंका वर्णन शुकदेवजीने नहीं किया है. सुन्दरसाथके मनमें इनके विषयमें सन्देह क्यों रहने दूँ ? इसलिए ब्रह्मात्माओं और कुमारिकाओंका अलग-अलग वर्णन करता हूँ.

जेटली नाहती कारतिक कुमारिका, ए वास्ना नहीं उतपन ।
एनी लज्या लोपावी हरीने वस्तर, तेसुं कीधो वायदो वचन ॥ २७

जितनी कुमारिकाएँ कार्तिक स्नान कर रही थीं, वे ब्रह्मवासनाएँ नहीं थीं. श्रीकृष्णने वस्त्रहरण कर उनकी लज्जाका भी हरण कर लिया और अखण्ड रासलीलामें साथ खेलनेका वचन दिया.

जे सखी हुती कुमारका, घर नहीं तेहनां अंग ।
सनेह बल दया लीधी धणीतणी, ते मलीने भली साथने रंग ॥ २८

इन कुमारिकाओंकी पर-आत्मा अक्षरधाममें नहीं थी. श्रीकृष्णके प्रति उनका अधिक प्रेम होनेके कारण उसी प्रेम-बलसे उन्होंने श्रीकृष्णकी कृपा प्राप्त की और रासलीलामें ब्रह्मात्माओंके शरीरमें प्रवेश कर अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण कीं.

साथ दोडे रे घणवे आकलो, मननी ना पहोंती हाम ।
जोगमाया सामी आवी जुगतसुं, सिणगार कीधो एणे ठाम ॥ २९

ब्रह्मात्माएँ अत्यन्त उत्सुकतासे दौड़कर आई थीं. इसी शरीरके माध्यमसे रास खेलनेकी उनकी मनोकामना पूरी नहीं हुई. रास मण्डलमें पहुँचते ही योगमाया उनके सम्मुख आई और उसने युक्तिपूर्वक सब ब्रह्मात्माओंको नवीन शृङ्गार धारण करवाया.

सुणोजी साथ कहे इन्द्रावती, जोगमायानो जुओ विचार ।
ए केणी पेरे हुं वरणवुं, मारा साथ तणो सिणगार ॥ ३०

इन्द्रावतीके रूपमें महामति कहते हैं, हे मेरी धामकी अङ्गनाओ ! सुनिए, योगमायाके इस अनुपम (अलौकिक, दिव्य) ब्रह्माण्डको ध्यान पूर्वक

देखिए. योगमाया द्वारा किया गया अङ्गनाओंके दिव्य शृङ्गारका वर्णन मैं कैसे करूँ ?

वचन धणीतणां में सांभल्यां, मारा गजा सारुं रे प्रमाण ।
एक स्यामाजीने वरणवुं, बीजो साथ सकल एणी पेरे जाण ॥ ३१

मैंने अपने सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्रजीके दिव्य वचनोंको सुना और अपनी बुद्धिके अनुसार उन्हें ग्रहण किया. सर्व प्रथम मैं श्यामाजीके अलौकिक शृङ्गारका वर्णन कर रहा हूँ. अन्य सभी ब्रह्मात्माओं (गोपियों) के शृङ्गारको भी इसी प्रकार समझना.

प्रकरण ५ चौपाई १७८

राग : धन्यासरी

श्री ठकुराणीजीनो सिणगार

अखंड सरूपनी अस्थिर आकारे, सोभा कहुं घणवे करीने सनेह ।
जोई जोई वचन आणुं कै ऊंचा, पण ना आवे वाणी मांहें तेह ।
सोभा सिणगार स्यामाजीनो निरखूंजी ॥ १

इन्द्रावतीके स्वरूपमें महामति कहते हैं, मैं अस्थिर आकार (अस्थायी पाँच तत्त्वके शरीर) द्वारा श्रीश्यामाजी महारानीके अखण्ड स्वरूपकी शोभा (सुन्दरता) का प्रेमपूर्वक वर्णन करता हूँ. इसके लिए चुन-चुन कर श्रेष्ठ शब्दोंका उपयोग करना चाहता हूँ. तथापि वह दिव्य शोभा शब्दोंमें वर्णित नहीं होती है. श्रीश्यामाजीकी वह दिव्य शोभा और शृङ्गारको मैं अन्तर्दृष्टिसे देखता हूँ.

ए सोभा ना आवे वाणी मांहें, पण साथ माटे कहेवाणी ।
ए लीला साथना रुदेमां रमाडवा, तो में सबदमां आणी ॥ २

श्रीश्यामाजीकी इस अलौकिक शोभाका वर्णन शब्दोंमें नहीं समाता तथापि अपनी अङ्गनाओंके लिए इसका वर्णन करना आवश्यक है. इस लीला और स्वरूपको उनके हृदयमें विराजमान करवानेके लिए ही मैंने शब्दोंके माध्यमसे वर्णन करनेका प्रयत्न किया है.

चरण अंगूठा अति भला, पासे कोमल आंगलियो सार ।
रंग तो अति रलियामणो दीसे, नख हीरातणां झलकार ॥ ३

श्रीश्यामाजीके श्रीचरणोंका अंगूठा अत्यन्त सुन्दर है. उसके पास कोमल अङ्गुलियाँ हैं. अंगूठे और अङ्गुलियोंका रङ्ग अत्यन्त सुन्दर दिखाई देता है. नखोंकी अनुपम आभा तो हीरोंकी भाँति चमकती है.

हीरा ते पण तेहज भोमना, आ जिभ्या तिहां न पोहोंचाय ।
आणी जिभ्याए जो न कहुं साथने, तो रुदे प्रकास केम थाय ॥ ४

यह हीरा भी उसी अखण्ड भूमिकाका है. यह लौकिक वाणी वहाँ तक नहीं पहुँचती है. यदि मैं लौकिक जिह्वासे इसका वर्णन न करूँ तो सुन्दरसाथके हृदयमें उसके ज्ञानका प्रकाश किस प्रकार होगा ?

फणा तो रंग पतंग छे, कांकसा नसो निरमल निरधार ।
कूकम रंगे पानी सोभे, चरण तली वली सार ॥ ५

श्रीश्यामाजीके चरणका पञ्जा लाल रङ्गका है. दो अङ्गुलियोंके बीचका भाग तथा नसें भी अत्यन्त सुन्दर, स्वच्छ और कोमल हैं. पाँवकी पहनी (चरण तलका किनारा) मनोहर कुमकुम वर्णकी है तथा चरण तलका भाग (तलवा) अत्यन्त सुन्दर (श्रेष्ठ) है.

लांक तो दीसे अति लहेकतो, रेखा सोभित अति पाय ।
टांकण घुंटी ने कांडा कोमल, पींडी ते वरणवी न जाय ॥ ६

चरण तलका अर्धवृत्त भाग अत्यन्त तेजोमय एवं चमकीला है. उसकी रेखाओंकी शोभा अनुपम है. एड़ीके ऊपरके भागमें स्थित गाँठ और काँडा अत्यन्त कोमल हैं. पिंडलीकी शोभाका वर्णन तो हो ही नहीं सकता.

कुंदन केरा अणवट सोहे, विछुडा करे ठमकार ।
माणक मोती ने नीला पाना, जुगते अति जडाव ॥ ७

चरणकमलके अंगूठेमें सोनेकी अङ्गुष्ठी शोभायमान है अंगूलियोंकी मुद्रिकाओंकी झंकार सुनाई देती है. ये मुद्रिकाएँ माणिक, मोती, नीलमणि और पन्नासे युक्तिपूर्वक सुजड़ित हैं.

कांबी कडलां रणझण बाजे, घुंघरी तणां घमकार ।
हेमतणां वाला मांहें गठिया, झांझर तणां झमकार ॥ ८

चरणोंमें काँबी-कड़ोंकी झङ्कार हो रही है. घुँघुरुकी घमक सुनाई पड़ती है. यह घुँघरी सोनेके तारको ऐंठकर बनाई हुई है. सोनेके तारमें पिरोई हुई घुँघुरुका मधुर स्वर झनक रहा है.

कांबिए नंग आसमानी फूलवेल, जुगते कुंदन जडाव ।
जडाव लाल नंग नीला पीला, कडले सोभा अति थाय ॥ ९

काँबी-कड़ोंमें आसमानी रंगके रत्न जड़ित हैं और सोनेमें फूलवेलियोंकी नक्काशी कर प्रवीणतासे कलाकृति की गई है. कड़ोंमें भी लाल, नीले-पीले रंगके मणि (नग) जड़े हुए हैं, इनकी शोभा अति सुन्दर है.

घूंघरडीनो घाट जुगतनो, कोरे करडा कुंदन ।
मांहें मोती फरतां दीसे, मध्य जडियां नीला नंग ॥ १०

घुँघरीकी गठन भी अत्यन्त युक्तिपूर्ण है. उनके अन्त भागमें सोनेके छोटे-छोटे दाने जड़ायमान हैं और चारों ओर मोती डाले हुए हैं. उनके मध्यमें नीला रत्न जड़ा हुआ है.

झांझरिया एक जुई जुगतनां, कोरे लाल जडाव कांगरी ।
एक हार बे हीरा तणी, बीजी मध्य दरपण रंग दोरी ॥ ११

झाँझरी भूषण भी अलग ही युक्तिसे गढ़े हुए हैं. इनके छोर पर लाल प्रवाल जड़े हुए हैं. उनमें एक दुहरे हीरेकी माला है और दूसरी मालाके बीच दर्पण रङ्गकी डोरी है.

भूषण चरणे सोभंता, अने बोलंतां रसाल ।
जुजवी जुगतनां जवेर ज दीसे, करे ते अति झलकार ॥ १२

ये आभूषण चरण कमलोंमें शोभायमान हैं और इनसे मधुर ध्वनि झंकृत होती है. इनमें भिन्न-भिन्न प्रकारके रत्न (जवाहरात) दिखाई देते हैं, वे अत्यन्त प्रकाशमान हैं.

वस्तर केणी पेरे वरणवुं, एतां साएर अति सरूप ।
मारा जीवनी खेवना भाजवा, हुं तो कहुं गजा सारुं कूप ॥ १३

श्रीश्यामाजीके अङ्गके वस्त्रोंका वर्णन किस प्रकार करूँ ? उनके अलौकिक स्वरूपका वर्णन तो सागरके समान अगाध है. मेरे जीवकी जिज्ञासाकी सन्तुष्टिके लिए मैं अपनी तुच्छ (कूप-मण्डूक सदृश) बुद्धिके अनुसार वर्णन करता हूँ.

नीली ते लाहिनो चरणियो, अने मांहें कसबनी भांत ।
कोरे कोरे कांगरी, इन्द्रावती जुए करी खांत ॥ १४

श्रीश्यामाजीके लहँगेका रङ्ग नीला और लाही मिश्रित है, और उसमें सोनेकी तारोंसे भाँति-भाँतिकी चित्रकारी की हुई है. उसकी किनारी बेलबूटोंसे भरी हुई है. इन्द्रावती बड़ी चाहसे उसे देख रही है.

कांगरी केरी जुगत जोइए, द्रढ करीने मन ।
माणक मोती हीरा कुंदन, नीला ते पाच रतन ॥ १५

मनको दृढ़ कर लहँगेके किनारमें लगी हुई काँगरीकी युक्तिको देखते हैं. इसमें माणिक, मोती, हीरे, सोना, नीलमणि और पाच (हरित मणि) इन रत्नोंका अत्यन्त अनुपम जड़ाव दिखाई देता है.

भांत तो भली पेरे वरणवुं, मांहें वेल सोनेरी सार ।
वस्तर समियल वनियल दीसे, नव सुझे कोय तार ॥ १६

इस जड़ावकी कार्यकुशलताका ठीकसे वर्णन कर रहा हूँ. उपर्युक्त रत्नोंके अन्तरालमें सोनेके तारकी बेलें भरी हुई हैं. इन वेलोंको वस्त्रोंकी भाँति इस प्रकार गूथा गया है कि इनकी तारके तन्तु (ताने-बाने) दिखाई ही नहीं देते हैं.

अनेक विधनां फूल ज दीसे, मांहें जवेर तणां झलकार ।
नाडी तो अति सोभा धरे, जेमां रंग दीसे अग्यार ॥ १७

इस लहँगेमें अनेक प्रकारकी फूलबेलियाँ दिखाई देतीं हैं जिनमें भाँति-भाँतिके रत्न झलक रहे हैं. इसकी डोरी (नाड़ी) में ग्यारह रंगोंकी शोभा मिश्रित है इसलिए वह डोरी भी अत्यन्त सुन्दर दिखाई देती है.

नीलो पीलो सेत सेंदुरियो, मांहें कसबनी भांत ।
स्याम गुलालियो अने केसरियो, मांहें जांबु ते रंगनी जात ॥ १८

इस डोरी (नाड़ी) में नीले, पीले, सफेद और सिन्दूर रङ्गके बीच-बीचमें बेलबूटे हैं. इसमें श्याम, गुलाबी तथा केसरिया रंग भी शोभायमान है. बीच-बीचमें जामुन रङ्गकी झलक दिखाई देती है.

जुगत एक वली जुई छे, ऊभी लाखी लिबोईनी दोर ।
माणकदे द्रढ करीने जुए, सोभित बंने कोर ॥ १९

इस डोरी (नाड़े) में एक और भी युक्ति है. इसके दोनों छोरों पर नीचेसे ऊपर तक लाखी और नीबू रंगके धागे गूँथे गए हैं. माणकदे (श्रीइन्द्रावती) ध्यानमग्न होकर इन दोनों छोरोंकी शोभा देख रही है.

चीण चरणिए जोईअे, मांहें वेल मोती झलकंत ।
राती नीली चुंनी कुंदनमां, भली पेरे मांहें भलंत ॥ २०

इस लहँगेकी भाँत-भाँतकी चुन्नटको देखें तो उनमें मोतीसे भरे हुए बेल-बूटोंकी कला झलकती दिखाई देगी. लाल और नीले रंगके रत्न सोनेमें इस प्रकार मिश्रित हो गए हैं कि उनकी शोभा अपरिमित दिखाई देती है.

ए उपर जे सोभा धरे, कांई तेहनो न लाभे पार ।
अंग चरणियो प्रगट दीसे, साडी मांहें सिणगार ॥ २१

इसके ऊपर पहनी हुई साड़ीकी शोभाका पार पाया नहीं जा सकता. श्रीश्यामाजीकी साड़ी निर्मल और पारदर्शक होनेके कारण उसमें-से उनके श्रीअङ्ग, लहँगा तथा शृङ्गार स्पष्ट दिखाई देते हैं.

छूटक छापा कुंद्रन केरा, साडी सेन्दुरिए रंग ।
हीरा माणेक मोती लसणिया, मध्य पांच वाणीनां नंग ॥ २२

सिन्दूरी रंगकी साड़ीमें अलग-अलग आकृतिके सुनहरे बूटे (छाप) जड़े हुए हैं. इसमें हीरा, मानिक, मोती, वैदूर्यमणि (लसनिया) तथा बीचमें पाँच प्रकारके रत्न जड़े हुए हैं.

सोभा तो घणीए सोहामणी, जो द्रढ करी जोइए मन ।
झीणां वस्तर ने अति उत्तम, कानिए दोरी त्रण ॥ २३

मनको स्थिर कर देखें तो साड़ीकी शोभा अत्यन्त सुन्दर है. वह अत्यन्त सूक्ष्म (महीन) और कोमल है. इसके किनारे पर तीन धारियाँ शोभा दे रहीं हैं.

मांहें मोती कोरे कसबी, त्रीजी नीली चुनी सार ।
अनेक विधनी वेल जो सोभे, छेडे करे झलकार ॥ २४

बीचमें मोती तथा किनारी पर कसीदा जड़ा हुआ है. मोती तथा कसीदेके साथ नीले रंगकी रत्नकणिकाएँ जड़ायमान हैं. साड़ीमें रत्नोंकी सजावटसे अनेक बेलियाँ शोभायमान हैं. इसके दोनों छोर जगमगा रहे हैं.

सुन्दर लांक सोहामणो, वांसो दीसे साडीमां अंग ।
वेण तले कंचुकीनी कसो, जुगते सोहे बंध ॥ २५

साड़ीमें-से पीठका भाग दिखाई देता है. पीठकी गहराई (लाँक) अत्यन्त कमनीय है. चोटीके नीचे पीठ पर चोलीका बन्धन सुन्दरतासे बँधा हुआ दिखाई देता है.

अंगनो रंग निरख्यो न जाय, क्यांहे न माय क्रण क्रांत ।
पेट पांसा उर कंठ निरखतां, इन्द्रावती पामे स्वांत ॥ २६

श्रीश्यामाजीके अंगोंसे कोटि सूर्यके समान कान्ति प्रकट होनेके कारण उनके श्रीअंगोंका रंग देखा नहीं जा सकता है. उनके पेट, पसलियाँ, वक्षस्थल एवं कण्ठकी शोभा देखकर इन्द्रावती अत्यन्त सुख शान्तिका अनुभव करती है.

अंगनो रंग अजवास धरे, तिहां स्याम चोली सोभावे ।
सुन्दर सरवे सिणगार सोहावे, तिहां लहेर भूषण क्रण आवे ॥ २७

उनके अंगोंका वर्ण देदीप्यमान प्रकाशकी भाँति है. उन्होंने श्यामरंगकी कञ्चुकी धारण की है. उनके सभी शृङ्गार उन्हें अत्यन्त शोभा देते हैं. आभूषणके रत्नोंसे निकलनेवाली किरणें चारों ओर झिलमिला रही है.

कसकसती चोलीने कठण पयोधर, पीला खडपा सोभंत ।
कस ठामें जे कांगरी, तिहां नीला जवेर झलकंत ॥ २८

कठोर पयोधर पर कसी हुई कंचुकी धारण की है, जिसमें पीले रंगके जोड़ शोभा दे रहे हैं. कंचुकीके बन्धनोंके स्थानकी काँगरीमें जड़े हुए नीलमणि जैसे रत्नोंसे प्रकाश फैल रहा है.

भरत भली पेरे सोभित, कांई पचरंग चुनी सार ।
अनेक विधनां फूल वेल, खसबोय तणां बहेकार ॥ २९

कंचुकीमें जो कसीदेका काम हुआ है उसमें पचरंग वेलोंकी चुन्नट कढ़ी हुई है. उनमें भाँत-भाँतके फूल और वेलें कढ़ी हुई हैं और उनसे मधुर सुगन्ध आ रही है.

कंचुकी जडाव छे जुगत जुजवी, उपर आभरण भली भांत ।
सुन्दर सरूप जोई जोईने, मारो जीव थाय निरांत ॥ ३०

कंचुकीमें भाँति-भाँतिके रत्न युक्तिपूर्वक जड़े हुए हैं. इसके ऊपर भिन्न-भिन्न प्रकारके आभूषण सुन्दर ढँगसे धारण किए हुए हैं. श्रीश्यामाजीके इस सुन्दर स्वरूपको देख-देखकर मेरी आत्माको शाश्वत शान्तिका अनुभव होता है.

कंठ केणी पेरे वरणवुं, मारा जीवने नथी कांई बल ।
पांच हार तिहां प्रगट दीसे, सोभित दोरे वल ॥ ३१

श्रीश्यामाजीके कण्ठकी सुन्दरताका वर्णन किस प्रकार करूँ ? क्योंकि इसका वर्णन करनेकी शक्ति मेरे जीवमें नहीं है. (तथापि सुन्दरसाथके सन्तोषके लिए कह रहा हूँ.) उनके गलेमें पाँच मालाएँ सुशोभित हैं. उनके कसे हुए डोरे अत्यन्त शोभा देते हैं.

एक हार हीरा तणो, बीजो पांच वरण रतन ।
त्रीजो हार मोती निरमलनो, कांई चोथो हेम कंचन ॥ ३२

श्रीश्यामाजीके गलेके पाँच हारमें एक हीरेका, दूसरा पाँच प्रकारके रत्नोंसे जड़ित, तीसरा निर्मल मोतियोंका और चौथा शुद्ध सोनेका है.

हेम तणो हार जुई रे जुगतनो, नव सर नव पाटली ।
जड़ाव हीरा पाच रतन मोती, मांहें माणक ने नीलवी ॥ ३३

सोनेके हारकी शोभा ही निराली है. वह नौ लड़ियों और नौ पट्टियोंका है. उसमें हीरे, पाच, रत्न, मोती, माणिक्य और नीलमणि जड़े हुए हैं.

उतरी त्रण सर सोभंती, कांई दोरो जडित अचंभ ।
हुं केणी पेरे वरणवुं, मारी जिभ्या आणे अंग ॥ ३४

उन हारोंमें-से तीन लड़ियाँ निकल कर कण्ठमें शोभायमान हैं. उनके सुनहरे डोरे भी अलग प्रकारसे गूँथे हुए हैं. उनका वर्णन किस प्रकार करूँ ? मेरी जिह्वा इस नश्वर शरीरकी ही तो है.

कचुंकीना कांठला उपर कोरे, कांई दोरे तेज अपार ।
सात रंगनां नंग पाधरां, जोत करे झलकार ॥ ३५

कंचुकीके ऊपरके किनारेसे लगे हुए बन्धनके डोरे चमक रहे हैं. उनमें जड़े हुए सात रंगके रत्न अति देदीप्यमान हो कर झलकार कर रहे हैं.

मांहें मोती माणक हीरा, पानां ने पुखराज ।
कुंदन मांहें रतन नंग झलके, रमवा सुन्दरी करे साज ॥ ३६

उनके बीच माणिक्य, मोती, हीरे, पन्ने और पुखराजके रत्न सोनेमें जड़े हुए चमक रहे हैं. इस प्रकार रास उत्सवके लिए श्रीश्यामाजी शृङ्गार कर रहीं हैं.

कांठले माणक ने वली मोती, कुंदन मांहें पांना नंग ।
चीडतणी चारे सर सोभे, कोई धात वसेकनां रंग ॥ ३७

कण्ठमालामें माणिक्य और मोती लगे हुए हैं और सोनेमें पन्ना जड़ा हुआ है. हारमें कसी हुई चार लडियाँ शोभायमान हैं, उनमें विशिष्ट धातुका रंग झलक रहा है.

ए उपर वली निरखीने जोइए, तो कंठसरी भली गई अंग ।
कंठसरी केरी कली जुजवी, कांई जुजवा छे तेहनां नंग ॥ ३८

इस कण्ठमाला (कंठूले) को यदि ध्यान पूर्वक देखें तो यह कण्ठके साथ चिपकी हुई दृष्टिगोचर होती है. इसकी कड़ियोंकी शोभा अलग ही प्रकारकी दिखाई देती है. इसके नग भी निराले हैं.

कंठसरी जडाव जुगतनी, मांहें राती नीली जवेरोनी हार ।
सकल सिणगार स्यामाजीने सोभे,कुंदनमां मोती झलकार ॥ ३९

कण्ठसरी युक्तिपूर्वक जड़ायमान है. बीचमें लाल तथा नीले जवाहरातोंकी पंड्क्ति है. सोनेकी लड़ियोंमें पिरोए हुए मोती नीचे लटक रहे हैं और शोभामें वृद्धि कर रहे हैं. इस प्रकार श्रीश्यामाजीका समग्र शृङ्गार शोभायमान है.

नख थकी कर वरणवुं, एह जुगत अति सार ।
आंगलियों अंगूठा कोमल, नख हीरा तणा झलकार ॥ ४०

अब श्रीश्यामाजीके नखसे लेकर हाथ तकका वर्णन करता हूँ. वह शोभा अत्यन्त उच्च प्रकारकी है. हाथके अंगूठे तथा अंगुलियाँ कोमल हैं. उनके नख हीरेकी भाँति चमक रहे हैं.

झीणी रेखा हथेलिए दीसे, पोहोंचा सोभित पतंग ।
आंगलिए बीसा बीस दीसे, कोमल कलाई अति रंग ॥ ४१

हथेलीमें बारीक रेखाएँ दिखाई देतीं हैं. उनके हाथके पहुँचे (पृष्ठ भाग) लाल रंगके शोभायमान हैं. अंगुलियों पर अंकित रेखाएँ बीसो-बीस दिखाई देती हैं तथा कलाई अत्यन्त कोमल और कमनीय है.

वीटी जडाव छे छ आंगलिए, सातमी अंगूठी अति सार ।
आभलियो ने फरतां पांना, दरपणमां मुख झलकार ॥ ४२

कमलके समान दोनों हाथोंकी छ अंगुलियोंमें रत्न जड़ित अंगुठियाँ धारण की हैं. सातमी अंगूठी जो अंगूठे पर धारण की है वह अनुपम है. इस

अंगूठीमें बीच-बीच शीशेके छोटे टुकड़े तथा पन्ने जड़े हुए है. इन शीशोंके टुकड़ोंमें श्रीश्यामाजीकी मुखाकृति चमक रही है.

बे वीटी ने हीरा मोती, बीजी बे रंग बे रतन ।
पांच रंगनी पाच एकने, एकने करडा कंचन ॥ ४३

प्रथम दो अंगूठियाँ हीरे और मोतीकी हैं. इसके बादकी दोमें दो दो रंगके दो रत्न चमक रहे हैं. एक मुद्रिकामें पाँच रत्न जड़े हुए हैं. छठीमें पाच रत्न जड़ा हुआ है शेष दो अंगुलियोंमें सोनेके छोटे-छोटे कड़े हैं.

पोहोंची ने नवघरी दीसे, उपर ऊंचा नंग ।
माणक मोती पांना कुंदन, ए सोभे पोहोंचीना नंग ॥ ४४

कलाई और नवघरी आभूषण सुन्दर दिखाई देते हैं. उन पर ऊँचे-ऊँचे रत्न जड़े हुए हैं. कलाईके आभूषणमें माणिक्य, मोती, पन्ना और सोनेमें जड़े हुए रत्न शोभायमान हैं.

नवघरी ने निरमल मोती, हीरा ने रतन ।
कुंदन मांहें पांना पुखराज, चूड मांहें नव रंग ॥ ४५

नवघरी आभूषणमें निर्मल मोती, हीरे और रत्न जड़े हुए हैं. सोनेमें पन्ना और पुखराज सुशोभित हैं. जबकि कलाई पर नौ रंगकी चूड़ियाँ हैं.

नव रंगनां नंग जुजवा, तेहनां ते जुजवां रूप ।
हुं मारी बुध सारुं वरणवुं, पण एह छे अदभूत ॥ ४६

ये नव रंगके रत्न भी अलग-अलग रूपमें जड़े हुए हैं. इसलिए उनका रूप भी अलग-अलग दिखाई देता है. मैंने तो अपनी बुद्धिके अनुसार वर्णन किया है, इसकी शोभा तो अत्यन्त अनुपम है.

नीलवी ने लसणियां सोभित, पांना ने वली लाल ।
माणक मोती हीरा कुंदन, मांहें रतन तणां झलकार ॥ ४७

इन चूड़ियोंमें नीलमणि (नीलवी) और वैदूर्यमणि (लसनिया) के रत्न शोभायमान हैं और उनके साथ-साथ पन्ने और लाल रत्न भी जड़े हुए हैं.

माणिक्य, मोती, हीरा आदि रत्न सोनेमें जड़े हुए हैं उनमें जड़े हुए अन्य रत्न भी झलक रहे हैं.

कोणी आगल कांकणी, जांबु रंग नंग जडाव ।
कुंदनना करकरियां सोभे, जोत करे अपार ॥ ४८

कुहनीके पास कलाई पर कंकनी नामका आभूषण धारण किया हुआ है, इसमें जामुनी रंगके रत्न जड़े हुए हैं. सोनेके छोटे छोटे सुन्दर दानोंके कारण इसकी ज्योति अपार दिखाई देती है.

मोहोलिए मोती ने कांगरी, नीली राती चुनी कुंदन ।
वेल मांहें हीरा हार दीसे, इन्द्रावती जुए द्रढ मन ॥ ४९

कुहनीके मोहरी पर मोती और काँगरी लगी हुई हैं. इसके ऊपर नीली, लाल और सुनहरी बूटियाँ मढ़ी हुई हैं. इस मोहरी पर बेलोंकी बुनाई है, जो हीरेके हारके समान दिखाई देती है. इन्द्रावती दृढ़ मनसे यह शोभा निहार रही है.

सुन्दर ने सोभे एक जुगते, झण बाजे रसाल ।
चूड केरा छापा अति सोभे, उर पर लटके माल ॥ ५०

स्वरूप और शृङ्गारकी शोभा अत्यन्त चारुतासे अभिव्यक्त हुई है. ये चूड़ियाँ मधुर झंकार करतीं हैं और उनमें वेल, फूल आदि शोभायमान हैं और गलेमें माला लटक रही है.

गाल तणो रंग कह्यो न जाय, अधुर परवालीनी भांत ।
दंत सोभे रंग दाडिमनी कलियो, हरवटी अधुर वचे लांक ॥ ५१

श्रीश्यामाजीके गुलाबी गालोंका लावण्य वर्णनातीत है. उनके अधर प्रवालके समान लाल रंगके हैं. दाँतोंकी शोभा अनारके दानोंकी पङ्क्ति जैसी सुन्दर है. चिबुक (ठोडी) और अधरके मध्यकी गहराई स्पष्ट रूपसे दिखाई देती है.

मुख चोक सोभित अति मांडनी, अने झलके काने झाल ।
जडाव माणक मोती ने हीरा, कुंदनमां पांना लाल ॥ ५२

श्रीश्यामाजीकी दिव्य मुखाकृति अत्यन्त सुशोभित है. कानोंमें झालें पहने हुए

हैं, वे प्रकाशमान हैं. इनमें माणिक्य, मोती, हीरा पन्ना, प्रवाल आदि रत्न सोनेमें जड़े हुए हैं.

नासिका वेसर लाल मोती लटके, आंखडिए अंजन सोहे ।
पांपण चलवे ने पीउजीने पेखे, चतुराइए मन मोहे ॥ ५३

नासिकाके अग्रभागमें नथनी (बुलाक) पहनी हुई है जिसमें लाल मोती लटक रहा है. आँखोंमें काजल शोभा दे रही है. अपनी पलकोंको मधुररूपसे मटकती हुई वे अपने प्रियतमको देखतीं हैं तथा इस चातुर्यके द्वारा प्रियतम (श्री राजजी) का मन मोह लेतीं हैं.

नयणां चपल अति अणियालां, अने रेखा सोभित मांहे लाल ।
बेहुगमां भ्रकुटीनी सोभा, टीलडी ते मध्य गुलाल ॥ ५४

उनकी आँखें नुकीली और चपल हैं. इनमें लाल रेखाएँ शोभायमान हैं. दोनों आँखों ऊपर स्थित भौहोंकी शोभा निराली ही है. ललाटके मध्यभागमें लाल गुलाबी विन्दी दिखाई देती है.

मारा साथ सुणो एक वातडी, आ सरूप ते केम वरणवाय ।
एक भूषणतणी जो भांत तमे जुओ, तो आणे देह जीव न खमाय ॥ ५५

हे ब्रह्मात्माओ ! एक बात सुनिए ! श्रीश्यामाजीके लावण्य और माधुर्यपूर्ण स्वरूपका वर्णन कैसे करूँ ? अरे, एक आभूषणकी शोभाकी झाँकी ही दिखाई दे तो इस देहमें जीव रह नहीं पाएगा. ?

एक वेसर उपर लाल ज दीसे, ते लालकनो न लाभे पार ।
जेटला मांहें मीट फरी वले, एटले दीसे झलकार ॥ ५६

नथनी पर सुशोभित हुए लाल रत्नकी दृश्यमान लालिमा अपरिमित है. जहाँ तक दृष्टि पहुँचती है वहाँ पर सर्वत्र लालिमा झलकती हुई दिखाई देती है.

खीटलडी जडाव भली पेरे, मांहे लाल हीरा सुचंग ।
माणक मोती नीला पांना, मांहे पांच वानीनां नंग ॥ ५७

कानमें जो ''खीटलड़ी'' आभूषण पहना हुआ है उसमें बड़ी चारुतासे अनेक

रत्न जड़े हुए हैं. उनके बीचमें लाल रत्न तथा हीरा सुन्दरता बढ़ा रहे हैं. उनमें माणिक्य, मोती, नीलमणि, पन्ना आदि पाँच प्रकारके रत्न जड़े हुए हैं.

करण लवने जे सोभा धरे, उपर साडीनी कोरे ।
सणगटडा मांहे पीउजीने पेखे, आडी द्रष्टे हेरे ॥ ५८

कानके पीछेका खाली भाग (कनपटी) अत्यन्त शोभा दे रहा है. उसके ऊपर साड़ीकी किनार सुशोभित है. श्रीश्यामाजी घूँघटके अन्दरसे अपने प्रियतमको तिरछी दृष्टिसे निहार लेती हैं.

निलवट वेणा चोकडो, पांच मोती तिहां सोभे ।
लाल पाच कुंदन मांहें सोभित, जोई जोईने जीव थोभे ॥ ५९

ललाटके ऊपर टीका लगा हुआ है. इस टीकेमें पाँच मोती झलक रहे हैं. लाल-प्रवाल तथा पाच रत्न सोनेमें जड़ित होकर शोभायमान हैं. इसे देखकर जीव उसमें स्थिर हो जाता है.

पटली सामी छ फूली सोभे, मध्य सेंदुरनी रेखे ।
बेहुगमां मोती सर सोभे, इन्द्रावती खांत करी पेखे ॥ ६०

मस्तक पर माँगके दोनों ओर केशोंको दो पङ्क्तियोंमें सम्हारा गया है. सामनेसे देखने पर यहाँ छ फूल सुशोभित लगते हैं. दोनों ओर तीन-तीन फूल और बीचमें लाल सिन्दूरसे रची हुई माँग है. दोनों ओर मोतीकी मालाएँ लटक रहीं हैं. इन्द्रावती इस अलौकिक शोभाको अति चाहसे देख रही है.

चार फूली ते फरती दीसे, बे फूली अणियाली ।
मध्य लाल मोती फरतां पांना, ए जुगत क्यांहे न भाली ॥ ६१

इस माँगमें चारों ओर चार गोलाकार फूल आभूषणके रूपमें हैं. दो फूल नुकीले दिखाई देते हैं. बीचमें लाल मोती हैं और उनके चारों ओर पन्ना नामके रत्न हैं. इस प्रकारकी शोभा और सुन्दरता अन्यत्र कहीं नहीं दिखाई देती है.

राखलडीमां रतन नंग झलके, हीरा पांना बेहु भांत ।
माणक मोती फरतां दीसे, वेण चुए गूंथी अख्यात ॥ ६२

राखड़ी नामक आभूषणमें रत्न झलक रहे हैं और दोनों ओर हीरा तथा पन्ना शोभायमान हैं. उनमें वर्तुलाकार जड़े हुए माणिक, मोती चारों ओर घूमते हों ऐसा लगता है. चोटी सुगन्धित द्रव्य डालकर गूँथी गई है. इसमें कहीं किसी भी प्रकारकी कमी दिखाई नहीं देती.

पांच रंगना पांचे फुमक, सोहे मूल वेणने बंध ।
गोफणडे फुमक जे दीसे, तेहनो स्याम कसबी रंग ॥ ६३

श्रीश्यामाजीकी चोटी पर पाँच रङ्गके फुँदने हैं जो वेणीके मूलमें शोभा दे रहे हैं. चोटी गूँथनेमें जिन फुँदनोंका उपयोग हुआ है वे श्याम और कुसुम्भी रङ्गके हैं.

गोफणडे घूंघरडी फरती, अने बोलंती रसाल ।
फरतां पांना दोरी बंध सोभे, वेण लेहेके जेम व्याल ॥ ६४

वेणीबन्धमें सुन्दर घुँघुरियाँ लगी हुई हैं, वे मधुर स्वरसे झनकती हैं. जिस डोरसे चोटी बँधी हुई है उस पर चारों ओर पन्ना रत्न शोभा दे रहे हैं. यह चोटी काले नागकी तरह बलखाती है.

मुख मांहें बीड़ी तंबोलनी, मंद मरकलडो सोभे ।
इन्द्रावती नयणेसुं निरखे, अति घणुं करीने लोभे ॥ ६५

मुखमें ताम्बूलका बीड़ा है. मन्द-मन्द हास्य उनके मुखकी शोभा बढ़ा रहा है. इन्द्रावती मुखारविन्दकी शोभा अपनी आँखोंसे निरख रही है और हृदयमें उल्लास धारण कर इस लोभमें पड़ी हुई है कि इसे देखती ही रहूँ.

मुखडुं निहाले अंगूठीमां, सोभा धरे सरवा अंग ।
सणगटडो सिणगार सोभावे, श्री कृस्न जी केरी अरधंग ॥ ६६

श्रीश्यामाजी जब अंगूठीमें अपना मुख देखतीं हैं तो उनके सब अंग उल्लसित

और विशेष शोभासे सम्पन्न हो जाते हैं, श्रीकृष्णजीकी अर्धांगना श्रीश्यामाजी जब घूँघट निकालतीं हैं तो उनका शृङ्गार विशेष रूपसे देदीप्यमान हो उठता है.

मुखथी वाणी जे ओचरे, कांई ए स्वर अति रसाल ।
एक मात्र कणका जो रुदे आवे, तो थाय फेरो सुफल संसार ॥ ६७

श्रीश्यामाजीके मुखारविन्दसे जो वाणी निकलती है वह अत्यन्त सुमधुर और रसपूर्ण है. यह स्वर और शृङ्गारकी शोभा क्षण भरके लिए भी यदि हमारे हृदयमें स्थिर हो जाए तो इस संसारमें हमारा आगमन सफल हो जाए.

सुखम सरूप ने उनमद अंगे, केणी पेरे ए वरणवाय ।
मारी बुध सारुं हुं वरणवुं, इन्द्रावती लागे पाय ॥ ६८

श्रीश्यामाजीका स्वरूप चिन्मय है, उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें मद भरा हुआ है. उसका वर्णन किस प्रकार किया जाए ? तथापि मैंने अपनी बुद्धिके अनुसार वर्णन किया है. इस प्रकार इन्द्रावती श्रीश्यामाजीके चरणोंमें वन्दना करती है.

पांउ भरे एक भांतसुं, स्यामाजी सोभे एणी चाल ।
जीव निरखीने नेत्र ठरे, इन्द्रावती लिए रंग लाल ॥ ६९

श्रीश्यामाजी अनुपम और विशेष संतुलित चालसे चल रहीं हैं. उनकी यह चाल अत्यन्त सुन्दर है. इस शोभाको देखकर आँखोंको शीतलता प्राप्त होती है. इन्द्रावती उत्साह और प्रेमकी लालिमासे लाल हो रही है.

ए सिणगार जोइए ज्यारे निरखी, त्यारे सुं करे मायानो पास ।
साथ सकल तमे जो जो विचारी, वली स्यामा ते आव्या साख्यात ॥ ७०

इस शृङ्गारकी शोभाको जब अन्तःदृष्टिसे देखते हैं तो मायाका प्रभाव क्या करेगा. आप समस्त विचार कर लें श्रीश्यामाजी पुनः सद्गुरुश्री देवचन्द्रजीके रूपमें साक्षात् प्रकट हुईं हैं.

सुन्दर सोभा स्यामाजी केरी, निरखी निरखी ने निरखुंजी ।
अंतर टालीने एक थयां, इन्द्रावती कहे हुं हरखुंजी ॥ ७१

श्रीश्यामाजीके स्वरूपकी सुन्दर शोभा इन्द्रावती वारंवार देखना चाहती है.

इन्द्रावती कहती है, श्रीश्यामाजी मायाके आवरणको हटाकर मेरे हृदयमें एकाकार हो गईं हैं. इसलिए मैं हर्षित होती हूँ.

श्री साथनो सिणगार - राग धन्यासरी

जोगमायानो देह धरीने, श्री श्यामाजी थयां तैयार ।
ततखिण तिहां तेणे ठामे, मारे साथे कीधो सिणगार ॥ १

[श्यामसुन्दर श्रीकृष्णने ब्रह्मात्माओं (गोपियों) के साथ रास लीला करनेके लिए योगमायाके मण्डलकी रचना की जिसमें] योगमायाके शृङ्गारपूर्ण देह धारण कर श्रीश्यामाजी रास लीलाके लिए तैयार हो गईं. उसी समय उसी स्थान पर हम सखियों ने भी मिलकर योगमायाका अलौकिक शृङ्गार धारण किया.

सोभा सागर साथ तणी, सखी केणी पेरे ए वरणवाय ।
हुं रे अबूझ कांई घणुं नव लहुं, एनुं निरमाण केम करी थाय ॥ २

योगमायामें सखियोंके शृङ्गारकी शोभा सागरके समान है. उसका वर्णन किस प्रकार किया जाए ? मैं अज्ञानी इस विशाल शोभाको हृदयङ्गम नहीं कर सकती फिर उसका निरूपण कैसे होगा ?

कोटान कोट जाणे सूरज उदया, ब्रह्मांड न माय झलकार ।
प्रघल पूर जाणे सायर उलट्यो, एक रस थई सरवे नार ॥ ३

सखियोंके दिव्य शृङ्गारको देखने पर ऐसा लगता है कि करोड़ों सूर्य उदित हुए हैं और उनका प्रकाश योगमायाके सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमें भी नहीं समा पा रहा है. ऐसा प्रतीत होता है कि तेजोमय समुद्र उमड़ रहा है और उस अखण्ड प्रकाशमें सब सखियाँ (ब्रह्माङ्गनाएँ) एक रस हो गई हैं.

एक नखतणी जो जोत तमे जुओ, तेमां कै ने सूरज ढंपाय ।
केम करी सोभा वरणवुं रे सखियो, मारो सबद न पहोंचे त्यांय ॥ ४

उनके एक नखकी तेजोमय ज्योतिको तुम देखो. उस प्रकाशके सामने

असंख्य सूर्योंका प्रकाश भी फीका दिखाई देता है. इस शोभाका वर्णन किस प्रकार किया जाए ? क्योंकि उस शब्दातीत भूमिकामें मेरा एक शब्द भी नहीं पहुँच पाता हैं.

वली गुण जो जो तमे नखतणां, हुं तेहनो ते कहुं विचार ।
सूरज द्रष्टे ताप ज थाय, आणे अंग उपजे करार ॥ ५

फिर तुम श्रीश्यामाजीके शोभायमान नखोंकी ज्योतिको देखो. मैं उन नखोंकी विशेषता दर्शाती हूँ. सूर्यके प्रकाशमें ताप होता है परन्तु श्रीश्यामाजीके नखोंकी ज्योतिसे शरीरके अङ्गोंको शीतलता मिलती है.

साथतणी रे साडियुं ज्यारे जोइए, तेमां रंग दीसे अपार ।
अनेक विधनां जवेर ज दीसे, करे ते अति झलकार ॥ ६

सखियों की साड़ियों पर जब दृष्टिपात करते हैं तो उनमें अनेक रंग दिखाई देते हैं. इतना ही नहीं उनमें भाँति-भाँतिके रत्न ही दिखाई दे रहे हैं और वे अत्यन्त चमक रहे हैं.

तेवा सरूप ने तेवा भूषण, तेज तणां अंबार ।
ए अजवालुं ज्यारे जीव जुए, त्यारे सुं करे संसार ॥ ७

जैसे दिव्य स्वरूप हैं वैसे ही आभूषण भी दिव्य तेजोमय हैं. सर्वत्र तेजका भण्डार दिखाई देता है. ऐसे दिव्य प्रकाशको जब जीव देख लेता है तब उसे संसारका तुच्छ आकर्षण कैसे आकर्षित कर सकता है ?

मांहों मांहें वालाजीनी वातो, बीजो चितमां नथी उचार ।
ततखिण वेण सांभलतां वल्लभ, खिण नव लागी वार ॥ ८

सखियाँ परस्पर प्रियतम धनीकी ही बातें करतीं हैं. उनके हृदयमें अन्य विचार उत्पन्न ही नहीं होते. प्रियतम श्रीश्यामसुन्दरकी वंशीका नाद सुनकर संसारका त्याग करनेमें उन्हें एक क्षणका भी विलम्ब नहीं हुआ.

मन उमंग वालाजीसुं रमवा, आयत अति घणी थाय ।
आनन्द मांहें अति उजाय, धरणी न लागे पाय ॥ ९

सखियाँ जब वंशीनाद सुनकर व्रजसे वृन्दावन जा रही थीं तो उनके मनमें श्रीकृष्णके साथ रासलीला करनेकी उत्कट इच्छा थी. इसी आनन्दके उत्साहमें द्रुतगतिसे दौड़ती हुई जा रही थीं. उनके पाँव मानो पृथ्वीको छू ही नहीं रहे थे.

भूषण स्वर सोहामणां, मुख वाणी ते बोले रसाल ।
ए स्वरने ज्यारे श्रवणा दीजे, त्यारे आडो न आवे पंपाल ॥ १०

सखियोंके शृङ्गारके आभूषणोंसे उठने वाली ध्वनि अत्यन्त मधुर है. उनकी वाणी भी रसमय है. इन दोनों स्वरोंको यदि ध्यानपूर्वक सुनें तो यह झूठा संसार हमारे लिए बाधक नहीं बन सकता अर्थात् हम मोहजलमें फँस ही नहीं सकते.

साथ सकल मारा वाला पासे आव्यो, मन आणी उलास ।
विविध पेरे वालाजीसुं रमवा, चितमां नथी मायानो पास ॥ ११

इस प्रकार शृङ्गारसे सुसज्जित सखियाँ मेरे प्रियतम (श्रीकृष्ण) के पास पहुँची. उनके मनमें उमंग थी कि प्रियतमके साथ विभिन्न प्रकारसे रमण करेंगी. उनके चित्तमें मायाका स्पर्श लवलेश स्पर्श भी नहीं था.

रस भर रंग वालाजीसुं रमवा, उछरंग अंग न माय ।
इन्द्रावती बाई कहे धामना साथने, हुं नमी नमी लागुं पाय ॥ १२

प्रियतम श्रीकृष्णके साथ रसपूर्वक रमण करनेकी इच्छाके कारण सभीके मनमें आनन्द और उल्लास समाता नहीं था. इन्द्रावती सखी कहती है कि परमधामके इन ब्रह्मात्माओं के चरणोंमें मैं झुक-झुककर विनम्रतापूर्वक प्रणाम करती हूँ.

पहेलो सिणगार कीधो मारे वालेजीए, तेहनुं ते वरणवुं लवलेस ।
पछे संवाद वालाजी साथनो, ते मारी बुध सारुं कहेस ॥ १

योगमायाके मण्डलमें प्रियतम श्रीकृष्णने सर्वप्रथम अलौकिक शृङ्गार धारण किया. इन्द्रावती कहती है कि इसका थोड़ा-सा वर्णन करनेके उपरान्त प्रियतम तथा सुन्दरसाथके बीच हुए पारस्परिक प्रेम सम्वादका वर्णन भी मैं अपनी बुद्धिके अनुसार करूँगी.

सोभा रे मारा स्याम तणी, सखी केणी पेरे वरणवुं एह ।
सबदातीत मारा वालाजीनी सोभा, मारी जिभ्या आणी देह ॥ २

हे सखियो ! मेरे श्याम सुन्दर श्री कृष्णकी शोभाका वर्णन किस प्रकार करूँ ? मेरे प्राणाधार प्रियतमकी शोभा शब्दातीत है. (उसका वर्णन करने वाली) मेरीं यह जिह्वा तो मायावी देहका ही भाग है.

चरण तणां अंगूठा कोमल, नख हीरा तणां झलकार ।
रंग तो जोई जोई मोहिए, पासे कोमल आंगलियों सार ॥ ३

श्रीराजजी (श्रीकृष्ण) के चरण कमलका अंगूठा कोमल है तथा उसके नख हीरेकी भाँति तेजस्वी आभासे चमक रहे हैं. चरणोंकी सुन्दरता और रंगको देखकर मन मोहित होता है. उस अंगूठेके पासकी चारों अंगुलियाँ कोमल और श्रेष्ठ हैं.

फणा नसो अने कांकसा, अति रंग घणुं रे सोहाय ।
जीव थकी अलगां नव कीजे, राखिए चरण चित मांय ॥ ४

चरणके आगेका व ऊपरका भाग, चरणकी नसों तथा अंगुलियोंके बीचका भाग ये सभी अत्यन्त मोहक रङ्गके हैं और शोभा दे रहे हैं. इन चरणोंको अपने प्राणोंसे कभी भी अलग न कर उन्हें चित्तमें ही धारण करना चाहिए.

चरण तले पदमनी रेखा, करे ते अति झलकार ।
पानी लांक लाल रंग सोभे, इन्द्रावती निरखे करार ॥ ५

चरणके नीचे के भागमें अर्थात् तलवेमें पद्म (कमल) आकारकी रेखा है.

वह अत्यन्त तेजोमयी हो चमक रही है. चरणोंका पानी (तलका किनार भाग) और लाँक (तलका गहरा भाग) लाल रंगसे शोभायमान हैं. इन्द्रावती इन्हें देखकर अत्यन्त आनन्दित होती है.

टांकन घूंटी ने कांडा कोमल, कांबी कडलां बाजे रसाल ।
घूंघरडी घम घम स्वर पूरे, मांहें झांझर तणो झमकार ॥ ६

चरणोंकी एड़ीके ऊपरका भाग, घूँटी (टखने) और कलाइयाँ अत्यन्त कोमल हैं. इनपर कड़े और नूपुर पहने हुए हैं, जो रसमय एवं मधुर ध्वनि करते हैं. उनमें लगी हुई घुँघरियाँ धमक-धमक ध्वनि द्वारा झनझना रहीं हैं.

कांबी कडलां जुगते जडियां, सात बानी नंग सार ।
लाल पांना हीरा माणक नीलवी, कुंदनमां मोती झलकार ॥ ७

उन्होंने पहने हुए नुपूर और कड़ेमें सात प्रकारके सुन्दर रत्न बड़ी कुशलतासे जड़े गए हैं. सोनेमें जड़े हुए लाल, पन्ना, हीरा, माणिक्य, नीलमणि और मोती ये सब प्रकाशमान हो रहे हैं.

झांझरियां जडाव जुगतनां, करकरियां सोभंत ।
घूंघरडी करडा जडतरमां, झलहल हेम करंत ॥ ८

पाँवमें पहनी हुई झाँझरी भूषण बड़ी कुशलतासे जड़ी हुई है. उनके अन्तभागमें कुरेदे हुए सोनेके छोटे-छोटे दाने सुशोभित हो रहे हैं तथा सोनेमें लगी हुई घुँघरियाँ और रत्न कणिकाएँ जगमगा रहीं हैं.

कणक तणां वाला मांहें गठिया, निरमल नाका झलकंत ।
झांझरियामां जुगते जडियां, भली पेरे मांहें भलंत ॥ ९

सोनेके तारमें घुँघरी पिरोई गई है. उनके छिद्र अत्यन्त चमक रहे हैं. विशेष युक्ति द्वारा उन्हें इस प्रकार जड़ा गया है कि परस्पर मेल सुन्दर लगता है.

पींडी उपर पायचा, ने झीणी कुरली झलवार ।
केसरिए रंग सूथणी, इन्द्रावती निरखे करार ॥ १०

प्रियतम श्रीकृष्णके पाँवकी पिंडलियों पर धारण किए हुए पायचाभूषणकी

भाँति नीचे वाले भाग पर छोटी-छोटी बूटियाँ काढ़ी गई हैं. सुथनी (पायजामा) केसरी रङ्गकी है. इन्द्रावती इसे देखकर आनन्दित हो रही है.

मोहोलिए मोती ने वली नेफे, वेल टांकी बेहु भांत ।
नाडी मांहें नव रंग दीसे, माणकदे जुए करी खांत ॥ ११

सुथनीकी मोहरी पर मोती टाँके हुए हैं और डोरीके बन्धके ऊपर तथा दोनों ओर दो प्रकारकी बेलोंकी चित्रकारी की हुई है. इस सुथनीके बन्धके डोरोंमें नवरंग देदीप्यमान हैं. माणिकदे (इन्द्रावती) उन्हें उत्साह पूर्वक देख रही है.

सेत स्याम ने सणिए सेन्दुरिए, कखुवर बंने कोर ।
नीलो पीलो जांबू गुलालियो, ए सोभा अति जोर ॥ १२

सुथनीके डोरेके नौ रंगमें सफेद, काला, खाकी, सिन्दूरी, नीला, पीला, जामुनी और गुलाबी रंग हैं और दोनों छोर कुसुम्भी (कुमकुम) जैसे लाल रंगके हैं. ये सब रंग अति शोभा दे रहे हैं.

पीली पटोली पहेरी एक जुगते, मांहे विविध पेरे जडाव ।
जीव तणुं जीवन ज्यारे जोइए, त्यारे नव मूकाए लगार ॥ १३

पीला पीताम्बर बड़ी युक्तिपूर्वक पहना गया है. इसमें भी अनेक प्रकारके रत्न जड़े हुए हैं. प्राणोंके आधार श्रीश्यामसुन्दरके इस शृङ्गारकी शोभा जब हम देखते हैं तो एक पलके लिए भी उसे दृष्टिसे दूर करनेका मन नहीं होता है.

कोरें वेल जडाव जुगतनी, मध्य जडावनां फूल ।
जडाव झलहल जोर करे, चीर कानियानी कोरे मस्तूल ॥ १४

पीताम्बरके किनारे पर बेल इत्यादिकी चित्रकारी अत्यन्त युक्तिपूर्वक की गई है. बीच-बीचमें सुन्दर फूल और बूटे बने हैं. यह कशीदाकारी अत्यन्त शोभा देती है. कपड़ेके पीछे किनारे पर रेशमके तारसे कशीदा काढ़ा गया है.

माणक मोती ने नीली चुनी, फूलवेल मांहें झलकंत ।
सोभा मारा स्यामजीनी जोई जोई जोइए, मारी तेणे रे काया ठरंत ॥ १५

फूल बेलियोंके मध्यमें जड़े हुए माणिक्य, मोती, नीलमणि, और सोनेकी

टिकियाँ झिलमिला रहीं हैं. हमारे श्यामसुन्दरके शृङ्गारकी यह शोभा देखते ही बनती है अर्थात् देखनेसे जी नहीं भरता है. उसे देखकर मेरे अंग शीतल हो जाते हैं.

नीलो ने कांई पीलो दीसे, कणा तणो रंग जेह ।
कानी छेडा जुजवी जुगते, लवलेस कहुं हुं तेह ॥ १६

पटुकेका रंग नीला तथा पीला दिखाई देता है तथा उनके दोनों छोर कुशलता पूर्वक बनकर शोभायमान हैं इसका थोड़ा-सा ही वर्णन कर रहा हूँ.

छेडे हेम हीरा ने पुखराज पांना, कोरे माणक नीलवी ने मोती ।
कानी छेडा जुजवी जुगतें, इन्द्रावती खांत करी जोती ॥ १७

इस पटुकेके पल्लू पर सोना, हीरा, पुखराज और पन्ना नामक रत्न लगे हुए हैं. किनारेके छोर पर माणिक्य, नीलम और मोती जड़े हुए हैं. यह पल्लू और उसके छोर बड़ी कुशलतासे बने हुए हैं. इन्द्रावती इसे बड़ी चाहसे देख रही है.

अंगनो रंग कह्यो नव जाय, जाणे तेज तणो अंबार ।
पेट पांसा उर कंठ निरखतां, इन्द्रावती पामे करार ॥ १८

श्रीराजजीके अंगोंका रंग अवर्णनीय है. ऐसा आभास होता है कि यह तेजका पुञ्ज है. पेट, पसलियाँ, छाती और कण्ठकी सुकुमार चारुताको देखकर इन्द्रावती पुलकित होती है.

रतन हीराना बे हार दीसे, त्रीजो हेम तणो जडाव ।
चोथो हार मोती निरमलनो, करे जुजवी जुगत झलकार ॥ १९

वक्षस्थल पर हीरे और रत्नकी दो मालाएँ दिखाई देतीं हैं. तीसरा हार सोनेमें जड़ाव (नक्काशी) किया हुआ है. चौथी माला निर्मल मोतियोंसे बनाई गई है. ये सभी मालाएँ भिन्न भिन्न विशिष्टताओंसे प्रकाश फैला रहीं हैं.

उतरी जडाव सर बे सोभंती, चुनी राती नीली जुगत ।
निरखी निरखीने नेत्र ठरे, पण केमे न पामिए त्रपत ॥ २०

उतरी हारमें रत्नोंसे जड़ित दो पङ्क्तियाँ सुशोभित हैं. वे अनुपम शोभा बिखेर

रहीं हैं. इनमें लाल और नीले रंगके रत्नोंकी टिकियाँ युक्तिपूर्वक जड़ी गई हैं. इनकी शोभा देखकर आँखें शीतल हो जातीं हैं किन्तु उन्हें तृप्ति नहीं मिलती.

रंग सेंदुरिए पछेडी, अने मांहें कसबनी भांत ।
छेडे तार ने कसबी कोरे, इन्द्रावती जुए करी खांत ॥ २१

श्रीकृष्णजीने सिन्दूरिया रंगका उत्तरीय गलेमें डाला हुआ है. जिसमें अनेक रंगके कशीदे काढ़े गए हैं. उत्तरीयके दोनों छोरों पर कशीदाकारीके डोरे बुने हुए हैं. इन्द्रावती उसे बड़ी चाहसे देख रही है.

अंग उपर आणी बने चोकडी, छेडा बंने पासे लटकंत ।
नवलो भेष लीधो एक भांतनो, जोई जोईने जीव अटकंत ॥ २२

प्रियतम श्रीकृष्णजीकी छाती पर उत्तरीय धारण करने से जो चतुष्कोण बनता है वैसा ही चतुष्कोण पीठके भागमें भी बना हुआ है और उसके दोनों छोर दोनों ओर लटक रहे हैं. इस प्रकार प्रियतमने एक नूतन भेष धारण किया है. उसकी सुन्दरता और शोभाको देखते ही अन्तरात्मा स्थिर हो जाती है.

कोमल कर एक जुई रे जुगतना, जो वली जोइए रंग ।
झलकत नख अंगूठा आंगलियों, पोहोंचा कलाई पतंग ॥ २३

प्रियतमके कोमल हाथ एक विशेष और अलग ही प्रकारकी सुन्दरतासे पूर्ण हैं. हस्तकमलका रंग देखें तो उनके अंगूठे तथा अंगुलियोंके नख प्रभासे चमक रहे हैं और हाथका पहुँचा (हथेलीका पृष्ठभाग) और कलाईका रंग भी लाल है.

झीणी रेखा हथेली आंगलिए, सात वीटी सोभंत ।
त्रण वीटी उपर नंग दीसे, अति घणुं ते झलकंत ॥ २४

हाथकी कोमल हथेलीमें बारीक रेखाएँ हैं. अंगुलियोंमें सात अंगूठियाँ शोभायमान हैं. उनमेंसे तीन अंगूठियोंमें रत्न जड़े हुए हैं जो अत्यन्त प्रकाशमान हैं और ज्योतिके समान चमकते हैं.

अंगूठिए लाल चुनीनी जडतर, बे वीटी हीरा रतन ।
एक वीटी ने नीलुं पानुं, बीजा बांकडा वेलिया कंचन ॥ २५

अंगूठीमें लालके रत्न जड़े हुए हैं. दो अंगूठियाँ हीरे और रत्नोंकी हैं. एक अंगूठीमें नीलम और पन्ना रत्न जड़े हुए हैं, दूसरी अंगूठी सोनेके तारोंसे बनी हुई बेलोंके कारण सुन्दर दिखाई देती है.

कोमल कांडे कडली सोभे, नीली जडित अति सार ।
कडली पासे पोहोंची घणी ऊंची, करे ते अति झलकार ॥ २६

कोमल कलाई पर कड़ा धारण किया हुआ है, जिसमें उत्तम प्रकारके नीलम जडायमान हैं. इस कड़ेके पास कलाईके ऊपर पहुँची नामक आभूषण धारण किया हुआ है. इसमें रत्नोंकी तेजस्वी शोभा अत्यन्त झलक रही है.

मध्य माणक ने फरतां मोती, पाच तणो नीलास ।
किरण ज्यारे उठतां जोइए, त्यारे जोत न माय आकास ॥ २७

इस पहुँचीके मध्य भागमें माणिक्य रत्न जड़ा हुआ है, और उसके चारों ओर मोती जड़े हुए हैं. वहाँ हरितमणि (पाच) का हरापन झलकता है. इस रत्नसे ऊठती हुई किरणोंको देखिए, वे आकाशमें समा नहीं पा रहीं हैं.

कोमल कोणी चंदन अंग चरचित, मणि जडित बाजुबंध ।
कंचन कसबी फुमक बेहु लटके, सुं कहुं सोभा सनंध ॥ २८

कोमल कुहनियोंके ऊपर स्थित भुजाओं पर चन्दनका लेपन किया हुआ है. इनके ऊपर मणिजड़ित बाजूबन्ध पहने हुए हैं. उसमें सोनेके तार और कशीदेके गुच्छे लटक रहे हैं. इस शोभाका वर्णन किस प्रकार करूँ ?

जोइए मुखारविंद गाल बंने गमां, तेज कह्युं नव जाय ।
अधखिण जो अलगा रहिए, त्यारे चितडां उपापला थाय ॥ २९

मुख कमलके दोनों गालोंकी तेजस्वी आभाका वर्णन नहीं हो सकता है. आधेक्षणके लिए भी यदि यह सुन्दर छवि दिखाई नहीं देती है तो चित्तमें व्याकुलता छा जाती है.

हरवटी सोहे हंसत मुख दीसे, वली जोइए अधुरनो रंग ।
दंत जाणे दाडिमनी कलियो, अधुर परवालीनो भंग ॥ ३०

हँसते हुए मुखारविन्दमें चिबुक (ठोडी) की शोभा अनुपम है. फिर होठोंका रङ्ग देखें तो उनके बीचमें चमकते हुए दाँत अनारकी कलीके समान दृष्टिगोचर होते हैं. होठोंकी लाली प्रवालकी कान्तिको भी मलिन करती है.

मुख उपर मोती निरमल लटके, वेसर उपर लाल ।
काने करण फूल जे सोभा धरे, ते तां झलके मांहें गाल ॥ ३१

नासिका पर लाल रत्नका नासा-भूषण पहना हुआ है. जिसके ऊपर निर्मल मोती लटका हुआ है. कानोंमें धारण किए हुए कर्णफूलकी शोभा अद्वितीय है और उसकी आभा गालोंपर झलक रही है.

करण फूल छे अति घणुं ऊंचुं, राती नीली चुनी सार ।
निरखी निरखी जीव निरांते, मांहें मोतीडा करे झलकार ॥ ३२

कानोंके कर्णफूल अत्यन्त अमूल्य और उच्चकोटिके हैं. उनमें प्रवाल और नीलम रत्नोंकी उत्तम छोटी छोटी कणिकाएँ जड़ी हुई हैं. उनमें स्थित मोतियोंकी चमक अत्यन्त कमनीय है. इस शोभा और सुन्दरताको देखकर जीवको परम शान्ति मिलती है.

खीटलडी वालाजी केरी, जीव करे जोयानी खांत ।
माणक मोती हीरा पुखराज, कुंदन मांहें जडिया भांत ॥ ३३

प्रियतम श्रीकृष्णजीके कानोंके पृष्ठ भागोंमें और कानोंके मध्यभागमें खिटलड़ी नामका आभूषण पहना हुआ है, जिसे देखनेकी इच्छा सदैव रहा करती है. उसमें माणिक्य, मोती, हीरा, पुखराज आदि रत्न सोनेमें युक्तिपूर्वक जड़े हुए हैं.

आंखडली अणियाली सोभे, मध्य रेखा छे लाल ।
निरखत नयण कोडामणां, जीवने ताणी ग्रहे ततकाल ॥ ३४

आँखें अत्यन्त सुन्दर और नुकीली होनेके कारण शोभा दे रही हैं. इन आखोंमें लाल रेखाएँ हैं. ये मनोहर नयन तत्क्षण मेरे जीवको अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं.

मीठी पांपण चलवे एक भांते, तारे तेज अपार ।
बेहुगमां भ्रकुटीनी सोभा, इन्द्रावती निरखे करार ॥ ३५

प्रियतम श्रीकृष्ण पलकें खोलकर जब कटाक्ष करते हैं तो उनके नयन युगलसे अपार तेज निकलता है. आँखोंकी दोनों भौहोंकी शोभा देखकर इन्द्रावती परम आनन्दका अनुभव करती है.

निलवट सोभे तिलकनी रेखा, नीली पीली गुलाल ।
बेहुगमां सुन्दर ने सोभे, रेखा मध्य बिंदका लाल ॥ ३६

ललाटमें तिलककी रेखा शोभायमान है. यह नीले, पीले और गुलाल रंगोंसे बनी हुई है. यह नासिकाके दोनों तरफकी शोभामें अभिवृद्धि करती है. इस रेखाके बीचमें लाल विन्दी रचाई गई है.

मस्तक मुकट सोहामणो, कांई ए सोभा अति जोर ।
लाल सेत ने नीली पीली, दोरी सोभित चारे कोर ॥ ३७

मस्तक पर सुन्दर मुकुट शोभायमान है. उसकी शोभा अनुपम है. उस मुकुटमें चारों ओर लाल, सफेद, नीले तथा पीले रंगकी डोरियाँ सुशोभित हैं.

ए उपर जव दाणानी सोभा, एह जुगत अद्भुत ।
ते उपर वली फूलोनी जडतर, तेना केम करी वरणवुं रूप ॥ ३८

मुकुटके किनार पर जौके दाने जैसी नक्काशी शोभायमान है. इसके निर्माणका चातुर्य भी अद्भुत है. इसके ऊपर फूल भी जड़े हुए हैं. इसके रूप और आकारकी शोभाका वर्णन किस प्रकार करूँ ?

बीजा अनेक विधना फूल दोरी बंध, करे जुजवी जुगत झलकार ।
माणक मोती हीरा पुखराज, पिरोजा पाना पांचो सार ॥ ३९

मुकुटके ऊपर विविध प्रकारकी पुष्पलताएँ पंक्तिबद्ध हैं. वे अद्भुत ढंगसे झिलमिलाती हुई प्रकाश देतीं हैं. यह प्रकाश माणिक्य, मोती, हीरा, पुखराज, पिरोजा, पन्ना तथा पाच इन श्रेष्ठ रत्नोंकी मिश्रित शोभासे युक्त है.

लाल लसणियां नीलवी गोमादिक, साढ सोलुं कंचन ।
फूल पांखडियों मणि जवेरनी, मध्य जड्यां छे रतन ॥ ४०

माणिक्य (लाल), वैदूर्यमणि (लहसुनिया), नीलम, गोमेद आदि रत्न शुद्ध स्वर्ण (कंचन) में जड़े हुए हैं. फूल और पंखुड़ियाँ मणि और रत्नसे बनाए हुए हैं और उनके बीचमें रत्न जड़े हुए हैं.

मुकट उपर ऊभी जवेरोनी हारो, तेमां रंग दीसे अपार ।
अनेक विधनी किरण ज ऊठे, ते तां ब्रह्मांड न माय झलकार ॥ ४१

मुकुटके ऊपर जड़े हुए रत्नादि पंक्तिबद्ध खड़े हैं. उनमें अपरिमित रंग दिखाई देता है. इनमें भाँति-भाँतिके रत्नोंसे तेजपूर्ण किरणें निकलतीं हैं. उसका प्रकाश योगमायाके ब्रह्माण्डमें भी समाता नहीं है.

चार हारनां चारे फुमक, तेहना जुजवी जुगतना रंग ।
लाखी लिबोई ने स्याम सेत, सुन्दर ने ए सोभंत ॥ ४२

प्रियतमके कण्ठमें चार हार शोभायमान हैं. उन चारों हारोंके चार फुँदने लाल, केशरी, श्याम और श्वेत हैं, जो अनुपम शोभा दे रहे हैं.

वेण गूंथी एक नवल भांतनी, गोफणडे विविध जडाव ।
फरती फरती घूंघरडी, ने बोलंती रसाल ॥ ४३

प्रियतम श्यामसुन्दरकी केशराशि नूतन ढँगसे गूँथी हुई है. इस वेणीके अन्तभागमें लटके हुए आभूषणोंमें विभिन्न प्रकारके रत्न जड़े हुए हैं. इन आभूषणोंके चारों ओर घुँघरियाँ लगी हुई हैं, जो मधुर और रसीले स्वरसे बोलतीं हैं.

गोफणडे फुमक जे दीसे, तेनो लाल कसबी रंग ।
जडाव मांहें माणक ने मोती, पाना पुखराज नंग ॥ ४४

उस आभूषणके साथ जो फूमक (फुँदने) बँधे हैं, उनमें रंगोंका वैविध्य है और उसका रंग लाल है. उसमें माणिक्य, मोती, पन्ना और पुखराज जैसे रत्न जड़ायमान हैं.

वांसा उपर वेण लहेकती, सोभा ते वरणवी न जाय ।
खुसबोए मांहें रंग भीनो, बीडी तंबोल मुख मांय ॥ ४५

पीठके ऊपर लहरा रही केश राशिकी शोभा अद्वितीय है. उसका वर्णन नहीं हो सकता है. वह एक विशेष प्रकारकी सुगन्धिसे भरी हुई है. मुखारविन्दमें पानका बीड़ा है.

नवल वेष ल्याव्या एक भांतनो, कसवटिए वांसली लाल ।
अधुर धरीने ज्यारे वेण वगाडे, त्यारे चितडां हरे ततकाल ॥ ४६

प्रियतम श्रीकृष्णने आज नवीन वेश धारण किया है. उनकी कमर पर बँधी हुई पिछौरीमें लाल वंशी लटकाई हुई है. जब वे वंशीको होठोंसे लगाकर बजाने लगते हैं तो तुरन्त ही हमारे चित्तको हर लेते हैं.

वेण तणी विगत कहुं तमने, कोरे कांगरी जडाव ।
मोहोवड नीला मध्य लाल, छेडे आसमानी रंग सोहाय ॥ ४७

अब मैं आपके समक्ष वंशीका वर्णन कर रही हूँ. वंशीके किनारे पर काँगरी लगी हुई है. उसके मुखके पास नीलम, बीचमें लाल और अन्त भाग में नीले रंगके रत्न लगे हुए हैं.

वस्तर वरणव्यां सबद मांहें सखियो, वली वरणवी भूषणनी भांत ।
रेसम हेम कह्यां में जवेरनां, पण ए छे वसेक कोय धात ॥ ४८

हे सखियो ! मैंने प्रियतमके वस्त्रोंका वर्णन अपने शब्दोंमें किया है. तदुपरान्त आभूषणोंका वर्णन भी विविध प्रकारसे किया. मैंने रेशम, सुवर्ण और रत्न आदिकी जिन उपमाओंका उपयोग किया है वे इन सांसारिक वस्तुओंके लिए ही उपयुक्त शब्द हैं. वास्तवमें वे तो विशिष्ट प्रकारके अपूर्व धातु तथा रत्न हैं.

सज थयां सिणगार करीने, रास रमवानुं मन मांय ।
साथ सकल मारा पीउ पासे आव्यो, इन्द्रावती लागे पाय ॥ ४९

शृङ्गार धारण कर सखियाँ तैयार हो गईं. उनके मनमें रास रमणकी तीव्र उत्कण्ठा है. समस्त सखियाँ मेरे धामधनीके पास आईं, अब इन्द्रावती

प्रियतमके चरणोंमें दण्डवत प्रणाम करती है.

दई प्रदखिणा अति घणी, साथे कीधां दंडवत परणाम ।
हवे करसुं रामत रंग तणी, अने भाजसुं हैडानी हाम ॥ ५०

प्रियतम श्रीकृष्णकी अनेक परिक्रमाएँ करनेके बाद सुन्दरसाथने दण्डवत् प्रणाम किया और कहने लगे कि अब आनन्दपूर्वक रङ्गीली रामतें खेलेंगे और हृदयमें आनन्दकी लहरें उछालकर अभिलाषाओंको पूर्ण करेंगे.

उथला - राग मेवाडो

वालैयो वाणी एम ओचरेजी, कहे सांभलजो सहु साथ ।
पतिव्रता अस्त्री जे होय, ते तो नव मूके घर रात ।
रे सखियो सांभलो ॥ (टेक) ॥ १

रास मण्डलमें आई हुई सखियोंको श्रीकृष्णणजी इस प्रकार कहने लगे, हे सखियो ! ध्यानसे सुनो, पतिव्रता स्त्री इस प्रकार रातके समय घर छोड़कर बाहर नहीं जाती.

तमे साथ सकल मली सांभलो, हुं वचन कहुं निरधारजी ।
तमे वेण मारो श्रवणे सुण्यो, घर मूक्यां ऊभा वारजी ॥ २

श्रीकृष्णजी कहते हैं, तुम सब मिलकर सुनो मैं कुछ आवश्यक सद्वचन कहता हूँ. जैसे ही तुम्हें मेरी वंशीकी ध्वनि सुनाई दी तुम सभी उसी अवस्थामें तत्काल घर छोड़कर निकल पड़ी हो.

कुसल छे कांई व्रजमांजी, केम आवियों आणी वेरजी ।
उतावलियों उजाणियोंजी, कांई मूक्यां कारज घेरजी ॥ ३

व्रजमें सब प्रकारसे कुशल-मङ्गल तो है न ? सन्ध्याके समय तुम सभी अपना-अपना काम-काज त्यागकर जल्दी-जल्दी घर छोड़कर कैसे आ गईं ?

किहे रे परियाणे तमे निसरयांजी, कांई जोवा वृन्दावन ।
जोयुं वन रलियामणुं, कांई तमे थया प्रसन्न ॥ ४

हे सखियो ! तुम सब किस विचारसे, किसकी सलाहसे घर छोड़कर निकल पड़ी हो ? क्या वृन्दावनकी शोभा देखना चाहती हो ? क्या तुम सब वृन्दावनकी अनुपम शोभा देखकर प्रसन्न हो गई हो ?

हवे पुरे रे पधारो आपणेजी, कांई रजनी ते रूप अंधार ।
निसाचारी जीव बोलसेजी, त्यारे थासे भयंकार ॥ ५

अब तुम सब अपने-अपने घर लौट जाओ. रात्रिका अन्धकार बढ़ने लगा है. रात्रिमें विचरनेवाले जंगली प्राणियोंकी ध्वनि (गर्जना) से भयङ्कर स्थिति पैदा होगी.

निसाए नारी जे निसरेजी, काई कुलवंती ते न कहेवाय ।
नात परनात जे सांभलेजी, कांई चेहरो तेमां थाय ॥ ६

जो नारी रात्रिको घर छोड़कर निकल पड़ती है उसे कुलवन्ती नहीं कहा जाता. जब तुम्हारे परिवार जन तथा अन्य लोग तुम्हारे इस प्रकारके आचरणके बारेमें सुनेंगे तो तुम्हारी निन्दा होने लगेगी.

सखियो तमे तो कांई न विमासियुंजी, एवडी करे कोई वात ।
अणजाणे उठी आवियुंजी, कांई सकल मलीने साथ ॥ ७

हे सखियो ! तुम सबने किसी भी प्रकारका विचार किए बिना इतनी बड़ी भूल की है. कहीं सभीने अनजानेमें घर छोड़कर इस ओर प्रयाण तो नहीं किया ?

ससरो सासु मात तातनीजी, कांई तमे लोपी छे लाज ।
तमे सरम न आणी केहनी, तमे ए सुं कीधुं आज ॥ ८

सास, श्वशुर, माता, पिता किसीकी भी मर्यादा (शर्म) तुमने नहीं रखी है. क्या किसी प्रकारकी शर्म तुम्हारे मनमें नहीं आई ? आज तुम सबने मिलकर

यह क्या कर डाला ?

तमे पत तो तमारा ऊभा मूकियाजी, कांई रोतां मूक्यां बाल ।
ए वचन सुणीने विनता टलवली, कांई भोम पडियों ततकाल ॥ ९

तुम सबने अपने पतिको भी खड़े-खड़े ही (बिना विचार) छोड़ दिया तथा रोते हुए बच्चोंको भी छोड़ दिया. प्रियतमके इन कठोर वचनोंको सुनकर सखियाँ व्याकुल होकर तड़पने लगीं. कोई तो उसी क्षण धरती पर गिर पड़ी.

तेमां केटलीक सखियो ऊभी रहियो, कांई द्रढ करीने मन ।
बाई वांक हसे जो आपणोजी, तो वालोजी कहे छे वचन ॥ १०

उनमें कई (तामसी वृत्तिवाली सखियाँ) तो मनको स्थिर रखकर वहीं खड़ी रह गईं और अन्य सखियोंसे कहने लगीं, हमारा कोई दोष होगा तभी तो प्रियतम श्रीकृष्ण हमें इस प्रकारके वचन सुना रहे हैं.

वचन वाले सामा तामसियो, राजसियो फडकला खाय ।
स्वांतसिए बोलाय नहीं, ते तां पडियो भोम मुरछाय ॥ ११

प्रियतम श्रीकृष्णजीके वचनोंको सुनकर तामसी सखियाँ प्रत्यक्ष रूपमें प्रत्युत्तर देने लगीं. किन्तु राजसी सखियाँ तड़फने लगीं. सात्विकी सखियाँ तो मुँहसे बोल ही नहीं सकीं और मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़ीं.

एणे समे मही सखी ऊभी रही, कहे सांभलो धणीनां वचन ।
सखियो कुलाहल तमे कां करोजी, कांई ऊभा रहो द्रढ करी मन ॥ १२

उस समय मही (अहंभावसे भरी हुई तामसी) सखी तो प्रियतम श्रीकृष्णजीके सामने ही खड़ी रहीं और अन्य सखियोंसे कहने लगीं, तुम सब धामधनीके वचनोंको सुनो. इतनी व्याकुल बनकर कोलाहल क्यों कर रही हो ? अपने मनको स्थिर रखकर तुम सब खड़ी रहो.

सखियो भूलां छुं घणवें आपणजी, अने वली कीजे सामा रुदन ।
कलहो करो भोमे पडोजी, कां विलखाओ वदन ॥ १३

हे सखियो ! हम सबने बड़ी भूल की है. फिर तुम धनीके समक्ष रो रही

हो. कोलाहल करते हुए धरती पर गिरकर व्यर्थ आक्रन्द करके अपने वदनोंको क्यों तड़पा रही हो ?

पिउजी पधार्‌या प्रभातमां, आपण आव्यां छुं अत्यारे ।
ते पण तेडीने वाले काढियां, नहीं तो निसरतां नहीं क्यारे ॥ १४

अपनी इतनी बड़ी भूल है कि प्रियतम प्रातःसे ही वृन्दावनमें पधारे हैं और हम सब अभी सन्ध्याके समय आ पहुँचीं हैं, वह भी प्रियतमने वंशीके स्वरके माध्यमसे हमें बुला लिया तभी हम यहाँ आई हैं अन्यथा हम अपने घरोंसे बाहर निकलती ही नहीं.

पाछल आपण केम रहुं, जो होय कांई वालपण ।
केम न खीजे वालैयो, ज्यारे सेवा भूल्यां आपण ॥ १५

यदि हमारे हृदयमें प्रियतमके प्रति निष्कपट प्रेम होता तो हम इतने पीछे क्यों रह जातीं. हम अपना कर्तव्य (सेवा) भूल गई हैं तो प्रियतम नाराज क्यों न हों ?

वालाजी कहेवुं होय ते कहेजो, कांई अमने निसंक ।
अमे तम आगल ऊभा छुं, कांई रखे आणो ओसंक ॥ १६

सखियाँ पुनः कहने लगीं, हे प्रियतम ! आप जो कुछ कहना चाहें निःसंकोच कहें. हम सब सखियाँ आपके सामने ही खड़ीं हैं. आप किसी भी प्रकारका सङ्कोच न रखें.

सखियो तम माटे हुं एम कहुं, कांई तमारा जतन ।
रखे कोय तमने वांकुं कहे, त्यारे दुख धरसो तमे मन ॥ १७

श्रीकृष्णजी कहते हैं, हे सखियो ! तुम्हारी रक्षाके लिए ही मैं इस प्रकार बोल रहा हूँ कि तुम्हें कोई भला-बुरा न कहे, अन्यथा तुम्हारे मनमें आघात पहुँचेगा.

सखियो तमे जेम घर ऊभां मूकियां, तेम माणस न मूके कोय ।
एम व्याकुल थई कोई न निसरे, जो ग्यान रुदेमां होय ॥ १८

हे सखियो ! तुम लोगोंने जैसे खड़े-खड़े घर छोड़ दिया. कोई भी समझदार

व्यक्ति ऐसा कार्य नहीं करेगा. हृदयमें यदि थोड़ा भी विवेक होता तो इस प्रकार आकुल-व्याकुल होकर घर छोड़कर कोई नहीं निकलता.

सखियो तमे पाछा वलो, अधखिण म लावो वार ।
मनडे तमारे दया नहीं, घेर टलवले छे बाल ॥ १९

इसलिए हे सखियो ! तुम सभी अपने-अपने घर लौट जाओ. इसमें क्षणमात्रका भी विलम्ब न करो. क्या तुम्हारे मनमें थोड़ी भी दया नहीं है ? तुम्हारे छोटे-छोटे बच्चे घरमें तड़फ रहे हैं.

ए धरम नहीं नारी तणोजी, हुं कहुं छुं वारंवार ।
हवे घरडे तमारे सिधाविएजी, घेर वाटडी जुए भरतार ॥ २०

इस प्रकारका व्यवहार करना स्त्रियोंका धर्म नहीं है. इसलिए मैं वारंवार कह रहा हूँ कि अब सीधे अपने-अपने घर जाओ. तुम्हारे पति तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे.

वालैया हजी तमारे कहेवुं छे, के तमे कहीने रह्या एह ।
ते सरवे अमे सांभल्युंजी, तमे कह्युं जुगते जेह ॥ २१

इसके प्रत्युत्तरमें तामसी सखियोंने कहा, हे प्रियतम ! अब आपको अन्य कुछ कहना है ? या जो कुछ कहना था सब कह दिया ? आपने जो कुछ युक्ति पूर्वक कह सुनाया वह सब हम लोगोंने सुन लिया है.

सखियो हजी मारे कहेवुं छे, तमे श्रवणा देजो चित ।
मरजादा केम मूकिए, आपण चालिए केम अनित ॥ २२

प्रियतम बोले, हे सखियो ! मुझे अभी कुछ और भी कहना है. तुम सभी ध्यान पूर्वक सुनो, अपनी मर्यादा छोड़कर अनीतिके मार्ग पर हम क्यों चलें ?

हवे वली कहुं ते सांभलो, कांई मोटुं एक द्रष्टांत ।
वेद पुराणे जे कह्युं, कांई तेहनुं ते कहुं व्रतांत ॥ २३

हे सखियो ! तुम्हें एक महत्त्वपूर्ण दृष्टान्त देकर समझाता हूँ. वह सुनो, पतिव्रता धर्मके विषयमें वेदों और पुराणोंमें जो कहा गया है वह वृत्तान्त मैं तुम सबको

सुनाना चाहता हूँ.

भवरोगी होय जनमनो, जो एहवो होय भरतार ।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार ॥ २४

पति यदि जन्मसे ही रोगग्रस्त हो तथापि उसे छोड़ना नहीं चाहिए. यह कुलीन स्त्रीका धर्म कहा गया है.

जो पत होय आंधलो, अने वली जड होय अपार ।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार ॥ २५

यदि पति जन्मान्ध हो और महामूर्ख भी हो तथापि उसे छोड़नेका काम कुलीन स्त्री नहीं करती है.

जो पत होय कोढियो, अने कलहो करे अपार ।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार ॥ २६

यदि पति कोढ़ी हो और सदैव झगड़ता रहता हो तो भी उसे छोड़ना नहीं चाहिए. यह कुलीन स्त्रीका लक्षण है.

जो पत होय अभागियो, अने जनम दलिद्री अपार ।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार ॥ २७

यदि पति जन्मसे ही अत्यन्त निर्धन हो तथा अभागा भी हो तथापि कुलीन स्त्री उसे छोड़ती नहीं है.

जो पत होय पांगलो, बीजा अवगुण होय अपार ।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार ॥ २८

यदि पति विकलांग हो और उसमें अनेक दुर्गुण हों तथापि कुलीन स्त्री उसे छोड़ नहीं देती.

खोड होय भरतारमां, अने मूरख होय अजाण ।
तोहे तेने नव मूकवो, एम कहे छे वेद पुराण ॥ २९

यदि पुरुषमें कोई खोट हो एवं वह मूर्ख तथा अज्ञानी भी हो तो भी कुलीन स्त्री ऐसे पतिको छोड़ नहीं देती. यह वेद-पुराणका उपदेश है.

ते माटे हुं एम कहुं, जे नव मूकवो पत ।
ततखिण तमे पाछां वलो, जो रुदे होय कांई मत ॥ ३०

हे सखियो ! मैं यह सब इसलिए कह रहा हूँ कि पति त्याज्य नहीं माना जाता. यदि तुममें थोड़ी-सी भी सद्‌बुद्धि हो तो अभी इसी समय तुम सभी लौट जाओ.

हवे साथ कहे अमे सांभल्यां, कांई तमारा वचन ।
हवे अमे कहुं ते सांभलो, कांई द्रढ करीने मन ॥ ३१

इसके प्रत्युत्तरमें सखियाँ कहतीं हैं, हे प्रियतम ! आपके उपदेशात्मक वचन हमने सुन लिए. अब हम इस विषयमें जो कुछ भी कहें आप उन्हें दृढ़ मनसे ध्यान पूर्वक सुनें.

पत तो वालैयो अमतणो, अमे ओलखियो निरधार ।
वेण सांभलतां तमतणी, अमने खिण नव लागी वार ॥ ३२

हे प्रियतम ! हमारी आत्माके पति तो आप ही हैं. इस वास्तविकताको हमने निश्चय ही पहचान लिया है. इसलिए आपकी वंशीकी ध्वनि सुनते ही हमने आपके पास पहुँचनेमें एक क्षणका भी विलम्ब नहीं किया.

अमे पीहर पख नव ओलख्युं, नव जाण्युं सासर वेड ।
एक जाणुं मारो वालैयो, नव मूकुं तेहनी केड ॥ ३३

हम माता-पिताके और सास-श्वशुरके सम्बन्धको नहीं पहचानतीं. हम तो हमारे प्रियतम धामधनीको ही पहचानतीं हैं और अब उनका पीछा छोड़ना नहीं चाहतीं हैं.

पत तो केमे नव मूकवो, तमे अति घणुं कह्युं रे अपार ।
तमे साख पुरावी वेदनी, त्यारे केम मूकुं आधार ॥ ३४

आपने ही हमें उपदेश दिया है कि अपने पतिको किसी भी परिस्थितिमें नहीं छोड़ना चाहिए. इस सन्दर्भमें वेदों और शास्त्रोंकी साक्षी भी आपने दी है. हे प्राणाधार ! अब हम आपको कैसे छोड़ सकेंगी ?

तमे कह्युं पत नव मूकवो, जो अवगुण होय रे अपार ।
तमे रे तमारे मोंहे कह्युं, तमे न्या रे कीधो निरधार ॥ ३५

आपने यह भी कहा कि पतिको कभी छोड़ना नहीं चाहिए, भला उसमें अनेक अवगुण भरे हुए क्यों न हों. ये वचन आपने ही अपने श्रीमुखसे कहे हैं और हमारे पक्षमें आपने ठीकसे न्याय कर दिया है.

अवगुण पत नव मूकवो, तो गुण धणी मूकिए केमजी ।
तममां अवगुण किहां छे, तमे कां कहो अमने एमजी ॥ ३६

अवगुणी पतिको नहीं छोड़ना चाहिए यदि ऐसा शास्त्र सम्मत है तो सर्वगुण सम्पन्न आप जैसे योग्य स्वामीको कैसे छोड़ा जाए ? कहिए, आपमें ऐसा कौन-सा अवगुण है कि आप हमें छोड़कर जानेके लिए कह रहे हैं ?

एवा हलवा बोल न बोलिए, हुं वारुं छुं तमने ।
ए वचन कहेवा नव घटे, कांई एम कहेवुं अमने ॥ ३७

हे प्रियतम ! आप इस प्रकारकी हलकी वाणी मत बोलिए. हम आपको मना करते हैं इस समय हम लोगों पर ऐसे वचन लागू नहीं होते हैं.

अमे तो आव्या आनंद भरे, कांई तमसुं रमवा रातजी ।
एवा बोल न बोलिए, अमने दुख लागे निघातजी ॥ ३८

हम तो आनन्दित हृदयसे यहाँ आईं हैं कि आपके साथ रातभर रास लीला (विहार) करेंगी. इसलिए हमारे उत्साहको भंग करनेवाले ऐसे वचन आपको नहीं कहने चाहिए जिससे हमें आघात लगे.

अमे किहां रे पाछं वली जाइए, अमने नथी बीजो कोई ठाम जी ।
कहोजी अवगुण अमतणां, तमें कां कहो अमने एमजी ॥ ३९

अब हम पीछे लौटकर कहाँ जाएँ ? आपके चरणोंको छोड़कर अन्यत्र हमारे लिए स्थान ही नहीं है. यदि हममें कोई अवगुण हों तो कहिए, अन्यथा इस प्रकारकी बातें क्यों कर रहे हैं ?

अमे तम विना नव ओलख्युं, बीजा संसार केरा सूलजी ।
चरणे तमारे वालैया, कांई अमारा छे मूलजी ॥ ४०

हम आपको छोड़कर अन्य किसीको नहीं पहचानतीं हैं. हमारे लिए संसारका व्यवहार शूल जैसा बन गया है. हमारा मूल सम्बन्ध ही आपके चरणकमलोंसे है.

फल रोप्यो आंबो तमतणो, वाड कांटा कुटंम पाखल ।
बीजो झांपो रखोपुं करे, कांई स्यो रे सनमंध तेसुं फल ॥ ४१

फल देनेवाला आमका वृक्ष (हमारी आत्माएँ) आपका लगाया हुआ है. कुटम्ब परिवारके रूपमें काँटोंका बाड़ा भी आपने ही खड़ा किया है. द्वार पर रखवालेके रूपमें हमारे लौकिक पति हमारे शरीरकी रक्षा करते हैं किन्तु फलके साथ उनका क्या सम्बन्ध है अर्थात् फलरूपी हमारी आत्माके प्रति आपका ही अधिकार है.

[सखियाँ श्री कृष्णजीको कहतीं हैं, जैसे आमका उद्यान लगाने वाला व्यक्ति उक्त वाटिकाके चारों ओर काँटेका बाड़ा लगाता है और द्वार पर रक्षाके लिए द्वारपाल रखता है. इसी प्रकार आपने हमारी (ब्रह्मात्माओंकी) सूरत (बीज) को व्रजबधुओंके शरीर (वृक्ष) में स्थिर कर बाड़ेकी भाँति कुटुम्ब-परिवार बना दिए और द्वारपालके रूपमें लौकिक पतियोंको शरीररूपी वृक्षका रक्षक बनाया. हे स्वामी ! अब आप ही बताइए कि आमके फलरूपी हमारे आत्मिक प्रेमके स्वामी आप हैं या लौकिक पति ? फलके साथ द्वारपालका क्या सम्बन्ध है ? दूसरे शब्दोमें कहें तो आमके ऊपर स्वामीका अधिकार होता है. द्वारपालका नहीं. इसी प्रकार हमारा मूल सम्बन्ध आपके साथ है, आप ही हमारे स्वामी हैं.]

फूल फूल्यां जेम वेलडी, ते तां विकसे सदा रे सनेह ।
वछूटे ज्यारे वेलथी, त्यारे ततखिण सूके तेह ॥ ४२
जीव अमारा तम कने, कांई चरणे वलगां एम ।
फूल तणी गत जाणजो, ते अलगां थाय केम ॥ ४३

जिस प्रकार लताओंमें फूल लगते हैं जो सदैव उसके साथ स्नेहके रूपमें

रस पाकर विकसित होते हैं और लतासे अलग होने पर (गिर जाने पर) तुरन्त ही सूख जाते हैं. इसी प्रकार हमारी आत्मा आपके चरण कमलमें ही लिपटी हुई है. उन्हीं फूलोंकी भाँति हमारी दशाको समझ लीजिए. इसलिए हम आपसे अलग कैसे हो सकतीं हैं ?

तेम जीव अमारा बांधिया, जेम पडिया मांहें जाल ।
खिण एक सामुं नव जुओ, तो पिंडडा पडे ततकाल ॥ ४४

जिस प्रकार मछली जालमें फँस जाती है उसी प्रकार हमारी आत्मा आपके चरणोंमें बँधी हुई है. यदि आप क्षण मात्रके लिए भी हमारी ओर नहीं देखेंगे तो हमारे शरीरसे तत्काल प्राण निकल जाएँगे.

जीव अमारा चरणे तमतणे, ते अलगां थाय केम ।
जल मांहें जीव जे रहे, कांई मीन केरा वली जेम ॥ ४५

हमारी आत्मा आपके चरणमें समर्पित है वह आपसे अलग कैसे हो सकती है ? जिस प्रकार मछली जैसे जलचर जलमें ही रहते हैं और जलसे अलग होने पर जीवित नहीं रह सकते वैसी ही हमारी दशा है.

वाला तमे अमसुं एम कां करो, अमे वचन सह्यां नव जाय ।
खिण एक सामुं नव जुओ, तो तरत अद्रष्ट देह थाय ॥ ४६

हे धनी ! आप हमारे साथ इस प्रकारका व्यवहार क्यों कर रहे हैं ? आपके वचन हमसे सहे नहीं जाते. यदि आप एक क्षणके लिए भी हमारी ओर नहीं देखेंगे तो हमारा शरीर भी तत्काल समाप्त हो जाएगा.

निखर अमारी आतमा, अने निठुर अमारां मन ।
कठण एवां तमतणां, अमे तो रे सह्यां वचन ॥ ४७

हमारी आत्मा जड़वत् हो गई है और हमारा मन भी निष्ठुर (कठोर) बन गया है. इसलिए आपके ऐसे कठोर वचन हम लोगोंने सहन किए.

अम मांहें कांई अमपणुं, जो होसे आ वार ।
तो वचन एवां तमतणां, अमे नहीं सांभलुं निरधार ॥ ४८

हममें इस समय यदि थोड़ा-सा भी अहंभाव (अपनत्व) होता तो आपके इस प्रकारके वचन हम अवश्य ही नहीं सुनतीं.

सखिए मनमां वचन विचारियां, कांई प्रेम वाध्यो अपार ।
जोगमाया अति जोर थई, कांई पाछी पडियो ततकाल ॥ ४९

सखियोंने अपने मनमें उपर्युक्त बातों पर विचार किया तो श्रीकृष्णके प्रति उत्कट प्रेम उमड़ आया. एक ओर विरहका दु:ख था तो दूसरी ओर धनीका प्रेम. ये दोनों सम्मिलित हो गए. उस समय योगमायाने अधिक जोर पकड़ा अर्थात् सभी व्याकुल होकर वहीं गिर पड़ीं.

ततखिण वाले उठाडियुं, कांई आवीने लीधी अंग ।
आनंद अति वधारियो, कांई सोकनो कीधो भंग ॥ ५०

(जब इस प्रकार हर्ष, शोक और दु:खके कारण सखियाँ व्याकुल होकर गिर पड़ीं तो) तत्क्षण श्रीकृष्णने आकर उन्हें उठाया और गले लगाया. परिणाम स्वरूप आनन्द और स्नेह इतना बढ़ गया कि शोक और दु:खका वातावरण लुप्त हो गया.

वालोजी कहे छे वातडी, तमे सांभलजो सहु कोय ।
में जोयुं तमारुं पारखुं, रखे लेस मायानो होय ॥ ५१

प्रियतमने सखियोंसे कहा, तुम सभी सुनो ! तुम्हारे हृदयमें मायाका अंश लेश मात्र भी न रहे इसलिए मैंने इस प्रकारके वचनों द्वारा तुम्हारी परीक्षा ली है.

ओसीकल वचन वाले कह्यां, कांई ते में न कहेवाय ।
सुकजीए निरधारियुं छे, पण ते में लख्युं न जाय ॥ ५२

श्री प्राणनाथजी कहते हैं, प्रियतमने जो वचन नम्रतासे कहा उसे मैं उद्धृत नहीं कर सकता. श्रीशुकदेवजीने तो श्रीमद्भागवतमें इसका वर्णन किया ही है, किन्तु ये शब्द मेरी लेखनीमें नहीं आते हैं.

ए वचन श्रवणे सुणी, कांई मनडां थयां अति भंग ।
वाला एम तमे अमने कां कहो, अमे नहीं रे खमाय अंग ॥ ५३

श्रीकृष्णके विनम्रता भरे शब्दोंको सुनते ही सखियोंके मनोभाव बदल गए और कहने लगीं, हे प्रियतम ! आप हमारे लिए इस प्रकार नम्रतापूर्ण वचन क्यों बोल रहे हैं ? हम इन वचनोंको सहन नहीं कर पातीं.

कलकलती कंपमान थैयो, कांई ततखिण पडियो तेह ।
आवीने उछरंगे लीधियो, कांई तरत वाध्यो सनेह ॥ ५४

इस प्रकार कहती हुई सखियाँ काँपने लगीं और धरती पर गिर पड़ीं. प्रियतम श्यामसुन्दर श्रीकृष्णने तुरन्त वहाँ आकर उन्हें प्रेमपूर्वक उठाया और हृदयसे लगाया. जिससे उनमें तत्काल प्रेमका सञ्चार होने लगा.

आंखडिए आंसु ढालियां, तमे कां करो चितनो भंग ।
आंसुडां लोऊं तमतणां, आपण करसुं अति घणो रंग ॥ ५५

सखियोंकी आँखोंसे अश्रु बहने लगे. तब प्रियतमने कहा, अपने चित्तको व्याकुल बनाकर अधीर क्यों हो रही हों ? मैं तुम्हारे अश्रु पोंछ लेता हूँ. इसके बाद सभी मिलकर अत्यन्त आनन्द विभोर होकर रामत करेंगे.

सखी पुरुं मनोरथ तमतणां, कांई करसुं ते रंग विलास ।
करवा रामत अति घणी, में जोयुं मायानो पास ॥ ५६

हे सखियो ! मैं तुम्हारी मनोकामनाएँ पूर्ण करूँगा. हम सभी आनन्दके रङ्गमें रङ्गकर खेलेंगे. विविध प्रकारसे रासलीलाका आनन्द और सुख प्राप्त करनेके लिए तुम्हारे अन्तःकरणमें मायाका सञ्चार हुआ है अथवा नहीं,मैंने इसीकी परीक्षा ली है.

सखीओ वृन्दावन देखाडुं तमने, चालो रंग भर रमिए रास ।
विविध पेरेनी रामतो, आपण करसुं मांहों मांहें हास ॥ ५७

हे सखियो ! मैं तुम्हें वृन्दावनकी शोभा दिखाता हूँ. चलो, वहाँ हम सभी आनन्दमें मग्न होकर रास लीला करेंगे, विभिन्न प्रकारकी रामतें करते हुए हम परस्पर हास्य विनोद करेंगे.

तमे प्राणपें मुने वालियो, जेम कहो करुं हुं तेम ।
रखे कोय मनमां दुख करो, कांई तमे मारा जीवन ॥ ५८

हे सखियो ! तुम तो मुझे प्राणोंसे भी प्रिय हो. इसलिए मैं जो भी करूँगा तुम्हारे कथनानुसार ही करूँगा. अब तुम अपने मनमें किसी भी प्रकारका दुःख न रखना क्योंकि तुम तो मेरे प्राण (जीवन) हो.

जीवन सखी वृंदावन रंग जोईएजी, जोईए अनेक रंग अपार ।
विगते वन देखाडुं तमने, मारा सुन्दरसाथ आधार ॥ १

श्रीकृष्णजी कहते हैं, हे मेरी जीवन सखियो ! वृन्दावनकी सुन्दरता और इसके अनेक प्रकारके अपूर्व रङ्गको देखो. मैं मेरे आधारस्वरूप सुन्दरसाथको अखण्ड वृन्दावनकी अनुपम शोभाका भलीभाँति अवलोकन कराता हूँ.

आंबा आंबलियो ने आसोपालव, अंजीर ने अखोड ।
अननास ने आंबलियो दीसे, चारोली चंपा छोड ॥ २

यहाँपर आम, इमली, अशोक, अंजीर, अखरोट, अनन्नास, आँवला, प्रियाल, (चिरोंजी-चारोलीका पेड़) चम्पा इत्यादिके पौधे शोभायमान हैं.

साग सीसम ने सेमला सरगू, सरस ने सोपारी ।
सूफ सूकड ने साजडियां, अगर ऊंचो अति भारी ॥ ३

सागवान, शीशम, सेमल, सहिजन, शिरीष, सुपारी, सूफ, चन्दन, अर्जुन और अगरके ऊँचे वृक्ष दिखाई देते हैं.

वड पीपलने वांस वेकला, बोलसरी ने वरणां ।
केवडी केल कपूर कसूंबो, केसर झाड अति घणां ॥ ४

वट, पीपल, बाँस, वैकंकत (बेकडा), मौलसरी, वायवरण, केवडा, केला, कपूर, कुसुम्भ, केशर आदिके बहुत-से पेड़ अत्यन्त नयनरम्य हैं.

मेंहदी नेवरी ने मलियागर, दाडमी डोडंगी द्राख ।
बीयो बदाम ने बीली बिजोरी, रुद्राख ने भद्राख ॥ ५

मेंहदी, नेवरी (एक जातकी वेल), चन्दन, अनार, जीवन्ती, अङ्गूर, विजयसार, बादाम, बेल, बिजौरे, रुद्राक्ष तथा भद्राक्ष भी यहाँ शोभायमान हैं.

पीपली पारस ने पारजातक, साले ने सीसोटा ।
फणस तूत ने तीन तेवरियां, ताड़ छे अति मोटा ॥ ६

पाकर, पारस, पारिजात, शाल, सीसोटा, कटहल, शहतूत तथा तीन तुवरकके वृक्ष हैं. ताड़के वृक्ष बहुत ऊँचे दिखाई देते हैं.

रायण रोइण रामण रासण, लिंबडा लिंबोई लवंग ।
तज तलसी ने आदु एलची, वाले अति सुगंध ॥ ७

खिरनी, रोहिणी, रामफल, रासण, नीम, नीबू, लवङ्ग, दालचीनी, तुलसी, अदरक, इलाइची आदिके पेड़-पौधे अत्यन्त सुगन्ध दे रहे हैं.

केवडो काथो ने कपूरकांचली, भरणी ने भारंगी ।
सेवण सेरडी सूरण सिगोटी, नालियेरी ने नारंगी ॥ ८

केवडा, खैर (कत्था), कपूरकाँचली, भृतिका, भारङ्गमूल, सरमल, ईख, सूरन, सिगोटी आदिके साथ नारियल और नारंगीके वृक्ष भी शोभायमान हैं.

अरणी ऊमर बेहेडा दीसे, जांबू ने वली जाल ।
गूंदी गूंदा गुगल गंगोटी, गहुंला ने गिरमाल ॥ ९

हवनकाष्ठ, गूलर, बहेडा, जामुन, खारी जाल आदिके वृक्ष हैं. लसोड़ा, गुग्गुल, गंगौटी और करौची, गिरमाल आदि वृक्ष भी हैं.

ऊंबरो अगथिया ने आंबलियो, अकलकरो अमृतजी ।
करमदी ने कगर-करंजी, कदम छे अदभुतजी ॥ १०

गूलर, अगस्त्य, ईमली, आकार कटभ, अमृत फल, करौंदे, करंज और कदम्बके विशाल वृक्ष हैं.

बूंद बकान ने कोठ करपटा, निगोड ने वली नेत्र ।
मरी पानरी ने वली मरुओ, अकोल ने आकसेत्र ॥ ११

बूँद, बकायन, कोठ, करपटा, निर्गुण्डी, नेत्र, कालीमिर्च, पानरी, खरपुष्प, आँक और आक्षेत्र सदृश तरु-लताएँ भी शोभायमान हैं.

कमलकांकडी ने झाडचीभडी, बोरडी ने वली बहेडा ।
हिरवण हीमज हरडे मोटी, मोहोला ने वली महूडा ॥ १२

कमलगट्टा, पपीता, बेर, बहेड़े, बड़ी हरड़े, छोटी हरड़े, महोला और महुएके वृक्ष भी हैं.

धामणां धावडी ने वरीआली, सफलजल भोज पत्र ।
खसखस फूल दीसे एक जुगते, छोत्रा उपर छत्र ॥ १३

धामणा, धवरू, सौंफ, सेब, भोजपत्र, खसखस आदिके फूल शोभा देते हैं और ऐसा प्रतीत होता है, मानो छत्रके ऊपर छत्र शोभायमान हैं.

माया मस्तकी ने वरस बडबोहोनी, सकरकंद संदेसर ।
करोड भरोड ने पलासी, अकथ ने आक सुन्दर ॥ १४

माजुफल, मस्तकी, वरछडा, बडबोहोनी, सकरकन्द, गुलतुर्रा-सिद्धेश्वर तथा कर्कटशृङ्गी, भैरवशृङ्गी, पलाश, आक (मदार) और आशोदर सुन्दरताकी वृद्धि कर रहे हैं.

टेवरु कुदरु ने कबोई, कांकसी ने कलूंब ।
खेजड खजुरी ने खाखर दीसे, केसु तणी अति लूंब ॥ १५

तेन्दू, झिङ्गन, कबोई, काँकसी कलूम्ब, शमी, खजूर, ढाक पलास (केसू) आदि वृक्षोंके झुरमुट हैं.

परवती परवाली ने पाडर, पान वेल अति सार ।
आल अकोल ने बेर उपलेटा, दुधेला ने देवदार ॥ १६

पर्वती, परवाड़ी और पाड़रके वृक्ष और पानकी लताएँ शोभायमान हैं. आल, अकोल, बडर, उपलेट, दूधेला और देवदारु अत्यधिक रमणीय लगते हैं.

चंबेली ने चनी चणोठी, चंद्रवंसी चोली ने चीभडी ।
गलकी ने गिसोटी गोटा, गुलबांस ने गुलपरी ॥ १७

चमेली, चणक बडर, स्वेत गुञ्जावृक्ष, कुमुड, सेम, गेलगोटा, नेनुआ, तुर, गोटा, गुलछड़ी और रजनीगन्धाके पौधे शोभायमान हैं.

जाई जुई ने जासू जायफल, जाय ने जावंत्री ।
सुरजवंसी ने सणगोटी, सूआ ने सेवंत्री ॥ १८

जाई, जूही, जासूड, जायफल, जमेली, जावन्त्री, सूरजवंशी, सणगोटी, सुआ (सौंफ), सेवन्ती आदि वृक्ष-लताएँ हैं.

कोहली कालंगी ने कारेली, तुंबडी ने तडबूची ।
कोठवडी ने चणक चीभडी, टीडूंरी ने खडबूची ॥ १९

कुष्माण्ड, कालिङ्ग करेला, तुम्ब, तरबूज, कोठवडी, चना, चीभड़ी, कुन्दरू और खरबूजेकी वेलें हैं.

गुलाबी ने कफी डोलरिआं, दुधेली ने दोफारी ।
कमल फूल ने कनीअल केतकी, मोगरेमां झरमरी ॥ २०

गुलाब, दूधेली, दोफारी, कमल, कनेर, केतकी, मोगरा, झरमरी आदि सुन्दर फूल शोभा दे रहे हैं.

ओलिया वालोलिया ने परवालिया, इसक फाग वेल सार ।
आरिया तो अति उत्तम दीसे, जाणे कलंगे रंग प्रतकाल ॥ २१

ओलिया, वालोलिया, परवालिया, ईश, फागआदि लताएँ दिखाई देतीं हैं. आरियाकी लता भी अति सुन्दर दिखाई देती है मानों कलङ्गेका रङ्ग चढ़ा हुआ कुम्हड़े (कुस्माण्ड)का फूल हो.

सेहेस्त्र पांखडीनो दमणो दीसे, सोवरण फूली मकरंद ।
वन सिणगार कीधो वेलडिए, जुजवी जुगतनां रंग ॥ २२

सहस्त्र पङ्खुड़ियों वाले द्रोणपुष्पी खिले हुए दिखाई देते हैं. उन फूलों पर स्वर्णिम रङ्गके मकरन्द है, मानों विभिन्न रङ्गोंकी पुष्प-लताओंसे वनका शृङ्गार किया हो.

साक फल अंन अनेक विधनां, कंदमूल मांहें सार ।
सारा स्वाद जुजवी जुगतनां, वन फलियां रे अपार ॥ २३

अनेक प्रकारके साग, फल, अन्न, भिन्न-भिन्न स्वादयुक्त श्रेष्ठ प्रकारके कन्दमूल तथा असंख्य वन-फलियाँ यहाँ उपलब्ध हैं.

वन ऊपर वेलडिओ चढियों, जो जो ते आ निकुंज ।
मंदरना जेम जुगते दीसे, मांहें अनेक विधनां रंग ॥ २४

देखो तो, वनके वृक्षों पर लिपटी हुई लताओंने विभिन्न प्रकारके रङ्गयुक्त मन्दिर सदृश निकुञ्ज (लता मण्डप) का निर्माण किया है.

व्रध आडी तरवरनी डालो, जुगते वन कुलंभ ।
भोम उपर ऊभा फल लीजे, केटली कहुं एह सनंध ॥ २५

तरुवरकी शाखाएँ फैली हुई होनेके साथ-साथ भली-भाँति पल्लवित हो गई हैं और इतनी झुकी हुई हैं कि भूमि पर खड़े होकर फल तोड़े जा सकते हैं. इसका कहाँ तक वर्णन करूँ ?

बीजी विध विधनी वनसपती मोरी, केटलां लऊं तेनां नाम ।
जमुनाजीना त्रट घणुं रूडा, रूडा मोहोल बेसवानां ठाम ॥ २६

अन्य विविध पुष्पित वनस्पतियाँ हैं जिनका कहाँ तक नाम लूँ ? यमुनाजीका तट अत्यन्त शोभायुक्त है तथा रहनेके लिए (निकुञ्ज-से बने) सुन्दर भवन अति रमणीय स्थान है.

बेहु कांठे वनसपती दीसे, झलूवे उपर जल ।
नेहेचल रंग सदा विध विधनां, ए वन छे अविचल ॥ २७

यमुनाजीके दोनों तट वनस्पतिसे आच्छादित हैं और वनस्पति जलके ऊपर झूल रही प्रतीत होती है. ये वन विविधता पूर्ण अखण्ड रङ्ग तथा सदाबहार वनस्पतियोंसे पूर्ण हैं.

कांठे जल उपर वेलडियो, तेमां रंग अनेक ।
फूलडे जल छाह्युं छे जुगते, विध विधनां विसेक ॥ २८

तटके जल पर छाई हुई विभिन्न रङ्ग पुष्प-लताओंकी छाया जल पर पूर्णरूपसे पड़ रही है, यह इसकी विशेषता है

जमुनाजीना जल जोरावर, मध्य वहे छे नीर ।
वहेतां जल वले रे खजूरिआ, दरपण रंग जाणे खीर ॥ २९

श्रीयमुनाजीका जल द्रुतगतिसे वहता है. बीचका प्रवाह भी तीव्र गतिका है. प्रवाहमें बल- खाती लहरें उठतीं हैं. दूध जैसा निर्मल जल दर्पणकी भाँति चमकता है.

वृन्दावन फूल्युं बहु फूलडे, सोभा धरे अपार ।
वन फल ऊतम अति घणां ऊंचां, कुसम तणां बहेकार ॥ ३०

वृन्दावनमें अनेक प्रकारके फूल खिले हुए हैं. इनकी शोभा अपरिमित है.

वनोंके फल अति ऊच्च कोटिके हैं. चारों ओर फूलोंकी सुरभि फैल रही है.

रेत सेत सोभा धरे, वृन्दावन मंझार ।
सकल कलानो चन्द्रमा, तेज धरा धरे अपार ॥ ३१

वृन्दावनके मध्यमें रेत श्वेत आभा धारण करती है. चन्द्र सोलहों कलाओंको लेकर वृन्दावनकी धरती पर चमक रहा है. जिसके कारण पृथ्वी अत्यधिक चमक रही है.

गुंजे भमरा स्वर कोयलना, घूमे कपोत चकोर ।
सूडा बपैया ने वली तिमरा, रमे ते वांदर मोर ॥ ३२

भँवरा और कोयलकी ध्वनि गूँज रही है. कबूतर तथा चकोर पक्षी तट पर आनन्द पूर्वक घूम रहे हैं. तोता, पपीहा और तिमरा अपने ढंगसे कूज रहे हैं. वानर और मयूर क्रीड़ामें मग्न हैं.

मांहें ते मृग कस्तूरिया, प्रेमल करे अपार ।
बीजां अनेक विधनां पसु पंखी, ते रमे रामत अति सार ॥ ३३

कस्तूरी मृग उनकी नाभीसे निकलती सुगन्धसे वनको अपार परिमलयुक्त कर रहे हैं तथा अन्य विभिन्न प्रकारके पशु-पक्षी आनन्दके साथ रमणीय क्रीड़ामें मग्न हैं.

छूटक थड ने घाटी छाया, रमवानां ठाम अति सार ।
इन्द्रावती बाई अति उछरंगे, आयत करे अपार ॥ ३४

भिन्न-भिन्न वृक्षोंकी सघन छाया होनेसे खेलनेके लिए अति उत्तम स्थान है. इन्द्रावती सखी भी उत्साह और उल्लासके साथ खेल (रास लीला) रचानेकी बड़ी इच्छुक है.

आरोग्यां वनफल स्वादे, जल जमुना त्रट सार ।
वृंदावन वाले जुगते देखाडियुं, आगल रही आधार ॥ ३५

सखियोंने अनेक प्रकारके स्वादिष्ट फल खाए और यमुना तट पर पानी पिया. इस प्रकार प्रियतम श्यामसुन्दर श्रीकृष्णने स्वयं अग्रसर होकर सखियोंको पूरे वृन्दावनकी शोभा (सुन्दरता) दिखाई है.

एह सरूपने एह वृंदावन, ए जमुना त्रट सार ।
घरथी तीत ब्रह्मांडथी अलगो, ते तारतमे कीधो निरधार ॥ ३६

श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण और सखियोंका यह दिव्य स्वरूप, यह अखण्ड वृन्दावन तथा यमुनाजीका तट रमणीय है. योगमाया द्वारा रचित यह रास मंडलका स्थान (अखण्ड वृन्दावन) परमधामसे इस ओर तथा कालमायाके ब्रह्माण्डसे भिन्न (केवल ब्रह्मकी स्वामीनीमें) है. इसका स्पष्टीकरण निश्चित रूपसे तारतम ज्ञान द्वारा ही हुआ है.

प्रकरण १० चौपाई ४०५

रामत पहेली - राग कालेरो

वाले वेष लीधो रलियामणो, कांई करसुं रंग विलास ।
आयत छे कांई अति घणी, वालो पूरसे आपणी आस ।
सखी रे हमचडी ॥ १

प्रियतम श्रीकृष्ण परमात्माने सुन्दर वेश धारण किया है. अब हम उनके साथ आनन्द विलास करेंगे. श्रीकृष्णजीके साथ रामत खेलनेकी हमारी उत्कट इच्छा है जिसे वे पूरी करेंगे. सब सखियाँ उमङ्गमें आ गईं हैं.

वृन्दावन तो जुगते जोयुं, स्याम स्यामाजी साथ ।
रामत करसुं नव नवी, कांई रंग भर रमसुं रास ॥ २

हे सखी ! हमने श्याम और श्यामाजीके साथ समस्त वृन्दावनकी शोभा भलीभाँति देख ली. अब हम विभिन्न प्रकारकी रामतें करेंगी और हृदयमें उल्लास भरकर रास खेलेंगी.

सखी मांहों मांहें वात करे, आज अमे थयां रलियात ।
वेष निरखीने नेत्र ठरे, आज करसुं रामत निघात ॥ ३

सखियाँ परस्पर बातें करती हुई कहतीं हैं, आज तो हमारा अहोभाग्य है कि हम आनन्दित हो गईं. प्रियतमका अलौकिक वेश देखकर हमारे नयनोंको शीतलता मिली. आज अवश्य ही हम प्रियतमके साथ प्रेमानन्द लीला करेंगीं

वेष नवानो वाघो पेहेर्‌यो, तेड्यां वृन्दावन ।
मस्तक मुकट सोहामणो, वेष ल्याव्या अनूपम ॥ ४

श्रीकृष्णने (योगमायाके वस्त्रोंका) नवीन वेश धारण किया और वंशीनादके द्वारा हमें वृन्दावनमें बुलाया. उनका मुकुट अति सुन्दर है और उन्होंने अनुपम वेश धारण किया है.

भली भांतनां भूषण पहेर्‌यां, वेण रसाल ज वाय ।
साथ सकलमां आवीने ऊभो, करसुं रामत उछाय ॥ ५

प्रियतमने सुन्दर आभूषण धारण किए हैं. वे मनमोहक रसपूर्ण सुमधुर वंशी बजा रहे हैं. सब सखियाँ आकर खड़ी हैं. अब सब मिलकर उत्साह और उल्लासके साथ रामत करेंगे.

तेवां भूषण ने तेवो वाघो, नटवरनो लीधो वेष ।
घणां दिवस रामत कीधी, पण आज थासे वसेष ॥ ६

जैसे आभूषण हैं वैसे ही वस्त्र भी सुन्दर हैं. प्रियतमने नटवरका वेश धारण किया है. वैसे तो उन्होंने व्रजमें कई दिनों तक प्रेमभरी लीलाएँ कीं है किन्तु आजकी यह लीला विशेष प्रकारकी होगी.

रास रमवाने वालेजी अमारे, आज कीधो उछरंग ।
नयणे जोई जोई नेह उपजावे, वारी जाऊं मुखारने विंद ॥ ७

रासलीलाके लिए हमारे प्रियतम श्रीकृष्ण अति उत्सुक हैं. वे हमारी ओर दृष्टिपात कर हमारे हृदयमें स्नेह उत्पन्न करते हैं. उनके मुखकमलकी शोभा देखकर हम उन पर सब कुछ न्योछावर करतीं हैं.

सखी इन्द्रावती एम कहे, चालो जैए वालाजीने पास ।
कंठ वलाई मारा वालाजी संगे, कीजे रंग विलास ॥ ८

सखी इन्द्रावती कहती है, हम सभी सखियाँ प्रियतमके पास जाएँ और उनके गले लगकर आनन्द विलास करें.

एवी वात सांभलतां वालेजी अमारे, आवीने ग्रही मारी बांहें ।
कहो सखी पहेली रामत केही कीजे, जे होय तमारा चित मांहें ॥ ९

इतना सुनते ही प्रियतमने आकर हमारी बाँहें पकड़ लीं और कहने लगे, हे सखियो ! अब सर्व प्रथम कौन-सी रामत करें ? तुम्हारे मनमें जो भी विचार हो, कहो.

सखी मनोरथ होय ते कहेजो, रखे आणो ओसंक ।
जेम कहो तेम कीजिए, आज करसुं रामत निसंक ॥ १०

हे सखियो ! तुम्हारी जो भी मनोकामनाएँ हों संकोच रहित होकर कहो. तुम जो भी कहोगी निश्चय ही आज वही रामत करेंगे.

पुरुं मनोरथ तमतणां, करार थाय जीव जेम ।
सखी जीवन मारा जीव तमे छो, कहो करुं हुं तेम ॥ ११

मैं तुम सभीकी अभिलाषाएँ पूर्ण करूँगा जिससे तुम्हारी आत्माको परम शान्ति प्राप्त हो. हे ब्रह्मात्माओ ! तुम मेरे जीवनके आधार हो. इसलिए तुम जो कहोगी मैं वैसा ही करूँगा.

रासनी रामत अति घणी, अनेक छे अपार ।
सघली रामत संभारीने, अमने रमाडो आधार ॥ १२

तब सखियाँ कहतीं हैं, रासकी लीलाएँ तो अपरिमित हैं. इसलिए हे धनी ! सभी लीलाओंको याद करते हुए हमें कोई भी लीला (रामत) कराइए.

अमे रंग भर रमवा आवियां, कांई करवा विनोद हांस ।
उतकंठा अमने घणी, तमे पूरो सकलनी आस ॥ १३

हम सभी उत्साहसे आपके साथ आनन्द विनोद करने और रामत खेलनेके लिए आईं हैं. हमारे हृदयमें उत्कण्ठा बहुत है. आप हम सभीकी इच्छाएँ पूर्ण करें.

अमे अवसर देखी उलासियों, कांई अंगडे अति उमंग ।
कहे इन्द्रावती अमने, तमे सहुने रमाडो संग ॥ १४

इन्द्रावती कहती है, इस समय वृन्दावनकी अनुपम छटा और सुन्दरता

देखकर हमारे अङ्ग प्रत्यङ्गमें उत्साह एवं उल्लास भरा हुआ है. इसलिए हे प्रियतम ! आप हम सभीको एक साथ रास लीला कराएँ.

चरचरी

मारे वालैए करी उमंग, सखी सरवे तेडी संग ।
रमाडे नव नवे रंग, अद्भुत लीला आज री ॥ १

हमारे प्रियतमने सखियोंको हर्ष पूर्वक एक साथ बुलाया है. नए-नए रङ्गोंके द्वारा लीलाओंका अनुभव करवा रहे हैं. आजकी यह लीला वास्तवमें अत्यन्त अद्भुत है.

सखियो मली संघात, सोभित चांदनी रात ।
तेज भूषण अख्यात, मीठे स्वरे बाज री ॥ २

सखियाँ एकत्रित हुईं, ज्योत्स्ना (चन्द्रिका) से रात शोभायमान है, सखियोंके आभूषणोंका तेज अपूर्व है, उससे मधुर ध्वनि निकल रही है.

जोतां जोत वृन्दावन, अंगे रंग उतपन ।
सामग्री सखी जीवन, नवलो सरवे साज री ॥ ३

वृन्दावनकी तेजोमय ज्योति देखकर अङ्ग-प्रत्यङ्ग आनन्दके रङ्गमें रङ्ग गए हैं. वृन्दावनकी सामग्री, सखियाँ तथा श्रीकृष्णने नए ढङ्गसे शृङ्गार किया है.

अंगे सहु अलबेल, करे रे रंगनां रेल ।
विलास विनोद हांस खेल, लोपी रमे लाज री ॥ ४

सखियोंके अङ्गमें प्रेम-रसरूपी उन्माद भरा है और उसी रङ्गमें वे आत्मविभोर हो रहीं हैं. विनोद और विलासके साथ वे लज्जारूपी बन्धन त्यागकर रामत कर रहीं हैं.

वचे वचे वाय वेण, रंग रस खिण खिण ।
उपजावे अति घण, पूरवा पूरण काज री ॥ ५

प्रियतम बीच-बीचमें वंशी भी बजाते जा रहे हैं जिसके कारण प्रत्येक क्षणमें

आनन्दका प्रवाह बहने लगा है. सखियोंकी इच्छा पूरी करनेके लिए उन्होंने भाँति-भाँतिसे प्रेम उत्पन्न कर प्रत्येक क्षणको रसिकतासे भर दिया है.

रमवुं उनमद पणे, वालाजीसुं रंग घणे ।
कर कंठ धणी तणे, विलसुं संगे राज री ॥ ६

सखियाँ प्रेम-विह्वला होकर प्रियतमके साथ अत्यधिक आनन्दसे खेल रहीं हैं एवं श्रीराजजीके गलेमें बाँह डालकर विलास कर रहीं हैं.

वाणी तो बोले मधुर, करसुं ग्रही अधुर ।
पिए वालो भरपूर, राखी हैडा मांज री ॥ ७

प्रियतम श्यामसुन्दर मधुर वचन बोलते हैं. कभी-कभी होठोंको पकड़कर अधरामृतका पान करते हुए हमें अपने हृदयसे लगा लेते हैं.

रमती इन्द्रावती, घातो घणी ल्यावती ।
वालैया मन भावती, मुखमां मरजाद री ॥ ८

इन्द्रावती अनेकानेक कौशलपूर्ण युक्तियोंसे रासकी रामत खेलती है. प्रियतमको इन्द्रावतीका अक्षुण्ण प्रेम बहुत भाता है. उनके मुखकमल पर मर्यादा (लज्जा और संकोच) की झलक दिखाई देती है.

राग धन्यासरी

वालैया रमाडे रे, अमने नव नवे रंग ।
जेम जेम रमिए रे, तेम तेम वाधे रे उमंग ॥ १

प्रियतम हमें नए-नए रङ्गोंमें रङ्गकर रामत खेला रहे हैं. रामत खेलनेमें जिस प्रकार गतिकी तीव्रता बढ़ती जाती है उसी प्रकार प्रेमकी तरङ्गें भी बढ़ती जातीं हैं.

सकल मलियो रे साथ, सोभे वालैया संघात ।
जाणिए उदयो प्रभात, तिमिर भाजियो रात, सोहे व्रन्दावन ॥ २

सखियोंका समूह प्रियतमके साथ ऐसा आभापूर्ण दिखाई देता है मानो रात्रिका

अन्धकार हट गया हो और सखियों तथा श्रीकृष्णकी जाज्वल्यमान प्रभाके कारण प्रातःकाल हो चुका हो. इस प्रकार वृन्दावन अत्यन्त रमणीय बन गया है.

भूषण झलहलकार, नंग तो तेज अपार ।
जोत तो अति आकार, वस्तर सोहे सिणगार, मोहे वालो मन ॥ ३

सखियोंके आभूषण तेजोमय प्रकाशसे चमक रहे हैं. इन आभूषणोंमें जड़ित रत्नोंका तेज भी अपरिमित है. ब्रह्मात्माओं तथा श्रीकृष्णका दिव्यस्वरूप अत्यन्त तेजोमय है. इसी प्रकार वस्त्र और शृङ्गार भी अपनी तेजोमयी दीप्तिके कारण शोभा दे रहे हैं और वे प्रियतमके मनको मोहित करते हैं.

सिणगार सरवे सोहे, वालोजी खंत करी जुए ।
जाणिए मूलगां रे होय, तारतम विना नव कोय, जाणे एह धन ॥ ४

सखियोंका शृङ्गार अति शोभायुक्त है. प्रियतम भी उन्हें उत्सुकतावश देख रहे हैं. मानों मूल (परमधाम) से ही यह प्रेम सम्बन्ध है किन्तु तारतम ज्ञानके बिना कोई भी इस अखण्ड निधि (ब्रह्मात्माओं तथा श्रीकृष्णका प्रेम सम्बन्ध) को नहीं जान सकता.

वालोजी अति उलास, मन मांहें रलियात ।
पूरवा सुन्दरीनी आस, मरकलडे करे हांस, उलट उतपन ॥ ५

प्रियतम श्यामसुन्दर अत्यन्त उल्लसित हो रहे हैं. सखियोंकी इच्छा पूर्ण करनेके लिए वे मन्द-मन्द हास्य बिखेर रहे हैं. इस हास्यके कारण उत्साहमें वृद्धि होती है और प्रेम भी तीव्र गतिसे बढ़ता है.

सुख तो वालाजीने संग, अरधांग लिए रे अंग ।
जुवती करती जंग, रमे नव नवे रंग, घणुं जसंन ॥ ६

अखण्ड सुखकी प्राप्ति तो प्रियतमके सान्निध्यमें ही है. श्रीश्यामाजी अर्धांगिनीके रूपमें प्रियतम श्यामसुन्दरका सुख प्राप्त कर रही हैं. सखियाँ भाँति-भाँतिके राग रङ्गसे प्रेमकी लड़ाई लड़ रहीं हैं. ऐसा प्रतीत होता है मानों कोई बड़ा उत्सव मनाया जा रहा हो.

सुन्दरी वल्लभ बंने, करे इछा मन गमे ।
रीस तो कोय ना खमे, नीच तो भाखे ना नमे, बोले बल तन ॥ ७

सखियाँ और वल्लभ (श्रीकृष्ण) दोनों अपनी-अपनी इच्छा अनुसार लीला

करते हैं. कोई क्रोध सहन नहीं करता. कटु वचनसे कोई किसीसे नहीं झुकता अर्थात् कोई किसीसे कम दिखाई नहीं देता. सभी मधुर गीतों द्वारा रास लीलाका आनन्द ले रहे हैं.

चालती चतुरा रे चाल, मुख तो अति मछराल ।
सोहंती कट लंकाल, चढती जाणे घंटाल, प्रेम काम सिंध ॥ ८

सखियाँ चातुर्यपूर्ण चाल चल रहीं हैं. उनके मुखकमल प्रेमकी मदपूर्ण लालिमाके कारण खिल उठे हैं. चढ़ती हुई घण्टी सदृश उनकी पतली कमर सुन्दर लग रही है, वे प्रेमरूपी कामनाकी सागर समान हैं.

छेलाइए अति छेल, वल्लभ संघाते गेहेल ।
प्रेम तो पूरो भरेल, स्याम संगे रंग रेल, वाले बांहोंडी बंध ॥ ९

सखियाँ रामत करनेमें अति कुशल हैं. प्रियतमके साथ खेलते समय मानों वे उन्मादित हो जातीं हैं. उनके हृदयमें उत्कट प्रेम भरा हुआ है. इसलिए श्यामसुन्दर श्रीकृष्णजीको वे उन्मत्त होकर गले लगा लेतीं हैं.

वाणी तो बोले विसाल, रमती रमती आल ।
कंठ तो झांक झमाल, अंग तो अति रसाल, सोहंती रे सनंध ॥ १०

सखियाँ प्रेमपूर्ण, मधुर तथा सारगर्भित वाणीका आदान-प्रदान कर रहीं हैं. खेलते समय विनोदपूर्ण परिहास करतीं हैं, उनके कमनीय कण्ठसे जो स्वर मुखरित हो रहे हैं अर्थात् वे मधुर राग-रागिनियाँ आलापती जा रहीं हैं. उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग प्रेम रससे भरे हुए हैं. वे सर्वरूपेण शोभायमान दिखाई देतीं हैं.

गावती सुचंग रंग, आणती अति उमंग ।
स्वर एक गाय संग, अलबेली अति अंग, वासनाओ सुगंध ॥ ११

सखियाँ अत्यन्त उत्साहमें आकर सुमधुर स्वरोंसे गीत गातीं हैं. उनके कण्ठोंसे एक साथ एक ही स्वरमें गीत निःसृत होते हैं. उनका स्वरूप अत्यन्त आकर्षक और उन्मादपूर्ण दिखाई देता है. इन ब्रह्मवासनाओंके अङ्ग-प्रत्यङ्गसे सुगन्ध फैल रही है.

वल्लभ कंठ वलाय, लिए रंग धाय धाय ।
रामत करे सवाय, पाछी नव राखे कांय, ऊभी रहे रे ओकंध ॥ १२

सखियाँ कभी तो प्रियतम श्रीकृष्णके गले लिपटकर और कभी आवेगमें आकर दौड़तीं हैं तथा प्रेमानन्दके रसका पान करतीं हैं. इस प्रकार उत्तरोत्तर भाँति-भाँतिकी प्रेम क्रीड़ाएँ करतीं हैं. इन बातोंमें वे लेश मात्र भी पीछे नहीं हटतीं अपितु दृढ़तापूर्वक खड़ी रहतीं हैं.

इन्द्रावती अंगे आप, वालाजीसुं करे विख्यात ।
मुख तो मेले संघात, अमृत पिए अघात, सुख तो लिए रे सुन्दर ॥ १३

स्वयं इन्द्रावती प्रियतम श्रीकृष्णके साथ रामत करती हुई वार्तालाप करती है. एक दूसरेके मुखकमलका स्पर्श करते हैं. इस प्रकार असीम प्रेमामृतका पान करती हुई सखियाँ प्रेमानन्दके सुखका अनुभव कर रहीं हैं.

प्रकरण १३ चौपाई ४४०

राग - श्रीकालेरो

आवो रे सखियो आपण हमची खुंदिए, वालाजीने भेला लीजे रे ।
रामत करतां गीत ज गाइए, हांस विनोद रंगडा कीजे रे ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे सखियो ! मेरे निकट आ जाओ. हम सभी प्रियतमके साथ उछलें, कूदें और हमची रामत करें. प्रियतम श्यामसुन्दर श्रीकृष्णजीके साथ रामत (खेल) में हास्य-विनोद करते हुए उनके गुण-गानके गीत गाएँ.

मारा वालैया ए रामत घणुं रूडी, हमचडी रलियाली ।
कालेरामां कंठ चढावी, गीत गाइए पडताली ॥ २

हे मेरे प्रियतम ! यह हमचडी रामत तो अत्यन्त मनोरञ्जक एवं रमणीय है. कालेरा राग आलापते हुए और हाथ-पैरसे ताल देते हुए गीत गाएँ.

हमचडीनो अवसर आव्यो, आगे कह्युं नहीं अमे तमने रे ।
एवो समयो अमने क्यांहे न लाधो, हामडी रहीती अमने रे ॥ ३

हमें आज हमचडी (रामत) खेलनेका अवसर मिला है. इससे पूर्व (व्रजमें) इसके लिए आपसे आग्रह नहीं किया था. इससे पहले हमें ऐसा अवसर

कभी प्राप्त नहीं हुआ था. इसलिए हमारी सारी इच्छाएँ हमारे मनमें ही रह गईं थीं.

जे रस छे वाला हमचडीमां, ते तो क्यांहे न दीठो रे ।
जेम जेम सखियो आवे अधकेरी, तेम तेम दिए रस मीठो रे ॥ ४

हे प्रियतम ! इस हमचडी रामतमें जो रस है वह इससे पूर्व कहीं भी नहीं देखा था. जैसे- जैसे सखियाँ प्रेमानन्दमें अधिकाधिक मग्न होती जाएँगी वैसे-वैसे आप मधुर प्रेम रस प्रदान करते जाएँ.

वचन सरवे गाइए प्रेमनां, तेनां अरथ अंगमां समाय ।
ते तां अरथ प्रगट पाधरा, हस्तक वाला संग थाय ॥ ५

हे सखियो ! हम सभी मिलकर प्रेमके गीत गाएँ. जिसका अर्थ भी हम अपने अन्तःकरणमें उतारें. इसका अर्थ तो प्रत्यक्ष और सरल है. अपने प्रियतमके हाथ थामें एवं उनके साथ ही चलते जाएँ.

अमृत पीजे ने चुमन दीजे, कंठडे वालाने वलाइए ।
हमचडीमां त्रण रस लीजे, रेहेस रामतडी गाइए ॥ ६

अमृत रसका पान करें. चुम्बन दें और आलिंगन करें. हमचडीकी रामतमें तीन प्रकारके रसोंका स्वाद लें. चरित्रको मूर्त करना, रामत करना और गीत गाना. (अपने धनीके वचनोंका पालन करना, अपनी श्रद्धा भावना उन वचनोंमें केन्द्रित करना और सदैव उन्हींके आश्रयमें रहना ये तीन प्रकारके रस हमचडी रामत द्वारा प्राप्त हो सकते हैं.)

ए रामतमां विलास जे कीधां, ते कहेवाय नहीं मुख वाणी ।
सरवे सुखडां लई करीने, रह्यां रुदयामां जाणी ॥ ७

इस रामतमें विनोद हास्य और प्रेमका जो आनन्द प्राप्त किया गया है उसका वर्णन मुख द्वारा नहीं हो सकता. अब तो इस प्रकारके अखण्ड सुख हृदयस्थ ही कर लिए हैं.

जेटलां वचन गायां अमे रमतां, ते सरवेनां सुख लीधां ।
कहे इन्द्रावती केम कहुं वचने, अनेक सुख वाले दीधां ॥ ८

इन्द्रावती कहती है, प्रियतमके साथ रास लीला करते समय जितने गीत गाए गए उन सबका सुख प्राप्त कर लिया. हमें प्रियतमने अनेक प्रकारके सुख दिए हैं जिनका वर्णन इन वचनोंसे कैसे करूँ ?

प्रकरण १४ चौपाई ४४८

राग : मारु

वाला आपण रमिये आंख मिचामणी, ए सोभा जाय ना कही रे ।
निकुंजनां मंदर अति सुन्दर, आपण छपिए ते जुजवां थई रे ॥ १

हे प्रियतम ! हम सभी मिलकर आँखमिचौलीकी रामत खेलें. इसकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता. निकुंज वनके (लताओं और वृक्षोंके समूहसे बने) मन्दिर अत्यन्त सुन्दर हैं. वहाँ पर हम सभी सखियाँ पृथक्-पृथक् होकर भिन्न-भिन्न स्थानोंमें छिप जाएँ.

एवुं सुणीने साथ सहु हरख्यो, ए छे रामतडी सारी ।
पहेलो दाव अपणमां कोण देसे, ते तमे कहो ने विचारी ॥ २

इन्द्रावतीका यह कथन सुनकर सखियाँ हर्ष विभोर होकर कहने लगीं, यह लीला तो अतीव सुन्दर है. इन्द्रावतीने कहा, हे प्रियतम ! आप विचार कर कहें कि हममें से प्रथम दाँव कौन देगा ?

सहु साथ कहे वालो दाव देसे, पहेलो ते पिउजीनो वारो ।
जो पहेलो दाव आपण देऊं, तो ए झलाय नहीं धुतारो ॥ ३

उस समय सब सखियोंने मिलकर कहा, पहला दाँव प्रियतम ही देंगे. आँखें बन्द कर खेलनेकी प्रथम बारी प्रियतम श्याम सुन्दरकी है. यदि हम प्रथम दाँव लेंगे तो छल कपटमें निपुण श्रीकृष्ण पकड़में नहीं आएँगे.

आवो रे वाला हुं आंखडी मीचुं, आंखडी ते मीचजो गाढो ।
अमे जईने वनमां छपिए, पछे तमे खोलीने काढो ॥ ४

इन्द्रावतीने प्रियतमसे कहा, आइए ! मैं आपकी आँखें बन्द कर देती हूँ.

आप भी अपनी आँखें ठीकसे बन्द रखना. हम सभी वनमें जाकर छिप जाएँगी. इसके बाद आप आँख खोलें और हमें ढूँढ़ें.

सखियो तमे छाना थई छपजो, भूषण ऊंचां चढावो ।
रखे सखी कोई आप झलाओ, मारा वालाजीने खीदडी खुदावो ॥ ५

सखियोंको सावधान करते हुए इन्द्रावती कहती है, हे सखियो ! तुम सभी चुपचाप छिप जाओ. अपने आभूषणोंको ऊपर चढ़ा दो. ध्यान रखना कि हममें-से कोई भी पकड़में न आ जाएँ. आज हमें प्रियतमको इधर-उधर दौड़ाकर थका देना है.

छेलाइए छांना थई छपजो, रखे कोई बोलतुं कांई ।
ए काने सरुओ छे सबलो, हवडा ते आवसे आंहीं ॥ ६

हे सखियो ! तुम चुपचाप (दबे पाँव) छिप जाओ. कोई भी मत बोलना. प्रियतमके कान सुननेमें अत्यन्त तीव्र हैं. वे तुरन्त यहाँ आकर हमें ढूँढ़ लेंगे.

लपतो छपतो आवे छे, सखियो सावचेत थाइए ।
आणीगमां जो आवे वालो, तो इहां थकी उजाइए ॥ ७

प्रियतम छिप-छिपकर आएँगे, इसलिए हे सखियो ! तुम सभी सावधान हो जाओ. यदि प्रियतम श्रीकृष्ण इस ओर आएँ तो तुरन्त ही धीरेसे चलकर दूसरी ओर छिप जाना.

जो कदाच वालो आवे ओलीगमां, तो आपण पैए जैए ।
दाव रहे जो वालाजी उपर, तो फूली अंग न मैए ॥ ८

यदि प्रियतम उस ओर आते हुए दिखाई दें तो तुरन्त ही दौड़कर हमारे निश्चित किए हुए चिह्न पर पहुँच जाना. यदि इस प्रकार प्रियतम पर दाँव लगा रहेगा तो हम सभी प्रसन्नतासे फूले नहीं समाएँगे.

ते माटे सहु आप संभारी, रखे कोई प्रगट थाय ।
जो दाव आपण उपर आवसे, तो ए केमे नहीं झलाय ॥ ९

हे सखियो ! इसलिए अपने आपको संभालना और तुममें-से कोई भी प्रगट

न होना. यदि हमपर दाँव आएगा तो प्रियतम किसी भी प्रकार हमारे हाथोंमें नहीं आ पाएँगे.

अमे निकुंज वनथी निसर्यां, आवी थबकला खाधां ।
वाले वनमां चीमी चीमी, श्री ठकुराणीजीने लाधां ॥ १०

हमने निकुञ्ज वनसे निकलकर निश्चित चिह्न पर पाँव रखा ही था कि प्रियतमने खोजते-खोजते वनमें श्रीश्यामाजीको पकड़ ही लिया.

सखियो जाओ तमे छपवा, हुं दऊं दाव स्यामाजी साटे ।
हुं रमी सुं नथी जाणती, तमे स्याने देओ मुं माटे ॥ ११

इन्द्रावती कहती है, हे सखियो ! तुम सभी वनमें छिपनेके लिए चली जाओ. मैं श्रीश्यामाजीके स्थान पर दाँव दूँगी. श्रीश्यामाजी तुरन्त बोल उठी, क्या मैं खेलना नहीं जानती ? तुम मेरे स्थान पर दाँव क्यों दोगी ?

रामतमां मरजाद म करजो, रमजो मोकले मन ।
नासी सको तेम नासजो, तमे सुणजो सरवे जंन ॥ १२

श्रीश्यामाजी कहती हैं, हे सखियो ! रामत खेलते समय किसी भी प्रकारकी मर्यादाका ध्यान मत रखना. मुक्त मनसे इसका आनन्द लेना. सुनो, जितनी दूर भाग सको उतनी दूर भाग जाओ.

स्यामाजी आंखडी मीचीने ऊभा, सखियो वनमां पसरी ।
सहु कडछीने रमे जुजवा, भूषण लीधां ऊंचा धरी ॥ १३

श्रीश्यामाजी अपनी आँखें बन्द करके खड़ी रहीं. सखियाँ वनमें छिपनेके लिए तितर-बितर हो गईं. सभीने जीतनेके लिए कमर कस ली और आभूषणोंको भी सरकाकर ऊपर तक चढ़ा लिया.

आनंद मांहें सहुए सखियो, पैए जाय उजाणी ।
भूषण न दिए बाजवा, एणी चंचलाई जाय न वखाणी ॥ १४

आनन्दमें मग्न होकर सखियाँ दौड़-दौड़कर निश्चित चिह्न पर पैरसे थप्पा लगातीं हैं और भागते समय आभूषणोंकी खनक भी होने नहीं देतीं. इनके इस चातुर्यका वर्णन नहीं हो सकता.

उलास दीसे अंगों अंगे, श्री स्यामाजीने आज ।
ठेक दई ठकुराणीजीए, जैने झाल्या श्री राज ॥ १५

आज श्रीश्यामाजीका अङ्ग-प्रत्यङ्ग उल्लसित दिखाई देता है. उन्होंने छलांग मारकर बड़ी चतुराईसे प्रियतम श्रीराजजीको पकड़ लिया.

ए रामत घणुं रूडी थई, मारा वालाजीने संग ।
कहे इन्द्रावती निकुंज वन, घणुं रमतां सोहे रंग ॥ १६

इन्द्रावती कहती है, प्रियतमके साथ खेली गई यह रामत बड़े सुन्दर ढंगसे सम्पन्न हुई. इस समय निकुंज वन भी अति सुन्दर लग रहा है.

प्रकरण १५ चौपाई ४६४

राग : अडोल गोरी - चरचरी

सखी व्रषभान नंदनी, कंठ कर क्रस्ननी ।
जोड एक अंगनी, रमती रंगे रास री ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे सखियो ! वृषभान-नन्दिनी श्रीराधाजी श्रीकृष्णके गलेमें बाँहें डाले एकांगी होकर रसपूर्ण रासक्रीड़ा कर रही हैं.

स्याम स्यामाजी जोड सुचंगी, जुओ सकल सुन्दरी ।
सोभा मुखारविंदनी, करे मांहों मांहे हांस री ॥ २

हे ब्रह्मप्रियाओ ! तुम सभी एकत्रित होकर ध्यान पूर्वक देखो. श्याम-श्यामाजीका युगलस्वरूप कितना सुन्दर है ? जब वे दोनों परस्पर हास्य-विनोद करते हैं तो उनके मुखारविन्दकी शोभा अनुपम दिखाई देती है.

भूषण लटके भामनी, कांई तेज करण कामनी ।
संग जोड स्यामनी, वनमां करे विलास री ॥ ३

भामिनी (श्रीश्यामाजी) के आभूषण लटक रहे हैं. उनमें-से ज्योति भी निकल रही है. श्रीश्यामाजी श्रीकृष्णके साथ वनमें विलास कर रही हैं.

पांउ भरे एक भांतसुं, रमती रंगे खांतसुं ।
जुओ सखी जोड कान्हसुं, कांई सुन्दरी सकला परी ॥ ४

दोनों एक साथ डग भरते हुए प्रेमपूर्वक क्रीड़ा कर रहे हैं. हे सखियो ! श्रीकृष्ण और श्रीश्यामाजीकी जोड़ीको तो देखो, यह जोड़ी कितनी सुन्दर दिखाई दे रही हैं.

फरती रमे फेरसुं, सुन्दरबाई घेरसुं ।
हजार वार तेरसुं, आवी वालाजी पास री ॥ ५

एक दूसरेके साथ रामत खेलती हुई सखियाँ प्रियतम एवं सुन्दरबाईको चारों ओरसे घेर लेती हैं. खेलके इस रंगमें डूबकर सुन्दरबाई बारह हजार सखियोंको बुलाकर प्रियतमके साथ रामत खेलने आती है.

वल्लभे लीधी हाथसुं, सुन्दरबाई बाथसुं ।
रामत करे निघातसुं, जोरे मूकावे हाथ री ॥ ६

प्रियतम श्रीकृष्णने सुन्दरबाईका हाथ पकड़ कर बाँहोंमें भर लिया और रामत खेलने लगे. परन्तु सखियोंने बलपूर्वक हाथ छुड़ा लिया.

बेहुगमां बे भामनी, वचे कान्ह कंठे कामनी ।
कंठ बांहोंडी बंने स्यामनी, एम फरत प्राणनाथ री ॥ ७

दो सखियोंके मध्यमें श्रीकृष्ण हैं, उन्होंने उन दोनोंके गलेमें बाँह डाली हुई है. उन दोनों सखियोंकी भुजाएँ भी श्रीकृष्णके गलेमें हैं. इस प्रकार प्राणनाथ (श्रीकृष्णजी) रामत करते हुए घूम रहे हैं.

आखल पाखल सुन्दरी, केटलीक कंठे बांह धरी ।
एक ठेकती फरती भमरी, एम रमत सकल साथ री ॥ ८

(श्रीकृष्णके) चारों ओर सखियाँ हैं. उनमें-से कई सखियाँ एक दूसरेके गलेमें बाँहें डाले घूम रहीं हैं. इनमें कोई सखी छलाँग मारकर दूसरी सखीको पकड़ लेती है तो कोई गोल-गोल घूमती है. इस प्रकार सभी सखियाँ परस्पर रामत कर रहीं हैं.

झणके झण झांझरी, घूंघरी घमके मांझ री ।
कडलां बाजे मांहें कांबीरी, बिछुडा स्वर मिलाप री ॥ ९

नूपुर और काँबीकी झनकार साथ ही साथ निकल रही है. अंगुलियोंमें पहनी

हुई मुद्रिकाएँ भी उनके साथ अपना स्वर मिला रहीं हैं. सखियोंके चरणोंमें पहने हुए आभूषण झाँझरी, घुँघरीकी मधुर झङ्कार हो रही है. बीच-बीचमें कड़े और कड़ियोंकी घुँघुरु घमक रहीं हैं.

धमके पांव धारुणी, रमती रास तारुणी ।
फरती जोड फेरणी, न चढे कोणे स्वांस री ॥ १०

सखियाँ रासमें मग्न हैं और उनके पाँवकी धमकके कारण धरती भी गूञ्ज उठी है. सखियोंकी जोड़ियाँ वर्तुलाकार घूमकर नाच रहीं हैं तथापि किसीकी साँस नहीं फूलती.

चंद चाल मंद थई, जोई सनंधे थकत रही ।
गत मत भूली गई, देखी थयो उदास री ॥ ११

श्रीकृष्ण और सखियों (ब्रह्मात्माओं) की इस रास लीलाको देखकर चन्द्रमाकी गति धीमी पड़ गई मानो चन्द्रमा थक गया हो. वह अपनी गति और मतिको भी भूल गया है. इस रास मण्डलकी अनुपम शोभा देखकर (इस विचारसे कि वह स्वयं इस रासलीलामें सम्मिलित नहीं हो सका) वह उदास हो गया है.

आनंद घणो इन्द्रावती, बांहोंडी कंठ मिलावती ।
लटकती चाले आवती, वालाजी जोडे जास री ॥ १२

इन्द्रावती आनन्दसे आत्म-विभोर हो गई है. परस्पर गलेमें बाँहें डालकर मटकती हुई प्रियतमके पास पहुँच जाती है.

प्रकरण १६ चौपाई ४७६

राग : सिंधुडो

ओरो आव वाला आपण फूदडी फरिये, फरिए ते फेर अपार ।
फरतां फरतां जो फेर आवे, तो बांहोंडी म मूकसो आधार ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम धनी ! आप हमारे पास आएँ. हम दोनों फूदड़ीकी रामत खेलें. खेलते हुए यदि आपको चक्कर आने लगे तो भी आप मेरी बाँह मत छोडना.

बाहोंडी मूकसो तो अडवडसुं, त्यारे हांसी करसे सहु साथ ।
ते माटे बल करीने रमजो, फरतां न मूकवो हाथ ॥ २

यदि आप हाथ छोड़ देंगे तो हम दोनों लड़खड़ाकर गिर पड़ेंगे और सखियाँ उपहास करेंगी. इसलिए उत्साहके साथ खेलें और घूमते हुए हाथ न छोड़ें.

तमे तो वालाजी फूदडी फरो छो, पण फरो छो आप अंग राखी ।
ए रामतडी करतां मारा वालैया, फरिए पाछां अंग नाखी ॥ ३

हे प्रियतम ! आप फिरकी (फूदड़ी) खेलते हैं तो अपने अंगोंको बचाए रखते हैं किन्तु इस रामतमें तो शरीरकी चिन्ता किए बिना घूमना चाहिए.

जुओ रे सखियो तमे आ जोड फरतां, रामत करे घणे बल ।
इन्द्रावतीनां तमे अंगडां जो जो, मारा वालाजीसुं फरे केवे बल ॥ ४

हे सखियो ! फूदड़ी रामत खेलते हुए मेरी (इन्द्रावती) और प्रियतमकी युगल जोड़ीको देखो. मैं (इन्द्रावती) किस प्रकार आवेशमें आकर घूम रही हूँ. आप सभी मेरे (इन्द्रावतीके) अंगोंको देखें कि मैं अपने प्रियतमके साथ कैसे सुन्दर ढंगसे घूम रही हूँ.

जुओ रे सखियो एम गातां फरतां, वालाजीने दऊं चुमन ।
भंग न करुं फेर फूदडी केरो, तो देजो स्याबासी सहु जन ॥ ५

हे सखियो ! इस प्रकार घूमते-फिरते, गीत गाते हुए यदि मैं वालाजीको चूम लूँ और रामतमें भी विघ्न पड़ने न दूँ तो तुम सभी मिलकर मुझे साधुवाद देना.

फरतां फूदडी लीधी कंठ बांहोंडी, वली फरे छे तेमनां तेम ।
दई चुमन ने थया जुजवा, वली फरे ते फरतां जेम ॥ ६

इस प्रकार कहकर इन्द्रावती सखी गोल-गोल घूमती हुई प्रियतमके गलेमें बाँह डालकर चक्कर लगा रही है. तत्पश्चात् प्रियतमको चूम कर उनसे अलग होकर पुनः फिरकी करने लगती है.

एम अंग वालीने रमजो रे सखियो, तो कहुं तमने स्या ।
एम लटके रंग लेजो वचमां, तो हुं तमारडी दास ॥ ७

इन्द्रावती पुनः सखियोंसे कहती है, इस प्रकार तुम भी अपने अंगोंको झुकाकर इस फिरकीकी रामतमें घुमाओगी तो मैं तुम्हारी प्रशंसा करूँगी और बीच-बीचमें मटकते हुए मेरे जैसा आनन्द लेनेमें यदि तुम सफल हो जाओ तो मैं तुम्हारी दासी बन जाऊँगी.

हुं तो साचुं कहुं रे सखियो, तमने तो कांईक मरजाद ।
साचुं कहे अने प्रगट रमे, इन्द्रावती न राखे लाज ॥ ८

मैं तो सत्य कह रही हूँ, हे सखियो ! तुम संकोच कर रही हो, किन्तु सत्य कहनेमें तथा प्रत्यक्ष रूपसे खेलनेमें इन्द्रावती तो लज्जाका अनुभव नहीं करती है.

प्रकरण १७ चौपाई ४८४

राग : केदारो

भूलवणीनी रामत कीजे, वाला तमे अम आगल थाओ रे ।
दोडी सको तेम दोडजो, जोइए अम आगल केम जाओ रे ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम ! अब भूल-भूलैयाका खेल खेलें. आप हमसे आगे हो जाएँ. जितना दौड़ सकें उतना दौड़ें. देखना है कि आप हमसे आगे कैसे निकल सकते हैं ?

भूलवणीमां भूलवजो, देजो वलाका अपार ।
भूलवी तमारी हुं नव भूलुं, तो हुं इन्द्रावती नार ॥ २

भूल-भूलैयाके इस खेलमें आप हमें चाहे जितना भूलाएँ, चक्कर काटें और दाँव दें. फिर भी यदि आपको मैं नहीं भूलूँगी तभी आपकी अर्द्धाङ्गना इन्द्रावती कहलाने योग्य बनूँगी.

जुओ रे सखियो वाले भूलवी मुने, पण हुं केमे नव टली ।
अनेक वलाका दीधां मारे वाले, तो हुं मली ने मली ॥ ३

देखो सखियो ! प्रियतम धनीने मुझे कई प्रकारसे भूलावेमें डालनेका प्रयास किया किन्तु मैं उनसे अलग नहीं हुई. उन्होंने अनेक दाँव-पेच खेलकर चक्कर कटवाकर मुझे भूलावेमें डालनेका प्रयत्न किया फिर भी मैं उनके पीछे लगी ही रही.

रहो रहो रे वाला मारे वासे थाओ, हुं तम आगल थाऊं ।
साची तो जो भूलवुं तमने, मारा साथ सहुने हंसावुं ॥ ४

हे प्रियतम ! आप रुकें और मेरे पीछे हो जाएँ, अब मैं आपके आगे दौड़ती हूँ. यदि मैं आपको भूलावेमें डाल दूँ तभी सच्ची अर्धांगिनी मानी जाऊँगी और आपको भूलावेमें डालकर मैं मेरी सखियोंको हँसाऊँगी.

सखियो तमे सावचेत थाजो, रखे कोई मूकतां हाथ रे ।
हवडा हरावुं मारा वालाजीने, जो जो तमे सहु साथ रे ॥ ५

हे सखियो ! तुम सब सावधान हो जाओ. एक दूसरेका हाथ नहीं छोड़ना. देखना मैं अभी प्रियतमको हरा देती हूँ.

भूलीस मा रे वचिखिण वाला, आवी मारे वासे वलगो ।
अनेक वलाका जो हुं दऊं, पण तुं म थाइस अलगो ॥ ६

हे मेरे विचक्षण स्वामी ! आप भूलना नहीं. अब मेरे पीछे हो जाइए. यदि मैं अनेक दाँव लगाऊँ तो भी आप मुझसे अलग नहीं होना.

एक वलाका मांहें रे सखियो, वालो भूल्या ते प्रथम मूल ।
दिए सखी ताली पडी आलोटे, हंसी हंसी आवे पेट सूल ॥ ७

हे सखियो ! मेरे एक ही दाँवमें प्रियतम पहली बार ही भूल गए. इसे देखकर सखियाँ तालियाँ बजाकर हँसने लगीं और हँसते-हँसते गिर गईं. वे इतनी हँसी कि पेटमें दर्द होने लगा.

सहु साथ मलीने साबत कीधुं, इन्द्रावती विविध विसेक ।
घणी थै रामत ने वली थासे, पीउ भूलवतां राखी रेख ॥ ८

सब सखियोंने मिलकर प्रमाणित किया कि इस रामतमें इन्द्रावती अधिक चतुर है. ऐसी रामतें बहुत हुईं और आगे भी होंगी किन्तु इसमें इन्द्रावतीने श्रीकृष्णको भूलावेमें डालकर अपने वचन पूर्ण किए.

प्रकरण १८ चौपाई ४९२

राग : कल्याण चरचरी

आज राज पूरण काज, मन मनोरथ सुन्दरी ।
मन मनोरथ सुन्दरी, सखी मन मनोरथ सुन्दरी ॥ १

हे सखियो ! आज श्रीराजजी (श्रीकृष्णजी) हमारे सभी कार्य पूरे करेंगे. आज हमारी मनोकामनाएँ पूरी होंगी.

विध विधना विलास, मगन सकल साथ ।
मरकलडे करे हांस, रेहेस रामत विस्तरी ॥ २

विभिन्न प्रकारके आनन्द और हास्य विनोदके वातावरणमें समस्त सखियाँ मग्न हो गईं हैं. इस प्रकार मन्द-मन्द मुस्कराते हुए, हँसते हुए रहस्यमय रामतोंका विस्तरण कर रहे हैं.

कह्यो न जाय आनंद, अंग न माय उमंग ।
विकसियां अमारा मन, रहियो सरवे हरवरी ॥ ३

उन रामतोंके आनन्दका वर्णन नहीं हो सकता है. हमारे अंगोंमें भी उत्साह और उल्लास नहीं समाता है. हमारा मन कमलकी भाँति विकसित हो ऊठा है. सब सखियाँ उन्मत्त और आतुरतासे अधीर हो गईं हैं.

आ समेनुं वृंदावन, जुओ रे आ सोभा चंद ।
फूलडे अनेक रंग, रमे साथ परवरी ॥ ४

इस समयका वृन्दावन और चन्द्रमाकी शोभाको तो देखो. वृन्दावनमें अनेक प्रकारके पुष्प खिले हुए हैं तथा श्रीकृष्ण अपनी आनन्दस्वरूपा सखियोंके

साथ शान्तिपूर्ण ढँगसे रासलीला कर रहे हैं.

काबर कोयल स्वर, कपोत घूमे चकोर ।
मृगला वांदर मोर, नाचत फेरी फरी ॥ ५

काबर (पक्षी विशेष) और कोयल अपने-अपने मधुर स्वरोंमें गान कर रहे हैं. कबूतर तथा चकोर मुखरित होकर घूम रहे हैं. सखियों तथा प्रियतमकी रामतोंको देखकर मृग, बन्दर और मोर घूम-घूमकर नाच रहे हैं.

स्यामनां उलासी अंग, उलट अमारे संग ।
मांहों मांहें मकरंद, व्यापियो विविध पेरी ॥ ६

श्रीकृष्णके अंग प्रत्यंगमें आनन्द भरा हुआ है. वही उत्साह और आनन्द हमारे अन्दर भी है. प्रियतम तथा सखियोंके पारस्परिक मन्द-मन्द हास्यकी सुरभि चारों ओर विभिन्न रूपोंमें फैल रही है.

रामत करे कामनी, विलसतां वाधी जामनी ।
सखी सखी प्रते स्याम घन, दिए सुख दया करी ॥ ७

समस्त ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजीके साथ खेल रहीं हैं. इस दिव्य रासको देखकर रात्रि भी रुक गई है. प्रत्येक सखीके साथ श्रीकृष्ण अलग-अलग रूप धारण कर उन्हें उपकृत कर रहे हैं.

रमतां दिए चुमन, एक रस जुवती जन ।
करी जुगत नौतन, चितडां लीधां हरी ॥ ८

रामत करते हुए वे चुम्बन भी देते हैं. इस खेलमें सब सखियाँ एकाकार हो गईं हैं. प्रियतमने नईं नईं युक्तियोंसे सखियोंके चित्त चुरा लिए हैं.

कंठ बांहों वली वली, अनेक विधे रंग रली ।
लिए अमृत मुख मेली, पिए रस भरी भरी ॥ ९

एक दूसरेके गलेमें बाहें डाल-डालकर विभिन्न रीतिसे आनन्दित होती हुई सखियाँ मुख मिलाकर अमृतपान करतीं हैं और इस रसको भर-भरकर पीतीं हैं.

रस घणो उपजावती, सखी मीठडे स्वर गावती ।
नव नवा रंग ल्यावती, इन्द्रावती अंग धरी धरी ॥ १०

इस प्रकार रामतमें अनेक प्रकारके रस उत्पन्न करातीं हैं. सब सखियाँ मधुर कण्ठसे गातीं हैं तथा नए नए रंग लातीं हैं. इन्द्रावती इन सब अखण्ड सुखोंको अपने अंगोंमें धारण करती है.

प्रकरण १९ चौपाई ५०२

रागः पंचम मारु

रामत गढ तणी रे, हाथ मांहें हाथ दीजे ।
बल करीने सहु ग्रहजो बांहोंडी, तो रामत रस लीजे ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे सखियो ! अब हम गढकी रामत खेलें. एक दूसरेके हाथ पकड़कर एक घेरा बना लें. हाथ अच्छी तरहसे पकड़ें ताकि इस रामतका रसपूर्वक आनन्द ले सकें.

प्रथम पाधरुं कहुं रे सखियो, ए रामत छे मदमाती ।
दोडी न सके तेणी बांहोंडी न छूटे, ते आवसे पाछल घसडाती ॥ २

हे सखियो ! पहले ही स्पष्ट बता दूँ कि यह गढ़की रामत अतीव मस्त है. (प्रेममें लीन होकर ही खेली जा सकती है) यदि कोई दौड़नेमें असमर्थ हो तो भी हाथ नहीं छोड़ना. अन्यथा वह भी घिसटती हुई पीछे-पीछे चली आएगी.

ते माटे बंध बांहों खरो ग्रही, करजो जोरमां जोर ।
पछे दोडसो त्यारे नहीं रे कहेवाय, थासे अति घणो सोर ॥ ३

इसलिए हाथके बन्धन ठीकसे बाँध लेना और फिर ज्यादासे ज्यादा जोर लगाना. दौड़ते समय बहुत ही शोर होगा. उस समय किसी भी प्रकारकी

सूचना सुन नहीं सकोगी.

पहेली चाल चालो कीडीनी, हलवे पगलां भरजो ।
पछे वली कांइक अधकेरां, वधतां वधतां वधजो ॥ ४

सर्व प्रथम चींटीकी चाल चलो अर्थात् धीरे धीरे कदम रखो. पश्चात् धीरे-धीरे कदम बढ़ाते जाओ. इस प्रकार अपनी गतिको बढ़ाते हुए आगे बढ़ो.

वली कांइक व्रध पामतां, मचकासुं महालजो ।
हजी लगे आकला म थाजो, लडसडती चाल चालजो ॥ ५

पुनः अपनी गति बढ़ाते हुए मचलते हुए चलना. साथ ही गति बढ़ाते हुए व्याकुल भी मत होना और मदमस्त चालसे आगे बढ़ती चली जाना.

हवे कांइक पग भरजो प्रगट, सावचेत सहु थाजो ।
साथ सकल तमे आप संभाली, मुखडे पुकारीने गाजो ॥ ६

अब कुछ प्रत्यक्ष कदम बढ़ाओ और सब कोई सावधान हो जाओ. स्वयंको संभालते हुए सावधान होकर आगे बढ़ते हुए रामतका गीत गाना शुरु करो.

लटके चटके छटके दोडजो, रखे पग पाछां देतां ।
हांसी छे घणी ए रामतमां, दोड तणो रस लेतां ॥ ७

गति बढ़ाकर विविध चाल चलकर (लटक, मटककर) दौड़ना आरम्भ कर दो. पीछे मत रहना. याद रखना, इस रामतमें दौड़का आनन्द लेते समय यदि लड़खड़ा गए तो बड़ी हँसी होगी.

कहे इन्द्रावती ए रामतडी, मारा वालाजी थै अति सारी ।
दोड करतां तमे पाछुं नव जोयुं, अमे बांहोंडी न मूकी तमारी ॥ ८

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम ! यह रामत तो बहुत ही अच्छी हुई. दौड़ते समय आपने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा और हमने भी इस स्पर्धामें आपका हाथ नहीं छोड़ा.

प्रकरण २० चौपाई ५१०

राग : श्री काफी

रामत करतालीनी रे, एमां छे वलाका विसमां ।
बेसवुं उठवुं फरवुं रमवुं, ताली लेवा साम सामां ॥ १

हे सखियो ! यह रामत परस्पर हाथकी ताली देकर खेलनेकी है. इसमें कठिन एवं विशेष दाँव हैं. इसके अतिरिक्त बैठना, उठना, गोल-गोल घूमना और दाँव लेते-लेते एक दूसरेको ताली देते जाना होता है.

तम सामी अमे ऊभा रहीने, हाथ ताली एम लेसुं ।
बेसतां उठतां फरतां, सामी ताली देसुं ॥ २

आपके समक्ष खड़ी रहकर मैं विभिन्न प्रकारसे हाथकी ताली लेती रहूँगी. उठते, बैठते और घूमते समय सामने भी ताली दूँगी.

बेसतां ताली दईने बेसिए, उठतां लीजे ताली ।
फरतां ताली दई करीने, वचे रामत कीजे रसाली ॥ ३

बैठते समय ताली देकर बैठना और उठते समय भी ताली देकर उठना. गोल घूमते समय भी ताली देकर घूमना इस प्रकार बीच-बीचमें रसपूर्ण रामत खेलते जाना है.

रामत करतां अंग सहु वालिए, सकोमल जोड सोभंत ।
अंग वाली वचे रंग रस लीजे, भंग न कीजे रामत ॥ ४

इस रामतको खेलते समय अंगोंको अच्छी तरह मोड़ो ताकि लचकते समय कोमल अंगोंकी शोभा अनुपम बन जाए. इस प्रकार अंग मोड़ते समय बीच-बीचमें प्रेमका आनन्द लेते जाना और यह भी देखना कि रामतमें कहीं विक्षेप (भंग) न पड़े ?

ए रामतडी जोई करीने, सहु साथने वाध्यो उमंग ।
सहु कोई कहे अमे एणी पेरे, रमसुं वालाजीने संग ॥ ५

इस रामतकी विशेषता देखकर सब सखियोंके मनमें उत्साह बढ़ा. इसके बाद सब सखियाँ कहने लगीं, हम भी प्रियतमके साथ इस प्रकार रामत खेलनेका आनन्द लेंगी.

साथ कहे वाला रमो अमसुं, ए रामत सहु मन भावी ।
सहुना मनोरथ पूरण करवा, सखी सखी प्रते लेओ रंग आवी ॥ ६

सखियाँ कहती हैं, हे प्रियतम ! अब आप हमारे साथ खेलें. इस रामतने सभी सखियोंका मन मोहित कर लिया है. इसलिए सबकी मनोकामना पूरी करनेके लिए आप प्रत्येक सखियोंसे आकर आनन्द लें.

हाथ ताली रमे छे वालो, सघलीसुं सनेह ।
रंगे रमाडे राससमां, वालो धरी ते जुजवा देह ॥ ७

हाथसे ताली देकर प्रियतम सब सखियोंके साथ प्रेमपूर्वक रामत करते हैं. और अनेक स्वरूप धारण कर प्रियतम श्रीकृष्णजी आनन्दके साथ सबको राससमें निमग्न कर देते हैं.

कहे इन्द्रावती ए रामतडी, मारा वालाजी थै अति सारी ।
सघली संगे रमियां रंगे, एक पीउ एक नारी ॥ ८

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम ! यह रामत तो बहुत ही अच्छी हुई क्योंकि आपने सब सखियोंके साथ अलग-अलग स्वरूप धारण कर सबको आनन्द पूर्वक खेलाया.

प्रकरण २१ चौपाई ५१८

राग : केदारो - चरचरी

उमंगे उदयो साथ, रंगे तो रमवा रास ।
राससमां करुं विलास, सखियो सुख लेत री ॥ १

इन्द्रावती कहती है, आनन्द पूर्वक रास लीला करते हुए सबके हृदयमें ऐसा उत्साह भी जागृत हुआ कि रासलीलाके साथ-साथ विलास भी करें. (श्रीकृष्णजीने कृपा की और वे सबके साथ अनेक स्वरूप लेकर खेलने लगे). इस प्रकार सखियाँ श्रीकृष्णजीके साथ अखण्ड सुख प्राप्त करतीं हैं.

भोमनी किरण भली, आकासे जईने मली ।
चांदलो न जाय टली, उजलीसी रेत री ॥ २

नूरमय रास भूमिकी प्रकाशमयी किरणें अत्यन्त तेजस्वी हैं तथा भूमिसे उठकर आकाशमें जा मिलतीं हैं. आकाशमें उदित चन्द्रमा भी मानों स्थिर हो गया है और वहाँकी रेतके एक एक कण भी प्रकाशसे जगमगा रहे हैं.

रुत निस नवो सस, दीसे सहु एक रस ।
प्रकासियो दसो दिस, न कहेवाय संकेत री ॥ ३

इस रास मण्डलमें शरद ऋतु, रात्रि तथा नूतन चन्द्र ये सब एकाकार हो गए हैं. नूरमय प्रकाशके कारण दसों दिशाएँ प्रकाशमान हो गईं हैं. इसकी उपमा किसी भी संकेतके द्वारा नहीं दी जा सकती.

सुं कहुं वननी जोत, पत्र फूल झलहलोत ।
वृंदावन उदोत, सामग्री समेत री ॥ ४

अखण्ड वृन्दावनके प्रकाशकी तेजस्विताके विषयमें क्या कहना ? पत्ते, फूल, फल ये सभी जगमगा रहे हैं. वृन्दावनकी सभी वस्तुएँ प्रकाशसे चमक रहीं हैं.

पसु पंखी अनेक नाम, तेनां वचित्र चित्राम ।
निरखतां न भाजे हाम, जुजवी जुगत री ॥ ५

इस वृन्दावनमें विभिन्न प्रकारके पशु-पक्षी हैं. इन पशुओंके अंगों पर और पक्षियोंके पंखों पर विविध प्रकारकी चित्रकारी अंकित है. इन्हें अलग-अलग कोणोंसे देखने पर भी मन नहीं भरता है.

रमतां भूषण किरण, ब्रह्मांड लाग्यो फिरण ।
सखियो उलासी तन, कमल विकसेत री ॥ ६

रामतके समय सखियोंके आभूषणोंसे निकलती हुई किरणें समग्र ब्रह्माण्डको प्रकाशमान बना रहीं हैं. जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि मानों ब्रह्माण्ड ही

घूम रहा है. सखियोंके आनन्दित मन और शरीर ऐसे उन्मत्त हो गए हैं कि मानों हृदयरूपी सरोवरमें कमल खिले हुए हैं.

एणी पेरे करूं रामत, मनडां थया महामत ।
खंत खरी लागी चित, वालाजीसुं हेत री ॥ ७

इन्द्रावती कहती है, इस प्रकार प्रियतमके साथ रामत करते-करते मेरा मन महा मस्तीसे झूम उठा. इतना ही नहीं पुनः इस रामतको रचानेकी तीव्र इच्छा मनमें लगी हुई है और इसमें प्रियतमके प्रति प्रेम और स्नेहकी सच्ची लगन जुड़ी हुई है.

प्रेमना प्रघल पूर, सूरो मांहें अति सूर ।
पिए रस मेली अधुर, सघली सुचेत री ॥ ८

सखियोंके हृदयमें प्रेमका प्रचण्ड प्रवाह उमड़ रहा है. वीरोचित भावसे इन्द्रावती सखी सभी सखियोंमें अग्रणी है. अधरके साथ अधर मिलाकर रसामृतका पान कर रही है. सब सखियाँ सावधान और सचेत हैं.

इन्द्रावती करे रंग, रामत न करे भंग ।
रमती फरती वाला संग, छबके चुमन देत री ॥ ९

इन्द्रावती प्रियतमके साथ आनन्द विहार कर रही है. खेलते समय लीला भंग होने नहीं देती. प्रियतमके साथ घूमते समय उछलती हुई चतुराईसे उन्हें चुम्बन देती है.

राग : सिंधुडो

ओरो आव वाला आपण घूमडले घूमिए, वाणी विविध पेरे गाउं ।
अनेक रंगे रस उपजावीने, मारा वालैया तुंने वालेरी थाउं ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम ! आप मेरे पास आइए. हम मिलकर फिरकी (घूमकर खेली जानेवाली रामत) का खेल खेलें. खेलते हुए मैं अलग अलग प्रकारके गीत गाऊँगी. हे प्रियतम ! मैं प्रेमरस और आनन्दको जागृत कर

आपकी प्रिय अंगना बन जाऊँ.

घोघरे घाटडे स्वर बोलाविए, बीजा अनेक स्वर छे रसाल ।
झीण झीणा झीणा झीण झीणेरडा, मीठा मधुरा वली रसाल ॥ २

कण्ठसे तीव्र स्वर निकालें. अन्य भी अनेक (मध्यम और मन्द) रसमय स्वर हैं. ये स्वर बहुत ही सूक्ष्म, सुरीले, अत्यन्त बारीक और मधुर लयसे परिपूर्ण हैं.

घूमडलो घूमवानो रे वालैया, मुने छे अति घणो कोड ।
साम सामा आपण थैने घूमिए, मारा वालैया आपण बांधीने होड ॥ ३

हे प्रियतम ! आपके साथ फिरकीकी रामत खेलनेकी तीव्र इच्छा मेरे मनमें दीर्घ कालसे है. इसलिए हम दोनों आमने-सामने आकर होड़ लगाएँ. देखें इस खेलमें कौन विजयी होता है.

ए रामत अमे रबदीने रमसुं, साथ सकल तमे रहेजो जोई ।
हुं हारुं तो मों पर हंसजो, मारो वालोजी हारे तो हंसजो मा कोई ॥ ४

यह रामत हम शर्त लगाकर खेल रहीं हैं. इसलिए हे सखियो ! तुम सब इसे देखो. यदि मैं हार जाऊँ तो तुम सब मुझ पर हँसना. किन्तु यदि प्रियतम हार जाएँ तो कोई भी उनका उपहास मत करना.

घूमडलो वालो मोसुं घूमे छे, वचन मीठडां गाय ।
अंग वस्तर भूषण मीठडां लागे, वचे वचे कंठडे रे वलाय ॥ ५

प्रियतम मेरे साथ फिरकीका खेल खेल रहे हैं. साथ ही साथ मधुर ध्वनिसे गीत भी गाते जा रहे हैं. उनके अंग, आभूषण, वस्त्र सुन्दर और मनमोहक दीखते हैं. इस बीचमें वे मेरे गलेमें बाहें डालकर रामत करते हैं.

पीउ हारया हारया कहे स्वरमां, हांसी हरषे उपजावे ।
हुं जीती जीती कहे घोघरे, साथ सहुने हंसावे ॥ ६

रामत खेलते-खेलते इन्द्रावती ''पीऊ हार गए, पीऊ हार गए'' ऐसा निराला स्वर निकाल कर हास्य और हर्षका वातावरण फैलाती है. दूसरी ओर ''मैं जीत गई, मैं जीत गई'' ऐसा ऊँचा स्वर निकालकर सब सखियोंको हँसाती है.

ए रे घूमडले हांसी रे साथने, रहे नहीं केमे झाली ।
लडथडे पडे भोम आलोटे, हंसी हंसी पेट आवे रे खाली ॥ ७

इस फिरकीके रामतके कारण सखियाँ बेहद हँस रहीं हैं. उनका हास्य रोकने पर भी नहीं रुकता. हँसते हँसते कोई झूमने लगती है, कोई पृथ्वी पर गिर पड़ती है तो कोई पृथ्वी पर गिरकर लोटने लगती है. हँस-हँस कर सब सखियोंके पेटमें बल पड़ जाते हैं.

ए रामतडी जोई कहे सखियो, इन्द्रावतीए राखी रेख ।
साथ सहुने वाली घणुं लागी, मारा वालाजीने वली विसेख ॥ ८

इस रामतको देखकर सब सखियाँ कहतीं हैं, इन्द्रावतीजी ! आपने अपने वचनका पालन किया और बाजी जीत ली. इस प्रकार वह समस्त सखियोंको भी अत्यन्त प्रिय लगी है एवं प्रियतमको तो वह इससे भी अधिक प्रिय लगी है.

राग : वसंत

कोणियां रमिए रे मारा वाला, गाइए वचन सनेह ।
मनसा वाचा करी करमना, सीखो तमने सीखवुं एह ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम ! अब हम "कोणिया" (कुहनीके संकेत द्वारा खेली जाने वाली) रामत खेलें. साथ-साथ मधुर स्वरसे गीत भी गाएँ. आप मन वचन और कर्मसे यह रामत खेलना सीखें. मैं आपको यह सिखाती हूँ.

ए रामतडी जोरावर रे, दीजे ठेक अंग वाली ।
रमतां सोभा अनेक धरिए, गाइए वचन कर चाली ॥ २

इस रामतमें अधिक ताकत चाहिए. इसमें अंगोंको मोड़कर ऊँचाई पर कूदना पड़ता है. फिर खेलते समय अंगोंको विभिन्न प्रकारसे मोड़ देना पड़ता है.

जिसके कारण इसकी शोभा बढ़ जाती है. साथ-साथमें गीत भी गाते चलें.

करे रमिए कोणियां रमिए, चरण रामतडी कीजे ।
वली रामतमां विलास विलसी, प्रेम तणां सुख लीजे ॥ ३

हाथसे ताली देकर तथा कुहनी द्वारा संकेत देकर खेलते जाएँ. पाँवसे एक साथ आगे बढ़कर या पङ्क्तिबद्ध एक साथ पीछे हटकर चलते रहें साथ ही आनन्द बढ़ानेके लिए विलास भी करते रहें और प्रेमका अखण्ड सुख भी प्राप्त करें.

जुओ रे सखियो वालो कोणियां रमतां, भांत भांत अंग वाले ।
सखियो रामत बीजी करी नव सके, उभली जोड निहाले ॥ ४

देखो रे सखियो ! प्रियतम विविध प्रकारसे अंगोंको मोड़कर कुहनीकी रामत करते हैं. इस मनोहर दृश्यको देखकर सखियाँ दूसरा खेल ही नहीं खेल पा रहीं हैं. केवल खड़ी-खड़ी प्रियतम और इन्द्रावतीकी जोड़ीको निहार रहीं हैं.

कर मेलीने कोणियां रमिए, कोणी मेलीने करे ।
अंगडा वाले नयणा चाले, मनडां सकलनां हरे ॥ ५

हाथसे ताली देकर कुहनीकी रामत करते हैं. तो कभी-कभी कुहनीसे संकेत देना छोड़कर मात्र हाथोंसे तालियाँ देते हैं. अंगोंको मोड़ रहे हैं, नेत्र-कटाक्ष भी चल रहा है. इस प्रकार वे सबके मन हर लेते हैं.

ए रामतना रस कहुं केटला, थाय निरतना रंग ।
हस्त चरणनां भूषण सरवे, बोले बंनेनां एक बंग ॥ ६

इस रामतसे प्राप्त रसानन्दका वर्णन किस प्रकार करूँ ? इसमें तो नृत्यके कई प्रकार हैं. हाथ पाँव और शरीरके सब आभूषण एक साथ एक ही स्वरमें बोल उठते हैं.

लटके गाए लटके नाचे, लटके मोडे अंग ।
लटके रामत रेहेस लटके, लटके सांई लिए संग ॥ ७

लटक-मटक कर गाते हैं, लटक-मटक कर नाचते हैं एवं लटक-मटक कर

शरीरके अंगोंको मोड़ते हैं और लटकेके साथ रहस्यमयी लीलाएँ करते हैं. इस लटकती हुई चालमें प्रियतम भी साथ हैं.

मारा वालाजीमां एक गुण दीसे, जाणे रामत सीख्या सहु पेहेली ।
इन्द्रावतीमां बे गुण दीसे, एक चतुर ने रमतां गेहेली ॥ ८

सखियाँ कहतीं हैं, प्रियतममें एक गुण दिखाई दे रहा है. मानों वे पहली बार रामतें सीख रहे हों. जबकि इन्द्रावती सखीमें तो दो गुण दिखाई देते हैं एक तो वह चतुर है, दूसरा खेलते समय प्रेममें उन्मत्त हो जाती है.

राग : कालेरो

आवो वाला, रामत रासनी कीजे रे ।
आपण कंठडे बांहोंडी, कां न लीजे रे ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम ! आइए, अब रासके खेल खेलें. हम एक दूसरेके गलेमें बाँह डालकर क्यों न खेलें ?

आ वेष केम करी ल्याव्या रे वालैया, अमने थयो अति मोह ।
खिण एक अमथी अलगां म थाजो, अमे नहीं खमाय रे विछोह ॥ २

हे प्रियतम ! आप कैसा मनोहर वेश धारण कर आए हैं ? इससे तो हमारा मन मोहित हो गया है. इसलिए आप क्षण मात्रके लिए भी हमसे अलग न हों क्योंकि मैं यह वियोग सहन नहीं कर पाऊँगी.

आ वेष अमने वालो घणुं लागे, वेष रसाल अति रंग ।
द्रष्ट थकी अलगां म थाजो, दीठडे ठरे सरवा अंग ॥ ३

हे प्रियतम ! आपका यह वेश मुझे अत्यधिक प्रिय लगता है. यह तो सुन्दर छटासे पूर्ण और आनन्ददायक है. इसे देखकर हमारे अंग-प्रत्यंग शीतल हो रहे हैं. इसलिए आप हमारी दृष्टिसे बिलकुल अलग न हों.

आ वेष अमने गमे रे वालैया, लीधो कोई मोहन वेल ।
नयणे पल न आवे रे वालैया, रूप दीसे रंग रेल ॥ ४

यह वेश हमें बहुत ही अच्छा लग रहा है. मानो आप मोहनवेल (मोहक

स्वरूप) हो गए हैं. इसे देखकर हमारी पलकें झपकती ही नहीं. इस वेषमें आपका रूप अद्भुत बना हुआ है.

रामत करतां रंग सहु कीजे, खिण खिण आलिंघन लीजे ।
अधुर तणो जो रस तमे पीओ, तो अमारां मन रीझे ॥ ५

रामत खेलते समय सब प्रकारसे आनन्द-विलास कीजिए. प्रत्येक क्षणमें आलिंगन करते हुए यदि आप हमारे अधरामृतका पान करेंगे तो हमारे मन तृप्त हो जाएँगे.

उलट अंग न माय रे वालैया, कीजे रंग रसाल ।
पल एक अमथी न थाओ जुआ, रखे कंठ बांहोंडी टाल ॥ ६

हे प्रियतम धनी ! हमारे अंगोंमें आनन्द समाता नहीं है. आप हमारे साथ रंग विलास करते समय हमें पूरा-पूरा आनन्द दीजिए. क्षण मात्रके लिए भी हमसे अलग न हों. हमारे गलेसे अपनी बाहें मत हटाइए.

तम सामुं अमे ज्यारे जोइए, त्यारे जोर करे मकरंद ।
बाथो बथिया लीजे रे वालैया, एम थाय आनंद ॥ ७

सम्मुख खड़े होकर जब हम आपको देखतीं हैं तो हमारी कामनाएँ जोर पकड़ने लगतीं हैं. हे प्रियतम ! आप दृढ़तासे हमें गले लगा लीजिए ताकि हमारा मन आनन्दित रहे.

रामत करतां आलिंघन लीजे, ए पण मोटो रंग ।
साथ देखतां अमृत पीजे, एम थाय उछरंग ॥ ८

रामत करते समय आलिंगन लेना यह भी बड़ा आनन्ददायी होता है. सखीवृन्दकी उपस्थितिमें ही अधरामृत पीजिए. इससे हमारे हृदयमें उत्साह और उल्लास बढ़ेगा.

आलिंघन लेतां अमृत पीतां, विनोद कीधां घणां हांस ।
कठण भीडा भीड न कीजे रे वालैया, मुझाय अमारा स्वांस ॥ ९

आलिंगन एवं अमृत पान करते समय आनन्दके साथ-साथ आपने हास्य

और विनोद भी किया. किन्तु हे प्रियतम ! आलिंगन करते समय हमें इतना न दबा देना कि हमारे श्वाँस रुँधने लगे और हम घबरा जाएँ.

प्रकरण २५ चौपाई ५५२

छंदनी चाल

सखी एक भांत रे, मारो वालोजी करे छे वात रे ।
लई गले बाथ रे, आणी अंग पास रे, चुमन दिए चितसुं ॥ १

हे सखी ! प्रियतम एक ओर बातें करते जा रहे हैं. दूसरी ओर गलेमें बाहें डालकर आलिंगन भी कर रहे हैं साथ ही प्रेम पूर्वक चुम्बन भी करते जा रहे हैं. प्रियतमकी यह शैली अनोखी है.

मारा वाला मांहें कल, अंगे अति बल ।
रमे घणे बल, रंग अविचल, वल्लभ अति वितसुं ॥ २

मेरे प्रियतममें कुशलता भरी हुई है और उनके अंग-प्रत्यंगमें अतीव बल भी भरा हुआ है. रामत करते समय वे पूरी शक्तिसे खेलते हैं. उनका प्रेम-विलास अविचल और अखण्ड है. प्रियतम धनी अति आवेग और आवेशमें आकर खेलते हैं.

आ जुओ तमे स्याम, करे केवा काम ।
भाजे भूसी हाम, राखे नहीं माम, हरवे घणे हितसुं ॥ ३

श्यामसुन्दरको तो देखो वे कैसे युक्तिपूर्वक काम कर रहे हैं ? हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं. हमारी एक भी इच्छा अधूरी नहीं रह जाती. हमारी व्यथाको प्रेमसे हर लेते हैं.

मारा वालासुं विलास, स्यामा करे हास ।
सूधो रंग पास, करी विस्वास, जुओ जोपे खंतसुं ॥ ४

प्रियतमके साथ आनन्द विलास करती हुई श्रीश्यामाजी विनोदपूर्वक हँसती हैं. उनका प्रेम सरस, सहज और समरस है. दोनोंके बीच पूर्ण रूपसे समझौता हुआ है. हे सखियो ! तुम इस युगलको उत्साह पूर्वक देखो.

स्यामा स्याम जोड, करतां कलोल ।
रमे रंग रोल, थाय झक झोल, बंने एक मतसुं ॥ ५

श्यामा और श्यामकी जोड़ी अनुपम है. आनन्द प्रमोद करते हुए वे विहार करते हैं. प्रेमके प्रबल आवेगमें दोनों प्रवाहित हो गए हैं. पारस्परिक प्रेमकी खींचातानी करते हैं. उनकी युगल जोड़ी सुसंवादिता पूर्वक रास खेलती है.

बेहु सरखा सरूप, मेली मुख कूप ।
पिए रस घूंट, अमृतनी लूंट, लिए रे अनितसुं ॥ ६

दोनों स्वरूप (श्याम और श्यामाजी) की शोभा समान है. दोनों परस्पर मुख मिलाकर रसके घूँट पीते हैं. इस प्रकार अमृतके समान अचिन्त्य प्रेम कर रहे हैं.

आलिंघन लिए, रंग रस पिए ।
बंने सुख लिए, लथबथ थिए, आ भीनी स्यामा पतसुं ॥ ७

दोनों परस्पर आलिंगन देकर प्रेमके अमृत रसका पान करते हैं. इस प्रकार दोनों अखण्ड सुख प्राप्त करते हैं. प्रेममें आनन्द-विभोर होकर श्रीश्यामाजी अपने प्राणप्रिय श्यामसुन्दरके प्रेमके रंगमें भीग गई है.

इन्द्रावती वात, सुणो तमे साथ ।
जुओ अख्यात, बंने रलियात, रमतां इजतसुं ॥ ८

इन्द्रावती कहती है, हे सखियो ! मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनो इन दोनोंकी जोड़ी अनुपम है. दोनों प्रेमके आनन्दमें सराबोर होने पर भी मर्यादामें रहकर खेल रहे हैं.

प्रकरण २६ चौपाई ५६०

राग : सामेरी

रामत आंबानी कीजे मारा वालैया, आवी ऊभा रहो लगतां रे ।
सखियो ज्यारे बल करे, त्यारे रखे कांई तमे डगतां रे ॥ १

हे मेरे प्रियतम ! अब हम आमवृक्षकी रामत खेलें. आप हमारे समीप आकर

खड़े रहिए. जब सखियाँ आम तोड़नेके बहाने आपको बलपूर्वक हिलाएँ तो जरा भी टससे मस न होइए.

तमे आंबला थड थाओ, अमे चरण झालीने बेसुं ।
मारो आंबो दहींए दूधे सीचुं, एम कहेसुं प्रदखिणा देसुं ॥ २

हे प्रियतम ! आप हमारे लिए आम्र वृक्ष बनिए और हम सब सखियाँ आपके चरण पकड़ कर बैठेंगी. तत्पश्चात् हम 'आम्रवृक्षको दूध दधिसे सींचेंगी' इस प्रकार कहते हुए आपकी परिक्रमा करेंगी.

केटलीक सखियो आंबलो सींचे, अमे चरण तमारे वलगां ।
द्रढ करीने अमे चरण ग्रह्यां, जोइए कोण करे अमने अलगां ॥ ३

कितनी सखियाँ प्रेमपूर्वक आम्र वृक्षको सीचेंगी. हम बाकी सब सखियाँ आपके चरण कमलोंको पकड़ कर बैठ जाएँगी. हम दृढ़ता पूर्वक आपके चरण पकड़ती रहेंगी. देखें हमें कौन अलग करता है ?

बल करीने तमे ऊभा रहेजो, खससो तो हँससे तम पर ।
जो अमे चरण ग्रही नव सकुं, तो सहु कोई हँससे अम पर ॥ ४

हे प्रियतम ! आप दृढ़ताके साथ आमके पेड़के रूपमें खडे रहिए. यदि आप अपने स्थानसे विचलित होंगे तो सभी आपके ऊपर हँसेंगी कि आप हार गए और यदि हम आपके चरण दृढ़ता पूर्वक पकड़ न सकेंगी तो अन्य सखियाँ हमारी हार (पराजय) देखकर हम पर हँसेंगी.

ते माटे रखे चरण चाचरो, थिर थै ऊभा रहेजो ।
जो जोर घणुं आवे तमने, त्यारे तमे अमने कहेजो ॥ ५

इसलिए आप चरणोंको शिथिल न होने दें. स्थिर होकर खड़े रहें. इस प्रकार खड़े रहने पर सखियोंकी ओरसे आपके ऊपर यदि अधिक दवाब पड़े तो आप हमें कह दीजिए.

अनेक सखियो चरणे वलगी, खसवा नहीं दीजे रे ।
वालो सखिओ सहु थाजो सावचेत, ओलियो उपर सामी हांसी कीजे ॥ ६

तत्पश्चात् अनेक सखियाँ आकर चरणोंसे लिपट गईं और परस्पर कहने लगीं,

देखना चरणोंको थोड़ा-सा भी हटने न देना. हे प्रियतम एवं सखियो ! तुम सब सावधान हो जाओ. विपक्षकी सखियों पर सब मिलकर हँसी उड़ाएँ.

जे सखी साची थैने वलगी, ते तां वछोडतां नव छूटे रे ।
ओलियो सखियो बल करी करी थाकी, ते तां उठाडतां नव उठे रे ॥ ७

जो सखियाँ सच्चे हृदयसे प्रियतमके चरणोंमें लिपट कर बैठीं हैं वे तो चरण छुड़ानेके अनेक प्रयत्न करने पर भी नहीं छोड़तीं हैं. विपक्षकी सखियाँ जोर लगाकर थक गईं किन्तु उन्हें अलग न कर सकीं.

जे सखी चरणे रही नव सकी, ते पर हांसी थै अति जोर ।
इन्द्रावती वालो ने सखियो, दिए ताली हांसी करे सोर ॥ ८

जो सखी चरणोंसे लिपटी न रह सकी उनकी बहुत हँसी हुई. इन्द्रावती, प्रियतम और अन्य सखियाँ ताली दे देकर एक दूसरे पर जोर जोरसे हँसने लगीं.

प्रकरण २७ चौपाई ५६८

राग : आसावरी

रामत उडन खाटलीनी, मारा वालाजी आपण कीजे रे ।
रेत रूडी छे आणी भोमे, ठेक मृग जेम दीजे रे ॥ १

हे प्रियतम ! अब हम सब मिलकर उड़न खटोले (लम्बी छलाँग) की रामत खेलें. वृन्दावनकी भूमिकी रेत तो अति सुन्दर है. इसलिए हम उस रेत पर हिरनकी भाँति छलाँगें लगा सकेंगी.

सखियो मनमां आनंदियो, ए रामतमां अति सुख ।
साथ सहु रबदीने रमसुं, मारा वालाजी सनमुख ॥ २

इस बातको सुनकर सभी सखियाँ आनन्दित हो कहने लगीं कि यह रामत बहुत सुखदायी है. इस खेलमें तो हम प्रियतम धनीके साथ होड़ लगाकर खेल सकेंगीं.

पहेलो ठेक दीधो मारे वाले, पछे जो जो ठेक अमारो ।
तो मारा वचन मानजो रे सखियो, जो दउं ठेक वालाजीथी सारो ॥ ३

अब इन्द्रावती कहती है, इस रामतमें सर्व प्रथम प्रियतम छलाँगें लगाएँगें. इसके बाद तुम सभी मेरी छलाँग देखना. मेरी बात पर विश्वास करना, मेरी छलाँग प्रियतमसे कहीं अधिक होगी.

जुओ रे सखियो तमे वालोजी ठेकतां, दीधी फाल अति सारी ।
निसंक अंग संकोडीने ठेक्यां, जाउं ते हुं बलिहारी ॥ ४

हे सखियो ! तुमने देखा न ! प्रियतमने बड़े अच्छे ढंगसे छलाँग लगाई. सचमुच, उन्होंने अपने शरीरको सिकोड़कर अच्छी छलांग लगाई. मैं उनकी इस छलाँग पर सब कुछ न्यौछावर करनेके लिए तैयार हूँ.

हाउं हाउं रे सखियो तमे ठेक वखाण्यो, ए तो दीधो लडसडतां रे ।
एवा तो ठेक अमे सहु कोई देतां, सहेजे रामत करतां रे ॥ ५

बस, बस रे सखियो ! तुमने तो इस छलाँगकी बहुत प्रशंसा की, किन्तु यह छलाँग तो प्रियतमने लड़खड़ाते हुए लगाई थी. ऐसी छलाँगें तो हम खेलते हुए बड़ी सरलतासे लगा लेतीं हैं.

रहो रहो रे सखियो तमे ठेक वखाण्यो, हवे जो जो अमारो ठेक रे ।
एवी तो फाल साथे केटलीक दीधी, तुं तो मोही उडाडतां रेत रे ॥ ६

इन्द्रावती कहती है, सखियो ! अब रुक जाओ प्रियतमके छलाँगकी प्रशंसा भले ही की किन्तु अब मेरी छलाँग तो देखो. सखियोंने इस प्रकारकी कई छलाँगे लगाईं हैं, आपने तो केवल थोड़ी-से रेती ही उड़ाई है.

कोणे हंसिए कोणे वखाणिए, ए रामत थै अति रंग ।
एणी विधे दीधा अमे ठेक, मारा वालाजीने संग ॥ ७

हम किसकी छलाँग पर हँसे और किसकी छलाँगकी प्रशंसा करें ? यह खेल तो बहुत ही अच्छा रहा. इस प्रकार हमने प्रियतमके साथ कई छलाँगे लगाईं.

ए रामतडी जोई करीने, हवे निरतनी रामत कीजे ।
रूडी रामत इन्द्रावती केरी, जेमां साथ वालो मन रीझे ॥ ८

हे सखियो ! यह रामत देखकर अब नृत्यकी रामत खेलें. इन्द्रावतीकी रामत बहुत अच्छी रही है जिससे प्रियतम एवं सखियोंका मन प्रसन्न हुआ.

प्रकरण २८ चौपाई ५७६

राग : कल्याण

वाला तमे निरत करो मारा नाहोजी, अमने जोयानी छे खांत ।
साथ जोई आनंदियो रे, कांई वेष देखी एक भांत ॥ १

इन्द्रावती अपने प्रियतमसे कहती है, हे मेरे वालाजी ! अब आप नृत्य करें, उसे देखनेकी हमारी प्रबल इच्छा है. आपकी अनुपम वेश-भूषाको देखकर सुन्दरसाथ अति आनन्दित हो रहे हैं.

तमे निरत करो रे भामनी, निरत रूडी थाय नार ।
तमे वचन गाओ प्रेमनां, पासे स्वर पूरूं रसाल ॥ २

प्रियतम श्रीकृष्णने इसका प्रत्युत्तर देते हुए कहा, हे सखियो ! तुम सर्वप्रथम नृत्य करो क्योंकि स्त्रियाँ अच्छे ढँगसे नृत्य करतीं हैं. प्रेमके गीत भी गाते रहना. मैं भी उसमें स्वर मिलाकर उसे अधिक रसयुक्त बना दूँगा.

सुणो सुन्दर वल्लभजी मारा, निरत केणी पेरे थाय ।
अमने देखाडो आयत करी, कांई उलट अंग न माय ॥ ३

इन्द्रावती कहती है, हे प्रिय स्वामी ! सुनिए, नृत्य किस प्रकार किया जाता है वह आप अपनी इच्छानुसार करके दिखाइए. इसे देखनेकी हमारी उत्कण्ठा इतनी बढ़ गई है कि हम उसे अंगोंमें समा नहीं पातीं हैं.

जेणी सनंधे पाउं भरो, अने अंग वालो नरम ।
भमरी फरो जेणी भांतसुं, अमे नाचुं फरुं तेम ॥ ४

हे प्रियतम ! जिस प्रकार आप पाँव उठाएँगे अपने कोमल अंगोंको मोड़

लेंगे और घूमेंगे उसे देखकर हम भी आपका अनुकरण करेंगी.

हस्त करी देखाडिए, अने ठमके दीजे पाय ।
वचन गाइए प्रेमनां, कांई तेना अरथ ज थाय ॥ ५

इसलिए आप अपने हाथोंसे कर मुद्राएँ (हावभाव) दिखलाइए. पाँवसे थाप देते जाइए. प्रेमके मधुर गीत गाइए ताकि हमें प्रत्यक्ष रूपसे उन मुद्राओं एवं हाव-भावके अर्थ समझमें आ जाएँ.

कंठ करीने राग अलापिए, कांई स्वर पूरे सकल साथ ।
वेण वेणा रबाबसुं, कांई ताल बाजे पखाज ॥ ६

मधुर स्वरसे किसी भी रागको आलापिए. समस्त सखियाँ भी आपके स्वरमें स्वर मिलाएँगी. वंशी, वीणा तथा सारंगीके स्वरोंके साथ पखावज भी ताल देगी.

करतालमां बाजे झरमरी, श्रीमंडल हाथ ।
चंग तंबूरे रंग मले, वालो नाचे सकल साथ ॥ ७

जब करतालमें लगी हुई झरमरीके साथ वाणीकी मधुर ध्वनि सम्मिलित होती है और हाथमें श्रीमण्डल, वाद्य वीणा हो और ताल देनेके लिए चंग तथा तंबूर मिलकर स्वर निकालते हों तो प्रियतम और समस्त सखियाँ हिल मिलकर नाचने लगेंगे.

भूषण बाजे भली भांतसुं, धरती करे धमकार ।
सबद उठे सोहामणा, उछरंग वाध्यो अपार ॥ ८

नृत्यके समय आभूषण भी स्वरमें स्वर मिलाकर झनझना उठे. पाँवकी इस थिरकनसे धरती धम-धमा उठी. अत्यन्त सुन्दर और मधुर शब्द गूँजने लगे और सबके हृदयमें उत्साह बढ़ने लगा.

निरत करी नरम अंगसुं, कांई फेरी फर्या एक पाय ।
छेक वाले छेलाइसुं, तता थेई थेई थाय ॥ ९

प्रियतम और सखियोंने अपने कोमलांगों द्वारा नृत्य किया, एक पाँव पर

गोल-गोल घूमे. सखियाँ प्रियतमके साथ चतुरतापूर्वक नाचने लगीं जिससे "ता-ता थै-थै" की ध्वनि मुखरित हुई,

एक पोहोर आनंद भरी, कांई रंग भर रमिया एह ।
साथ सकलमां वालेजीए, रमतां कीधां सनेह ॥ १०

इस प्रकार रात्रिके एक प्रहर तक सभीने प्रेमानन्दमें नृत्यकी रामत की. रामत करते हुए प्रियतमने ब्रह्मात्माओंको स्नेहमुग्ध कर दिया.

आनंद घणो इन्द्रावती, वालाजीने लागे पाय ।
अवसर छे कांई अति घणो, वाला रासनी रामत मांय ॥ ११

इस रामतमें इन्द्रावती सखीको अत्यधिक आनन्द प्राप्त हुआ. वह प्रियतमके चरण कमलोंको पकड़कर कहती है, हे प्रियतम ! इस रासकी रामतमें अखण्ड आनन्द प्राप्त करनेका सुन्दर अवसर मिला है.

ते सरवे चित धरी, अमसुं रमो अति रंग ।
कहे इन्द्रावती साथने, रमवानी घणी उमंग ॥ १२

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम धनी ! इन सभी आनन्दमयी बातोंको मनमें धारण कर आप हमारे साथ प्रेमरंगमें मग्न होकर खेलिए क्योंकि समस्त सुन्दरसाथको खेलनेकी उत्कट इच्छा है.

प्रकरण २९ चौपाई ५८८

चरचरी छंद

मृदंग चंग, तंबूर रंग, अति उमंग, गावती सखी स्वर करी ॥ १

मृदङ्ग, चङ्ग और तम्बूरके मिश्रित स्वर रङ्ग ला रहे हैं. उन्हींकी स्वर लहरियोंके साथ ताल-मेल बैठाती हुई सभी सखियाँ उमङ्गपूर्वक गा रहीं हैं.

करताल ताल, बाजे विसाल, वेण रसाल, रमत रास सुन्दरी ॥ २

करतालका ताल भी ऊँचे स्वरोंसे बज रहा है. वंशीके सुरीले स्वरोंके साथ-साथ सखियाँ ताल और स्वर मिलाकर गाते-गाते रास लीला करतीं हैं.

नार सिणगार, भूषण सार, संग आधार, निरत करे सनंध री ॥ ३

सखियाँ सुन्दर शृङ्गार सजकर, सुन्दर आभूषण धारणकर अपने प्रियतम धामधनीके साथ अनेकों प्रकारके नृत्य करतीं हैं.

घम झणाझण, जोड रणारण, विछुडा ठणाठण, छेक वाले फेरी फरी ॥ ४

चरणोंके आभूषण आदि झनझना रहे हैं. चरणोंमें पहनी हुई कड़लियाँ ठनक रहीं हैं. चारों अंगुलियोंमें मुद्रिकाएँ टन-टनकी ध्वनि निकाल रहीं हैं, प्रियतम देहको मोड़कर घूम रहे हैं.

वचन गाय, हस्तक थाय, भाव संधाय, देखाडे वालो खंत करी ॥ ५

सखियाँ मधुर गीत गाकर अपनी हस्त-मुद्राओंके द्वारा भाव प्रदर्शित करतीं हैं. अपने सुन्दर भावोंको सुरोंके साथ मिलाकर अत्यन्त उत्साह पूर्वक प्रियतमको भावमुद्राएँ दिखा रहीं हैं.

हांस विलास, सकल साथ, लेत बाथ, मध्य रामत हेत करी ॥ ६

सखियाँ विनोदके साथ विलास करतीं हैं. खेलते-खेलते बीच-बीचमें एक दूसरेके गलेमें प्रेमपूर्वक बाँहें डालकर आनन्द करतीं हैं.

वेष वसेख, राखी रेख, सुख लेत, बाहंत मुखे वांसरी ॥ ७

प्रियतमकी वेशभूषा अनोखी और मनमोहक है. वे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करते हैं और अखण्ड सुख देते हैं. मुख पर वंशी धारण करके वे उससे मधुर ध्वनि निकाल रहे हैं.

धमके धारुणी, गाजती गारुणी, चांदनी रैणी, जोत करे जामंत री ॥ ८

रास लीलामें नृत्यकी रामत करते समय पाँवकी धमकसे पृथ्वी तथा आकाश गूँजते हैं. सम्पूर्ण कलायुक्त चाँदनीसे रात प्रकाशमान होकर मानों स्थिर हो गई है.

रंग वनमां, सोभित जमुना, पसु पंखीना, सबद रंगे थंत री ॥ ९

वृन्दावन आनन्दसे भर गया है. जमुनाजी शोभा दे रही है. पशु-पक्षियोंकी

मधुर कलरव ध्वनि सुनाई पड़ती है. वनमें चारों ओर चहलपहल मची है.

पसु पंखी, जुए जंखी, मिले न अंखी, सुख देखी रामत री ॥ १०

पशु-पक्षी अधीर होकर नृत्यकी रामत देख रहे हैं. उन्हें देखनेसे सन्तोष नहीं होता इसलिए पलक भी नहीं झपकते हैं.

निरत करे, खंत खरे, फेरी फरे, इन्द्रावती एक भांत री ॥ ११

इन्द्रावती बड़े उत्साहसे कई भाव-भङ्गिमाओंसे नृत्य करती है और गोल-गोल घूमती है.

वालती छेक, अंग वसेक, रंग लेत, छबके चुमन देत री ॥ १२

वह नृत्यकी अलग-अलग भाव-भंगिमा करती हुई, शरीरको छटा पूर्वक मोड़ती हुई, फिरकी करती हुई प्रियतमको चुपकेसे चुम्बन करती है और रामतका आनन्द लेती है.

प्रकरण ३० चौपाई ६००

राग : कालेरो

हमचडी सखी संग रे,
आपण रमसुं नवले रंग, सखी रे हमचडी ॥ (टेक) ॥
ए रामतडी छे अति घणी, करसुं सघली सार रे ।
विविध पेरे सुख दउं रे सखियो, जेम तमे पामो करार रे ॥ १

हे सखियो ! हम सब नए रङ्गमें रङ्गकर हमचड़ी खेलेंगे. वैसे रामतें तो अनेक हैं किन्तु इस रामतके लिए तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई है. प्रियतम श्रीकृष्ण कहते हैं, हे सखियो ! मैं तुम्हें विभिन्न प्रकारके सुख दूँ, जिससे तुम्हें आनन्द प्राप्त हो.

अमने वेण बजाडी देखाडो, जेवो पहेलो वायो रसाल ।
वेण सांभलतां ततखिण वालैया, अमे जीव नाख्या ततकाल ॥ २

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम ! आप हमें मधुर वंशी बजाकर सुनाएँ जैसे

पहले बजाई थी. हे स्वामी ! उस समय हमने आपका वंशीनाद सुनकर अपने मायावी शरीरको तत्काल त्याग दिया था.

जुओ रे सखियो वालो वेण वजाडे, अधुर धरी अति रंग ।
वेण सांभलतां ततखिण तमने, काम वाध्यो सरवा अंग ॥ ३

सखियाँ परस्पर कहती हैं, देखो ! प्रियतम आनन्दमग्न होकर अपने होठों पर वंशी रखकर बजा रहे हैं. वंशीकी ध्वनिको सुनते ही हमारे अंगोंमें रास क्रीड़ाकी कामना बढ़ जाती है.

सुणो रे सखियो हुं वेण वजाडुं, वेण तणी सुणो वाणी ।
खिण एक पासेथी अलगो न करुं, राखुं हैडामां आणी ॥ ४

प्रियतम श्रीकृष्ण कहते हैं, हे सखियो ! मैं वंशी बजाता हूँ तुम इसके स्वर सुनो. मैं तुम्हें क्षण मात्रके लिए भी स्वयंसे अलग नहीं करूँगा अपितु अपने हृदयमें रखूँगा.

उलट तमने अति घणो वाध्यो, वली रंग उपजावुं निरधार ।
जेटली रामत कहो रे सखियो, ते रमाडुं आ वार ॥ ५

हे सखियो ! तुम्हारे हृदयमें जो प्रेम उमड़ रहा है अब उसमें और भी वृद्धि होगी. जितनी भी रामत खेलना चाहो वे सब तुम्हें खेलाऊँगा.

मान घणुं मानवंतियोंने, तामसियों झुंझार ।
प्रेम घणो अंग आ संगे, एणे व्रह नहीं लगार ॥ ६

राजस स्वभाववाली सखियोंको अपने प्रेमका अति गर्व है. तामसी सखियाँ प्रेम सम्बन्धमें आक्रामक बन जातीं हैं. उनके अंग प्रत्यंगमें प्रेम भरा हुआ है इसलिए उन्हें धनीका विरह तनिक भी नहीं है.

तामस मांहें तामसियों, एणी वातडी कही न जाय ।
कहे इन्द्रावती सुणो रे साथजी, वाले एम कीधां अंतराय ॥ ७

तामस स्वभाववाली सखियोंमें प्रेमका तामसभाव प्रबल है जिसका वर्णन नहीं

हो सकता. इन्द्रावती कहती है, हे सुन्दरसाथजी ! सुनिए, प्रियतम इस प्रकारके मधुर वचन कहते कहते अन्तर्धान हो गए.

रामत अंतरधाननी

वृन्दावनमां रामत करतां, जुजवो थयो सरवे साथ ।
वली आवी ततखिण एक ठामे, नव दीसे ते प्राणनो नाथ ।
मारो जीव जीवनजी लई गया, हो स्याम ॥ १

वृन्दावनमें रास लीला करते-करते सब सखियाँ अलग-अलग हो गईं. फिर वे एक स्थान पर एकत्रित हुईं तो देखा कि प्राणनाथ श्रीकृष्ण कहीं दिखाई नहीं दिए. वे विलखती हुई कहने लगीं, हमारे प्राण तो जीवन आधार श्रीकृष्ण ले गए. अब हम क्या करें ?

काया केम चाले तेह रे, कालजडुं कापे जेह रे ।
ऊभी केम रहे देह, बांध्यां जे मूल सनेह ।
त्राटकडे दीधां छेह, मारो जीव जीवनजी लई गया, हो स्याम ॥ २

अब प्रियतम धनीके बिना हमारे शरीर किस प्रकार टिक पाएँगे ? यह वियोग तो हृदयको कम्पायमान कर देता है. जिसके साथ स्नेहकी जड़ें बँधी है उसके बिना यह देह कैसे रहेगी. प्रियतमने तो हमसे सम्बन्ध विच्छेद कर दिया. मेरे प्राणको तो श्रीकृष्ण ले गए. अब उनके वियोगमें यह शरीर कैसे टिक पाएगा ?

सखियो मलीने विचार ज कीधो, पूछिए स्यामाजी किहां छे स्याम ।
रामतनो रंग हवडा वाध्यो, मन मांहें हुती मोटी हाम ॥ ३

तब सब सखियोंने मिलकर विचार-विमर्श करके निश्चय किया, चलो हम सब श्रीश्यामाजीसे पूछें कि श्रीश्यामसुन्दर कहाँ गए है ? रामत खेलनेका आनन्द अब बढ़ ही रहा था और हमारे मनमें खेलकी तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई थी.

साथ माहों मांहें खोलता, नव दीसे स्यामाजी त्यांहे ।
त्यारे जुजवी दोडी जोवा वनमां, ए बंने सिधाव्यां क्यांहे ॥ ४

सखियाँ परस्पर मिलकर उन्हें ढूँढ़ रहीं हैं, श्री श्यामाजी भी वहाँ दिखाई नहीं दी. इसलिए सब अलग-अलग होकर वनमें दौड़ती हुई ढूँढने लगीं कि श्याम और श्यामाजी दोनों कहाँ गए हैं ?

जोवंतां जुजवा वनमां, स्यामाजी लाध्यां एक ठाम ।
स्यामाजी स्याम किहां छे, मांरुं अंग पीडे अति काम ॥ ५

जब अलग-अलग होकर ढूँढते-ढूँढते वनमें आगे बढ़ रही थी तो श्रीश्यामाजी एक स्थान पर मिल गईं. सखियाँ उनसे पूछने लगीं कि श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण कहाँ हैं ? उनके बिना हमारे अङ्ग तो प्रबल कामनाओंसे पीड़ित हो रहे हैं.

साथ स्यामाजीने देखी करी, मनडां थयां अति भंग ।
स्यामाजी तिहां बोली न सके, जेमां एवडो हुतो उछरंग ॥ ६

जब सखियोंने श्रीश्यामाजीको ध्यानपूर्वक देखा तो उनका मन अति उदासीन हुआ. जिसके हृदयमें प्रियतमके प्रेमका इतना बड़ा भंडार भरा हुआ था, वे श्रीश्यामाजी तो (मूर्च्छित होकर पड़ी हुई थीं इसलिए) कुछ भी बोल न सकीं.

घडी एक रहीने स्यामाजी बोल्यां, आपणने मूक्यां निरधार ।
दोस दीठो जो आपणो, तो वनमां मूक्या आधार ॥ ७

एकाध घड़ी इस प्रकार व्यतीत होने पर श्रीश्यामाजी बोली कि निश्चित रूपसे प्रियतम हम सबको छोड़कर चले गए हैं. उनको हममें कोई दोष दिखाई दिया होगा इसलिए उन्होंने हम सबको इस प्रकार वनमें छोड़ दिया.

वचन सांभलतां स्यामाजी केरां, खिण नव लागी वार ।
जे जेम आवी दोडती, ते तां पाछी पडी ततकाल ॥ ८

श्रीश्यामाजीके वचनोंको सुनते ही क्षणमात्रका विलम्ब किए बिना ही जो सखी जिस अवस्थामें दौड़ती हुई आईं थी उसी अवस्थामें धरती पर गिर पड़ी.

तेमां केटलीक सखियो ऊभी रही, उठाडे सरवे साथ ।
आपणने केम मूकसे, मारा प्राणतणो जे नाथ ॥ ९

उनमें-से कई (तामसी) सखियाँ खड़ी रह गईं. वे गिरी हुई सखियोंको उठा रही थीं और विश्वास पूर्वक कहतीं थीं कि प्रियतम हम सबको कैसे छोड़ सकेंगे ? वे तो हमारे प्राणोंके नाथ और जीवनके आधार हैं.

सखी वृन्दावन आपण खोलिए, इहां ज होसे आधार ।
जीवतणों जीवन छे, ते तां नहीं रे मूके निरधार ॥ १०

हे सखियो ! चलो इस वृन्दावनमें ढूँढ़े. वे यहीं कहीं होंगे. वे तो हमारे जीवन और प्राणोंके आधार हैं, निश्चय ही हमें नहीं छोड़ेंगे.

सखी ए रे आपणने मूकी गयो, एणे दया नहीं रे लगार ।
हवे आंही थकी केम उठिए, मारा जीवन विना आधार ॥ ११

राजस स्वभाववाली सखियाँ कहने लगीं, हे सखी ! प्रियतम हमें छोड़कर चले गए. उनके मनमें हमारे लिए तनिक भी दया नहीं है. अब हम अपने जीवके जीवन श्रीकृष्णके बिना यहाँसे किस प्रकार उठेंगीं ?

सखी केही रे सनंधे चालिए, मारा लई गयो ए प्राण ।
सखियो अमने सुं रे कहो छो, अमे नहीं रे अवाय निरवाण ॥ १२

दूसरी सखी कहती है, हे सखी ! हम यहाँसे उठकर कैसे चलें ? उन्होंने तो हमारे प्राण ही हर लिए हैं. हे सखी ! तुम हमें क्या कह रही हो ? हमसे बिलकुल चल कर ढूँढ़ा ही नहीं जाता.

मारो जीव कलकले आकलो, अने काया थरके अंग ।
कहोजी अवगुण अमतणां, जे कीधां रंगमां भंग ॥ १३

कोई सखी कहती है, मेरे प्राण तो तड़प-तड़प कर व्याकुल हो गए हैं और शरीर भी काँप रहा है. हे सखी ! कहो तो सही हममें कौन-से अवगुण हैं जिनके कारण वे हमारे रङ्गमें भङ्ग डाल कर चले गए हैं ?

सखी दोस हसे जो आपणो, तो वाले कीधुं एम ।
चित ऊपर जो चालतां, आपण कहेतां करतो तेम ॥ १४

तब कोई तामस स्वभाववाली सखी कहती है, हे सखियो ! हमारा कोई न

कोई दोष होगा ही. तभी तो प्रियतमने ऐसा व्यवहार किया. यदि हम उनके मन और इच्छाके अनुसार कार्य करतीं तो वे जैसा हम कहतीं वैसा ही करते.

हाय हाय रे दैव तें सुं करियुं, केम रहे रे कायामां प्राण ।
जीवनजी मूकी गया, नव कीधुं तें अमने जाण ॥ १५

कोई सखी कहती है, हे विधाता ! तुमने यह क्या किया ? हमारे शरीरमें प्राण कैसे टिकेंगे ? जीवन आधार प्रियतम हमें छोड़कर चले गए और तुमने हमें इसकी सूचना तक नहीं दी ?

हाय हाय रे विधाता पापणी, तें कां रे लख्यां एवां करम ।
दैवतणी तुंने बीक नहीं, जे तें एवडो कीधो अधरम ॥ १६

हे दुष्ट विधाता ! यह बड़े दुःखकी बात है कि तुमने हमारे भाग्यमें ऐसा क्यों लिखा. तुझे दैवका भी डर नहीं है कि तूने इतना बड़ा अधर्म कर दिया ?

हाय हाय रे दैव तुंने सुं कहुं, तें वारी नहीं विधाता ।
एणी पापणिए एम केम लख्युं, वालो मूकसे कलकलतां ॥ १७

हाय हाय रे दैव ! तुझे हम क्या कहें. तुमने विधाताको ऐसा करनेसे क्यों नहीं रोका. इस पापी विधाताने ऐसा क्यों किया कि प्रियतम हमें बिलखते हुए छोड़ कर चले गए.

सखी गाल दउं हुं दैवने, के दउं विधाता पापिष्ट ।
एणे लेख अमारा एम केम लख्या, एणे दया नहीं ए दुष्ट ॥ १८

हे सखी ! हम दैवको गाली दें या पापी विधाताको. उसने हमारे भाग्यमें इस प्रकारका वियोग क्यों लिखा ? उस दुष्टने तो हमारे प्रति तनिक भी दया भाव नहीं दिखाया है.

सखी दैव विधाता सुं करे, एम रे थैयो तमे कांए ।
दोस दीजे कांई आपणो, जे चूक्या सेवा मांए ॥ १९

तब तामस स्वभाववाली सखी कहती है, इस बारेमें दैव या विधाता क्या

करे ? तुम ऐसी क्यों बन गई हो ? यह दोष तो हमारा स्वयंका है कि हमने उनकी सेवा करनेमें कहीं त्रुटि की होगी.

सखी सेवा चूक्या हसुं आपण, पण वालो करे एम केम ।
आपणने एम रोवंतां, वालो मूकी गया छे जेम ॥ २०

तब राजस स्वभाववाली सखी कहने लगी, यदि हमारी सेवामें कुछ भी कमी रह गई हो तो भी प्रियतमने ऐसा क्यों किया ? वे हम सभीको इस प्रकार विलाप करते हुए क्यों छोड़ गए ?

सखी चूक्या हसुं घणुं आपण, हवे लागी कालजडे झाल ।
फिट फिट भूंडा पापिया, तुं हजीए न आव्यो काल ॥ २१

हे सखी ! हमसे उनकी सेवामें त्रुटि हुई होगी. अब कलेजेमें दावाग्नि उठ रही है. हे दुष्ट काल ! तुझे वारंवार धिक्कार है कि तू अभी तक हमें क्यों नहीं उठा ले गया ?

एम रे सखियो तमे कां करो, बहेनी द्रढ करो कां न मन ।
आपणने मूके नहीं, जेहनुं नाम श्री क्रस्न ॥ २२

तामस स्वभाववाली सखियाँ कहतीं हैं, हे सखियो ! तुम अपने मनको इस प्रकार शिथिल क्यों बना रही हो ? तुम अपने मन को दृढ़ नहीं बनाती ? जिनका नाम ही श्रीकृष्ण है वे हमें नहीं छोड़ सकते.

सखी जोइए आपण वनमां, एम रे थैयो तमे कांय ।
जेनुं नाम श्री क्रस्नजी, ते बेठा छे आपण मांय ॥ २३

हे सखियो ! चलो हम सब मिलकर उन्हें वनमें ढूँढ़ें. तुम सब इस प्रकार निराश क्यों हो रही हो ? जिनका नाम श्रीकृष्ण है वे तो हमारे बीच (हृदय) में ही विराजमान हैं.

सुन्दरबाई कहे साथने, सखी एम रे थैयो तमे कांय ।
केड बांधो तमे कामनी, आपण जोईए वृन्दावन मांय ॥ २४

सुन्दरबाई सखियोंसे कहती है, हे सखियो ! तुम सब इस प्रकार निरुत्साहित

क्यों हो गई हो ? धैर्य रखो और कमर कसो. हम सब मिलकर वृन्दावनमें उनकी खोज करें.

वन वन करीने खोलिए, वालो बेठा हसे जांहे ।
आपणने मूकी करी, जीवनजी ते जासे क्यांहे ॥ २५

हम वन-वनमें घूमकर प्रियतमको ढूँढ़ें. वे कहीं भी बैठे होंगे. हमें छोड़कर हमारे जीवनाधार कहाँ जाएँगे ?

एक पडे एक लडथडे, एक आंसुडां ढाले अपार ।
केम चाले काया बापडी, मारा जीवन विना आधार ॥ २६

कोई (सात्विक स्वभाववाली) सखी आकुल व्याकुल होकर धरती पर गिरती है तो दूसरी (राजस स्वभाववाली) सखी पागलकी भाँति लड़खड़ा रही है. तीसरी (तामस स्वभाववाली) रोते-रोते अविरल अश्रु गिरा रही है. वह बेचारी जीवनाधार प्रियतमके बिना कैसे कदम उठा पाएगी ?

कठण वेला मुने जाय रे बहेनी, जेम रे निसरतां प्राण ।
काया एम थरहरे, अमे नहीं रे गोताय निरवाण ॥ २७

तब राजसी सखी कहती है, हे सखियो ! हमारे लिए यह समय अति कठिन है. ऐसा अनुभव होता है कि मानों प्राण शरीरसे बाहर निकल रहे हैं. शरीर भी इस प्रकार काँप रहा है. इसलिए निश्चय ही हम प्रियतमको नहीं ढूँढ़ पाएँगीं.

एम रे सखियो तमे कां करो, ए छे आपणो आधार ।
नेहेचे आपणने नहीं रे मूके, तमे जीवसुं करो रे करार ॥ २८

तामस स्वभाववाली सखीने कहा, हे सखियो ! तुम सभी ऐसा क्यों कर रही हो ? प्रियतम श्रीकृष्ण हमारे आधार हैं. निश्चय ही वे हमें त्याग नहीं सकते. तुम सब धैर्य धारण करो.

विकल थै पूछे वेलडीने, सखी क्यांहे रे दीठा तमे स्याम ।
जीव अमारा लई गया, मननी न पोहोंती हाम ॥ २९

इस प्रकार व्याकुल होकर सखियाँ लताओंसे पूछतीं हैं, तुमने हमारे श्यामको

कहीं देखा है ? वे हमारे प्राणोंको लेकर कहीं चले गए हैं. अभी तो हमारे मनकी चाह भी पूरी नहीं हुई.

ए हंसे छे आपण उपर, जो न देखे आपणमां सनेह ।
जुओ वीटी रही छे वरने, अधखिण न मूके एह ॥ ३०

वृक्षोंसे लिपटी हुई लताओंको मौन देखकर सखियाँ एक दूसरेसे कहतीं हैं, ये तो हमारा परिहास कर रहीं हैं क्योंकि वे हममें प्रेमका अभाव देखतीं हैं. देखो तो सही, ये तो अपने पति (वृक्ष) से कैसे लिपटी हुईं हैं. एकक्षणके लिए भी उसे नहीं छोड़तीं हैं.

जुओ रे वलाका एहना, अंगो अंग वाल्यां छे बंध ।
तो हंसे छे आपण उपर, आपण कीधी न एह सनंध ॥ ३१

हे सखी ! इस लताके दाँवको तो देखो. उसने अङ्ग-प्रत्यङ्गोंको मरोड़कर वृक्षको कैसे बाँध रखा है. इसलिए वह हम पर हँस रही है और कहती है कि हम अपने प्रियतमको उसकी तरह दृढ़तासे बाँध न सकीं.

आ वचन बोले वेलडी, सखी मांहों मांहें करे विचार ।
ए खबर न दिए कोणे कामनी, पोते राची रही भरतार ॥ ३२

अपनी भावनाओंको व्यक्त करते हुए व्याकुल सखियाँ एक दूसरीसे कहतीं हैं कि यह लता इस प्रकार बोलती है. इससे पता चलता है कि वह प्रियतमके कोई भी समाचार हमे नहीं देना चाहती, क्योंकि वह स्वयं अपने प्रियतमके रंगमें रंगकर आनन्द लूट रही है.

वन गेहेवर अमे जोइयुं, आगल तो दीसे अंधार ।
हवे ते अमे किहां जोइए, मुने सुध नहीं अंग सार ॥ ३३

हम सबने इस सघन वनको तो पूरी तरहसे देख लिया. इससे आगे तो अब अन्धकार दिखाई देता है. अब प्रियतमको कहाँ ढूँढेंगी ? हमें तो अपने तन मनकी भी सुधि नहीं है.

सखी पगलां जुए प्रीतम तणां, साथ खोले वृन्दावन ।
नेहेचे आपणने मूकी गयो, हजी पिंडडां न थाय पतन ॥ ३४

हे सखियो ! उठो अब हम प्रियतम श्रीकृष्णके चरणचिह्नोंको देखते हुए आगे

बढ़ें. इस प्रकार सखियोंने समग्र वृन्दावनमें ढूँढ़ा और कहने लगीं कि वे अवश्य ही हमे छोंड़कर चले गए हैं, परन्तु आश्चर्य है कि यह देह अभी भी यथावत् पड़ी है.

सखी नेहेचल नेहडा आपणां, त्रूटे नहीं केम तेह ।
आणे अंगे मलसुं प्रीतम, सखी आस न छूटे एह ॥ ३५

तामसी सखियाँ कहतीं हैं, हे सखी ! हमारा प्रेम अखण्ड है. वह किसी भी प्रकार टूटने वाला नहीं है. इसी शरीर द्वारा प्रियतम धनीसे हमारा मिलन होगा. इसलिए उनसे मिलनेकी आशा नहीं छूटती है.

हाय हाय रे बहेनी हुं सुं करुं, मुने भोम न दिए विहार ।
संधान सरवे जुआ थया, ए रहेसे केम आकार ॥ ३६

राजस स्वभाववाली सखी कहती है, हाय रे बहन ! मैं क्या करूँ ? यह धरती भी मुझे अपने भीतर समा नहीं लेती. शरीरके सन्ध-सन्ध अलग हो गए हैं. अब यह शरीर कैसे टिकेगा ?

कलकले मांहें कालजुं, चाली न सके देह ।
प्राण जीवनजी लई गया, जे बांध्या मूल सनेह ॥ ३७

कलेजा भीतरसे आकुल व्याकुल हो रहा है. शरीर चलनेमें नितान्त असमर्थ है. प्राण तो प्राणाधार प्रियतम ले गए हैं जिनसे मेरा मूल स्नेह (अखण्ड प्रेम) आज तक बँधा हुआ था.

तेमां केटलीक सखियो ऊभी रही, मांहों मांहें करे विचार ।
कलकलतां केम मूकसे, कांई आपणने आधार ॥ ३८

उनमें कितनी सखियाँ खड़ी रहीं और परस्पर विचार करने लगीं कि हमें व्याकुल करके हमारे प्राणाधार हमें छोड़कर कैसे जा सकते हैं ?

आझो आवे मुने धणी तणो, एम वालो करसे केम ।
वली रामतडी कीजिए, आपण पहेली करतां जेम ॥ ३९

किसी एकने कहा, मुझे तो धनी पर पूरा विश्वास है वे ऐसा क्यों करेंगे ? मुझे तो ऐसा लगता है कि हमें पूर्ववत् रामत प्रारम्भ कर देनी चाहिए.

केम रे रामतडी कीजिए, काया केम रे चाले विना जीव ।
रामतडी केम थायसे, उठाय नहीं विना पीव ॥ ४०

तब दूसरी सखी कहने लगी, हे बहन ! प्राण बिना हम रामत कैसे करें ? बिना प्राणका यह शरीर किस प्रकार चलेगा ? प्रियतम धनीके बिना हम उठ भी तो नहीं पातीं, फिर रामत कैसे होगी ?

एम रे सखियो तमे कां करो, ए छे आपणो आधार ।
मूल रामतडी कीजिए, ए नहीं रे मूके निरधार ॥ ४१

यह सुनकर अन्य सखियाँ कहने लगीं, हे सखियो ! तुम ऐसा क्यों कह रही हो ? प्रियतम तो हमारे प्राणाधार हैं. सर्व प्रथम हम मूल रामत (व्रजलीला) करें. निश्चय ही प्रियतम हमारा साथ नहीं छोड़ेंगे.

साथ कहे छे अमने रे बहेनी, इन्द्रावती कहो छो सुं ।
आणे नयणे न देखुं वालैयो, तिहां लगे केम करी उठुं ॥ ४२

सब सखियाँ मुझे कहतीं हैं, हे बहन इन्द्रावती ! तुम क्या कह रही हो ? जब तक इन आँखोंसे प्रियतमके दर्शन न हों तब तक हम कैसे उठ पाएँगी ?

एणे समे इन्द्रावती बाईए, तामसियों भेली करी ।
पडे राजसियों स्वांतसियो, करे ऊभियो अंक भरी ॥ ४३

उस समय इन्द्रावती सखीने तामसी सखियोंको एकत्रित किया. भूमि पर पड़ी हुई राजस तथा सात्विक गुणवाली सखियोंको गले लगाकर उठाया.

आझो आणो तमे धणी तणो, हाकली चित करो ठाम ।
रामत करतां आवसे, सुन्दरबाई झाले बांह ॥ ४४

तुम सब धामधनी पर विश्वास रखो और अपने चित्तको व्याकुल मत करो. रामत करने पर प्रियतम अवश्य पधारेंगे ऐसा मुझे विश्वास है. अब सुन्दरबाई सबके हाथ पकड़ती है.

मांहों मांहें विनोद घणो, उठो रामत कीजे रंग ।
तरत वालोजी आवसे, आपण जेनां अंग ॥ ४५

सुन्दरबाई कहती है, हे सखियो ! उठो और परस्पर आनन्द विनोद करते

हुए हम रामतको प्रारम्भ करें. हम जिसकी अङ्गरूपा हैं वे प्रियतम श्रीकृष्ण तुरन्त ही आ पहुँचेंगे.

लीला कीधी जे वालैए, आपण लीजे तेहना वेष ।
अग्यारे वरस लगे जे रम्यां, कांई रामत एह वसेष ॥ ४६

प्रियतम श्रीकृष्णजीने जो लीलाएँ कीं हैं हम सभी उन्हींका वेश धारण करें. ग्यारह वर्ष तक व्रजमण्डलमें जो रामतें की उसकी विशेषता ही कुछ और ही है.

प्रकरण ३२ चौपाई ६५३

राग : सामेरी

आनंदे रोतां रमिए एम, जेने कहिए ते लछण प्रेम ।
तेनां उडी गया सरवे नेम, रमतां कीधां कै चेहेन ॥ १

(प्रियतम श्रीकृष्णजीकी लीलाओंका अनुकरण करनेसे आनन्द प्राप्त होता है तथा उनकी अनुपस्थितिमें रोना भी आनन्ददायी है.) इस प्रकार आनन्दसे रोते-रोते हमें रामत करनी है. यह प्रेमकी पराकाष्ठा है और इसे ही प्रेमलक्षणा भक्ति कहा है. इसमें सब प्रकारके नियम समाप्त हो जाते हैं. इस प्रकार विरहमें खेलते सखियोंने विविध प्रकारकी लीलाएँ कीं हैं.

सखी प्रेम ध्वजा कहेवाय, जेनुं प्रगट नाम कुली मांय ।
ए तो प्रेम तणां जे पात्र, आपणथी अलगो न थाय खिण मात्र ॥ २

सखियाँ तो प्रेमकी ध्वजा कही जातीं हैं. जिनका नाम कलियुगमें प्रकट है, वे प्रियतम प्रेमके ही स्वरूप हैं, इसलिए वे हमसे क्षणमात्रके लिए भी अलग नहीं हो सकते हैं.

ए अलगो थाय केम, अमे कहुं करे वालो तेम ।
अमे आतम सखियो एक, रमतां दीसे अनेक ॥ ३

श्रीकृष्णजी हमसे अलग होंगे ही कैसे ? हम जो कहतीं थीं प्रियतम वही करते थे. हम सब सखियोंकी आत्मा तो एक ही है. केवल रामत करते समय अलग-अलग दिखाई देती है.

अमे परसपर कीधां परियाण, सखियो ते सरवे सुजाण ।
आपण लीधां वेष अनेक, जे कीधां वालैए वसेक ॥ ४

हम सब (सखियों) ने परस्पर विचार-विमर्श किया. सभी सखियाँ चतुर और समझदार हैं. इसलिए प्रियतमने विशेष रूपसे जो स्वरूप धारण किए थे वैसे विविध प्रकारके स्वरूप हम सभीने धारण किए.

आपणमां थै वेष एक स्याम, जेणे निरखे पोहोंचे मन काम ।
वली थै वेष एक नंद, ते कान्हजी लडावे उछरंग ॥ ५

हममेंसे एक सखी (श्रीश्यामाजी) ने श्याम सुन्दर श्रीकृष्णका वेश धारण किया. उस स्वरूपको देखते ही मनोकामनाएँ पूरी हो जातीं हैं. तत्पश्चात् एक सखीने नन्दबाबाका वेश बनाया और कान्हाको लाड़ करने (दुलारने) लगी.

सखी वेष पूतना नार, भर जोवन आवी सिणगार ।
विष भर्‌यां तेना अस्थन, आवी धवरावे कपटे मन ॥ ६

एक सखीने पूतनाका वेश धारण किया. उसने नवयौवनाकी भाँति सुन्दर युवतिका शृङ्गार सजाया और अपने स्तन पर विष लगाया एवं कपट भावसे स्तनपान करानेके लिए आ गई.

चेहेन कीधां ने पामी मृत, विष वालाने थयुं अमृत ।
सोसी लीधी पूतना नार, गोकलमां जै जै कार ॥ ७

अभिनय करते-करते पूतनाकी मृत्यु हो गई, प्रियतमके लिए वह विष भी अमृत बन गया. उन्होंने स्तनपानके बहाने पूतनाके प्राण हर लिए. गोकुलमें चारों ओर जयजयकार होने लगा.

वेष लीधां सखियो विचारी, दैत्य लीधां ते सहु संघारी ।
अंग आडो दीधो कै वार, व्रज लोक ते सकल करार ॥ ८

सखियोंने व्रजकी लीलाओंको याद करते हुए उनके अनुसार वेश धारण किए. इस प्रकार श्रीकृष्ण वेशधारी सखीने सभी दानवोंका संहार किया. उसने व्रज और व्रजवासियोंको बचानेके लिए अपना शरीर भी दाँव पर लगा दिया, इसलिए व्रजमण्डलमें सर्वत्र आनन्द छा गया.

एक जाणे जसोदा होय, कान्हजी माखण मांगे रोय ।
उहां दूध चूल्हे उभराय, मातानुं मन कलपाय ॥ ९

एक सखी तो मानों यशोदा बन गई. श्रीकृष्ण रो-रोकर मक्खन माँगने लगे. चूल्हे पर रखा हुआ दूध उबल कर बहने लगा. इसके कारण यशोदा माताका मन व्याकुल हो उठा.

कान्हें छेडो ग्रह्यो उजातां, जसोदाजी थयां रीसे रातां ।
कान्ह कहे माखण आपो पहेलुं, त्यारे जाणे लागुं माताने गेहेलुं ॥ १०

श्रीकृष्णजीने (चूल्हेसे दूध उतारनेके लिए जाती हुई) यशोदाकी साड़ीका पल्लू पकड़ लिया. इसके कारण यशोदाजी क्रुद्ध होकर लाल हो गईं. श्रीकृष्णजी कहने लगे कि पहले मुझे मक्खन दीजिए. माता यशोदाको भी श्रीकृष्णका यह व्यवहार ढीठ जैसा लगा.

जोरे छेडो लीधो ततकाल, नसो चढावी निलाट ।
जसोदाजी गया उजाई, आगल दूध गयुं उभराई ॥ ११

यशोदाजीने तुरन्त ही साडीका पल्लू छुड़ा लिया और क्रुद्ध होकर आँखें दिखाने लगी. दौड़ती हुई वे चूल्हेंके पास पहुँची, उससे पूर्व ही सारा दूध बह गया था.

कान्हजीने रीस अति थई, पहेलुं माखण दई न गई ।
ते तां झाली ना रही रीस, घोलीना कीधां कटका वीस ॥ १२

यशोदाजीके इस व्यवहारसे श्रीकृष्णको बड़ा क्रोध आया और मनमें सोचने लगे कि माता सर्व प्रथम मक्खन दिए बिना ही दूध उतारनेके लिए क्यों दौड़ गई ? वे अपने आवेगको रोक नहीं पाए जिससे उन्होंने मटके के बीसों टूकड़े कर डाले.

तिहां दोडीने आवी मात, देखी कान्हुडानो उतपात ।
दामणुं लीधुं जसोदाए, कान्हजी पाखल पलाए ॥ १३

उसी समय दौड़ती हुई यशोदा माता वहाँ आ पहुँची और उन्होंने कान्हाके इस उत्पातको देखा. श्रीकृष्णको बाँधनेके लिए यशोदा माताने रस्सी उठा

ली और उन्हें पकड़नेके लिए उनके पीछे दौड़ने लगी.

आगल कान्हजी उजाय, जसोदाजी वासे धाय ।
माताने श्रम अति थयो, तिहां कान्हजी ऊभो थई रह्यो ॥ १४

आगे-आगे कान्हा दौड़ रहे हैं और यशोदा माता उनके पीछे दौड़ रही है. इस प्रकार दौड़ती हुई माताका परिश्रम देखकर कान्हा खड़े रह गए.

कट दामणिए न बंधाय, तसु चार ते ओछुं थाय ।
वलीदामणुं बीजुं लिए, गांठों अनेक विधे दिए ॥ १५

माता यशोदा कान्हाको बाँधने लगी किन्तु वह रस्सीसे नहीं बँधे, रस्सी चार अङ्गुल छोटी पड़ गई. यशोदाजीने दूसरी रस्सी हाथमें ली और दोनोंको जोड़नेके लिए अनेक गाँठें लगाईं.

एम लीधां दामणां अपार, तसु घटे ते चारना चार ।
वली देखी मातानो श्रम, कान्हें मूक्यां दामणां नरम ॥ १६

इस प्रकार कई रस्सियाँ लीं, तथापि प्रत्येक बार कान्हाको बाँधनेके लिए रस्सी चार अङ्गुल कम पड़ने लगी. जब कान्हाने माताका परिश्रम देखा तब अपना शरीर घटाकर रस्सी ढीली कर दी.

त्यारे एक दामणे बेहु हाथ, बांधी कट ऊखल संघात ।
एवो बांध्यो दामणिए बंध, जुओ कान्हजी रुए अचंभ ॥ १७

तब यशोदाजीने एक ही रस्सीसे कान्हाके दोनों हाथ बाँध दिए. उनकी कमरको ऊखलके साथ बाँध दिया. यशोदाजीने रस्सीसे ऐसा बाँध दिया कि श्रीकृष्ण आश्चर्यचकित होकर रोने लगे.

तिहां रोतो रीकतो जाय, रह्यो वृख ऊखल भराय ।
तिहांथी निसरवा कीधुं जोर, पड्यां वृख थयो अति सोर ॥ १८

श्रीकृष्णजी रोते हुए ऊखलको घसीटते जा रहे हैं. तब वह ऊखल दो वृक्षोंके बीच आकर अटक गया. उससे निकलनेके लिए श्रीकृष्णने जोर लगाया

तो दोनों पेड़ उखड़कर धरती पर गिर पड़े और इससे बड़ा धमाका हुआ.

तेमां पुरुष बे प्रगट थया, अंग मोडीने ऊभा रह्या ।
कर जोडीने अस्तुत कीधी, तेने तरत वाले सीख दीधी ॥ १९

उन वृक्षोंसे दो पुरुष (नलकूबर और मणिग्रीव जो नारदजीके श्रापके कारण वृक्ष बन गए थे) प्रकट हुए एवं अपने अङ्ग मोड़कर खड़े रहे. फिर हाथ जोड़कर श्रीकृष्णजीकी स्तुति करने लगे. श्रीकृष्णने उन्हें उपदेश देकर तुरन्त भेज दिया.

इहां आवी जसोदा उजाणी, कान्हजी भीडी रही भुज ताणी ।
स्वांस मांहें न माय स्वांस, मुख चुमती आस ने पास ॥ २०

वृक्ष गिरनेके कारण हुए धमाकेको सुनकर यशोदा माता वहाँ दौड़ी आई और प्रिय कान्हाको दोनों हाथोंसे उठाकर छातीसे लगा लिया. माताजीकी साँसे भर आईं. वह नन्हें कान्हाके मुखके आसपास चूमने लगी.

एक धरे ते गोवरधन, हरष उपजावे मन ।
इन्द्रनों कीधो मान भंग, एम रमे ते जुजवे रंग ॥ २१

एक सखी (जिसने श्रीकृष्णका स्वरूप धारण किया था) गोवर्धन पर्वत उठानेकी लीला करती हुई सबको प्रसन्न करने लगी. इस प्रकार इन्द्रका गर्व खण्डित करते हुए अलग-अलग लीलाएँ करने लगी.

लई चारे वाछरु वन, मांहों मांहें गोवाला जन ।
हाथ मांहें वांसली लाल, मांहें रामत करे रसाल ॥ २२

श्रीकृष्णका वेश धारण की हुई सखी ग्वाल बालोंके साथ वनमें बछड़े चराने गई. उसने हाथमें लाल रङ्गकी वंशी धारण की है. इस प्रकार वनमें रसपूर्ण रामत कर रही है.

आपणमां कोइक कामनी वेष, एक वेष वालोजी वसेष ।
वालो पूरे कामनीनां काम, भाजे हैडा केरी हाम ॥ २३

हममें-से किसीने श्रीराधाका वेश धारण किया और किसीने प्रियतम श्रीकृष्णका विशेष वेश धारण किया. प्रियतमने कामिनियोंकी अभिलाषा पूर्ण

करते हुए मनकी चाहना तृप्त की.

एक दाणलीला वेष नार, मही माथे मटुकी भार ।
वालो करे तेसुं हांस, लिए माखण ढोले छास ॥ २४

एक सखीने दूध-दधी बेचनेवाली (दानलीलाकी) ग्वालिनका वेश धारण किया. सिर पर दहीकी मटकी रखी हुई है. प्रियतम उस सखीके साथ परिहास करते हैं, मक्खन ले लेते हैं और छाछ गिरा देते हैं.

कहे वचन सामा कामनी, गाल जुगते दिए भामनी ।
तेणी लिए मटुकी उजाय, वालो गोरस गोवालाने पाय ॥ २५

एक दूसरी सखी श्रीकृष्णके साथ हँसी करती है, उन्हें कटु शब्द सुनाती है. श्रीकृष्ण उसकी मटकी उठाकर भाग जाते हैं और उसका गोरस ग्वालोंको पिला देते हैं.

वालो व्रजमां रम्यां जे जुगते, अमे सहु वेष लीधां ते विगते ।
पीउडो तोहे न दीसे क्यांहे, कालजडुं कांपे मांहे ॥ २६

प्रियतमने व्रजमें जो भी लीलाएँ कीं थी उन सबको हम सखियोंने अलग-अलग वेश धारण करके पुनः दोहराया फिर भी श्रीकृष्णजी कहीं भी दिखाई नहीं दिए. इसके कारण हमारे हृदय धड़कने लगे.

राजसिए कीधो व्रह जोर, रुए पाडे बुंब बकोर ।
स्वांतसियो वेसुध थाय, तामसियोने आझो न जाय ॥ २७

राजस स्वभाववाली सखियोंकी विरह वेदना अत्यधिक बढ़ गई. वे रोती हुई जोरसे चिल्लाने लगीं. स्वातस स्वभाववाली सखियाँ तो बेहोश हो गईं. किन्तु तामस स्वभाववाली सखियोंके मनमें अब भी प्रियतमके प्रति विश्वास कम नहीं हुआ.

एक वेष वाले वेण वायो, साथ सहु जोवाने धायो ।
जाणे वेण वालानो थयो, सोक रुदया मांहेंथी गयो ॥ २८

श्रीकृष्णका वेश धारण करनेवाली एक सखीने वंशी बजाई. तो सब सखियाँ प्रियतमको देखनेके लिए दौड़ पड़ीं. उन्हें ऐसा आभास हुआ कि सचमुच

प्रियतमने वेणुनाद किया है. उनके दुःख दूर हो गए.

सहुने सरूप रुदेमां समाणो, आवी आनंद अंग उभराणो ।
उलस्या मलवाने अंग, मांहेंथी प्रगट्या उछरंग ॥ २९

सब सखियोंके हृदयमें श्यामसुन्दर श्रीकृष्णका स्वरूप समाहित हो गया. प्रेमका आनन्द उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें उभर आया. प्रियतमसे मिलनेके लिए वे उल्लसित हो गईं. उनकी अन्तरात्मासे प्रेम और आनन्दकी लहरें हिलोरें लेने लगीं.

वली मांडी ते रामत जोर, गाए गीत करे अति सोर ।
त्यारे हरष वाध्यो अपार, आव्यो जुवतीनो आधार ॥ ३०

पुनः अति उत्साहपूर्वक रामतें प्रारम्भ हुईं. सखियाँ श्रीकृष्णका नाम लेकर सुमधुर स्वरसे गीत गाने लगीं. इस प्रकार अपार हर्षोल्लास बढ़ गया. उसी समय सखियोंके प्राणाधार श्रीकृष्णजी प्रकट हुए.

दोडी वलगी वालाने वसेष, जाणे पिउजी हुता परदेस ।
सघलीनां हैडा मांहें, हाम मलवानी मन मांहें ॥ ३१

श्रीकृष्णको प्रत्यक्ष देखकर सखियाँ इस प्रकार दौड़कर उनसे लिपट गईं मानों प्रियतम विदेशसे अभी-अभी लौटे हों. सभी सखियोंके मनमें प्रियतमसे मिलनेकी उत्कट इच्छा थी.

वालेजीए कीधो विचार, केम मलसे सघली नार ।
त्यारे देह धरया अनेक, सखी सखी प्रते एक ॥ ३२

श्रीकृष्णजीने विचार किया कि ये सब सखियाँ एक साथ कैसे मिलेंगी ? इसलिए उन्होंने एक साथ सब सखियोंके लिए अनेकों रूप धारण किए और एक-एक सखीके साथ एक-एक श्रीकृष्णकी जोड़ी बन गई.

सखी सहुने मल्या एकांत, रम्यां वनमां जुजवी भांत ।
वाले पूरण मनोरथ कीधां, अनेक विधे सुख दीधां ॥ ३३

सभी सखियोंसे प्रियतम अकेले मिले और उनके साथ वृन्दावनमें अनेक

लीलाएँ कीं. इस प्रकार श्रीकृष्णजीने सखियोंकी मनोकामना पूरी की और उन्हें अनेक प्रकारसे सुख दिया.

इन्द्रावती ने आनंद थाय, उमंग अंग न माय ।
वली रमे नाना विध रंग, कांई वाध्यो अति उछरंग ॥ ३४

इन्द्रावतीको अति आनन्द हुआ. उनके अङ्ग-अङ्गमें उत्साह समा नहीं रहा था. फिर वह प्रियतमके साथ विभिन्न प्रकार रामतें करने लगी जिससे सब सखियोंका उत्साह और भी बढ़ गया.

चरचरी राग केदार

उछरंग अंग सुन्दरी, हेत चित मन धरी ।
सुख ल्यावियां वालो वली, सुख ल्यावियां वालो वली ॥ १

इस प्रकार सखियोंके अङ्ग-प्रत्यङ्गसे आनन्द एवं उत्साह छलक रहा है. उनके मनमें प्रेम भरा हुआ है, क्योंकि प्रियतम पुनः लौटे हैं और अपने साथ पुनः अखण्ड सुख लेकर आए हैं.

कर मांहें कर करी, सकल मली हरवरी ।
बांहे न मूके स्यामतणी, अलगी न जाय कोय टली ॥ २

एक दूसरेका हाथ पकड़कर सखियाँ शीघ्रतासे परस्पर मिलीं. कोई भी सखी प्रियतमका हाथ नहीं छोड़ती है और प्रियतमसे अलग होना नहीं चाहती है.

एक एक लिए आलिंघन, एक एक दिए चुमन ।
बांहोंडी वाली जीवन, खेवना भाजे मली ॥ ३

प्रत्येक सखी आलिंगन करती हुई चुम्बन करने लगी. कोई प्रियतमके गलेमें बाँह डालकर झूल रही है इस प्रकार सब अपनी अपनी मनोकामनाएँ पूरी करतीं हैं.

जीवन मन विमासियुं, सखी केम भाजसे खेवना ।
आ तां पूर जाणे सायरतणां, एम आव्यां हलीमली ॥ ४

तब जीवनाधार प्रियतमने मनमें सोचा कि इस प्रकार इन सखियोंके मनकी

इच्छा कैसे पूरी होगी. ये सभी समुद्रकी लहरोंकी भाँति प्रेममें उमड़ती हुई हिलमिलकर दौड़ती चली आई हैं.

पछे एक वालो एक सुन्दरी, एम रमुं रंगे रस भरी ।
लिए आलिंघन फरी फरी, दाझ अंगतणी गई गली ॥ ५

तत्पश्चात् ऐसा सोचा गया कि एक प्रियतम और उनके साथ एक सखी इस प्रकार मिलकर आनन्द लीला करें. प्रियतमने वारंवार आलिंगन कर सखियोंके अंगोंकी विरहाग्नि शान्त की.

विनोद हांस अतिघणो, वाले वधार्‌यो सुखतणो ।
कामनी प्रते कंथ आपणो, एणे सुखे दुख नाख्यां दली ॥ ६

सखियाँ हास्य विनोद करने लगीं. प्रियतमने उनके सुखमें वृद्धि की. प्रत्येक सखीको ऐसा अनुभव हुआ कि श्रीकृष्ण तो मेरे साथ ही हैं. इस प्रकार प्रियतमने अखण्ड सुख देकर उनके दुःख दूर किए.

अधुर अमृत पीवतां, कठण कुच खूचतां ।
स्याम संगे सुख लेवतां, ए लीला अति सवली ॥ ७

सखियाँ श्रीकृष्णके अधरामृतका पान करतीं हैं और आलिंगन करती हुई श्यामसुन्दरके साथ अखण्ड आनन्द लेतीं हैं. यह लीला अति सहजतासे हो रही है. दूसरे शब्दोंमें कहें तो श्रीकृष्णके अधरपान अर्थात् वचनामृत द्वारा सखियोंके कठोर हृदयका परिवर्तन हुआ जिससे उनका हृदय प्रियतमके प्रेममें लीन हो गया.

साथ मांहें इन्द्रावती, वालातणे मन भावती ।
रस रंगे उपजावती, कांई उपनी छे अति रली ॥ ८

सखियोंमें इन्द्रावती प्रियतमके मनको भा गई. वह रसरंग उत्पन्न कराती है और ऐसा लगता है मानों इसके कारण अतीव आनन्द उत्पन्न हुआ है.

आपण रंग भर रमिए रास, वालोजी वली आविया रे ।
कांई उपनो अंग उलास, सुन्दर सुख लाविया रे ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे सखियो ! अब हम सभी मिलकर उमंगसे रास लीला प्रारम्भ करें, क्योंकि प्रियतम पुनः पधारे हैं. हमारे अङ्गोंमें फिर ऐसा उत्साह और उल्लास छा गया है मानों प्रियतम अनुपम सुख और अखण्ड प्रेमानन्दरूपी सुख लेकर पुनः आ गए हैं.

सखी दियो रे मांहों मांहें हाथ, वचे जोड लीजिए रे ।
स्याम स्यामाजी पाखल वाड, सखिओ तणी कीजिए रे ॥ २

हे सखियो ! हम एक दूसरीके हाथ पकड़कर श्याम और श्यामाजीकी जोड़ीको बीचमें ले लें और वृत्त (घेरा) बनाकर उन्हें घेर लें.

हवे रामत रमिए एम, खरो ग्रहीजिए रे ।
आपण एणी पेरे बंधेज, सहु रहीजिए रे ॥ ३

अब इस प्रकार लीला करें कि हाथ मजबूतीसे पकड़े रखें ताकि हमारे बनाए हुए घेरेमें प्रियतम बँधे रहें.

एनुं रुदे अति कठोर, ए थकी विहीजिए रे ।
हवे ए अलगो एक पल, आपण न पतीजिए रे ॥ ४

इनका हृदय अति कठोर है, इनसे डरते रहना. अब एक क्षणके लिए भी इन्हें अलग होने नहीं देना. इन पर विश्वास रखना ही नहीं.

फरतां रमतां रास, चुमन मुख दीजिए रे ।
लीजिए रस अधूर, अमृत पीजिए रे ॥ ५

घूमते-घूमते रामत करें और बीच-बीचमें चूमते हुए अधरामृतका आदान प्रदान करें.

एणे भीडिए अंगो अंग, कुचो वचे आणिए रे ।
एना विलास अनेक भांत, मोहन वेल माणिए रे ॥ ६

उनके अङ्गोंके साथ अपने अङ्ग मिलाकर उनको छातीसे लगाएँ. उनका

विलास अनेक प्रकारका है. उनके मनको मोहित करनेके लिए मोहनबेल बनकर हम आनन्द लूटें.

मुख मांहें दई अधूर, जीवन सुख जाणिए रे ।
अदभुत एहना सनेह, ते केम वखाणिए रे ॥ ७

उनके मुखारविंद पर अधर रखकर जीवनका सुख प्राप्त करें. उनका प्रेम तो अपरिमित है उसका वर्णन भला कैसे हो सकता है ?

वाले सांभलियां रे वचन, भरी अंक लीधियो रे ।
वाले चितडुं दईने चित, सरीखी कीधियो रे ॥ ८

प्रियतमने सखियोंके ये वचन सुनकर उन्हें अपने हृदयसे लगा लिया तथा अपना स्नेही हृदय उन्हें देकर समरसता प्रदान की.

एना मनोरथ अनेक पेर, उपाया अमने घणां रे ।
सनेह उपाइने आण्यां, सागर सुख तणां रे ॥ ९

प्रियतमके मिलनका मनोरथ अनेक बार उत्पन्न हुआ है. अपार सुखोंके सागर समान प्रियतम हृदयमें स्नेह उत्पन्न कर प्रकट हुए हैं.

सखी सागरनी सी वात, सुणो सुख स्यामनी रे ।
मारी जिभ्या आणे अंग, न कहेवाय भामनी रे ॥ १०

अरी सखी ! प्रियतमके सुखकी तुलना सागरके साथ कैसै की जाए ? उनके अपार सुखोंका वर्णन करनेमें मेरी जिह्वा असमर्थ हो रही है.

वाले चितडुं दईने चित, ताणी लीधां आपणां रे ।
पछे वनमां कीधां विलास, न रही केहने मणां रे ॥ ११

श्याम सुन्दर श्रीकृष्णने अपना हृदय देकर हमारा हृदय खींच लिया, फिर वनमें विलास किया जिससे किसीके भी मनोरथ अपूर्ण नहीं रहे.

कहे इंद्रावती आनंद, वालो रंगे गाय छे रे ।
हजी रामतडी वृध, वसेके थाय छे रे ॥ १२

इन्द्रावती कहती है, प्रियतम आनन्दके रङ्गमें रङ्गकर भावपूर्ण गीत गा रहे हैं जिससे खेलमें आनन्दकी विशेष वृद्धि हो रही है.

प्रकरण ३५ चौपाई ७०७

राग : वेराडी चरचरी

रमत रास करत हांस, कान्ह मोहन वेल री ।
कान्ह मोहन वेल, सखी री कान्ह मोहन वेल री ॥ १

इन्द्रावती कहती है, रास लीला करते समय इस प्रकार सुन्दर हास-परिहास भी करते जा रहे हैं. प्रियतम श्रीकृष्णजी मोहनबेलके समान मोहिनी रूप धारण किए हुए हैं.

रासमां विनोद हांस, हांसमां करुं विलास ।
पूरतो अमारी आस, करे रंग रेल री ॥ २

रास लीला करते समय वे हास्यविनोद करते हैं और उसी हास्यविनोदमें विलास भी करते हैं. इस प्रकार हमारी आशाओंको पूर्ण करते हुए प्रियतम श्रीकृष्ण रङ्ग-रेलियाँ करते हैं.

वालैयो वन विलासी, गयो तो अमथी नासी ।
कठण करीने हांसी, दीधां दुख दोहेल री ॥ ३

वनमें विलास करते-करते प्रियतम श्रीकृष्ण हमारा त्याग कर हमसे दूर भाग गए. हमारा इस प्रकार कठोर परिहास करके उन्होंने हमें दारुण (घोर) दुःख दिया.

सखियो करती मान, तेणे व्रहनां कीधां पान ।
विसरी सरीर सान, एवो कीधो खेल री ॥ ४

जब सखियाँ अपने आप पर गर्व कर रही थीं तब प्रियतमने उनसे अलग होकर उन्हें विरहका अनुभव कराया. जिससे वे अपने शरीरकी सुधि भी भूल गईं. इस प्रकार प्रियतमने कुछ नवीन-सा खेल खेला.

मन तामसियो हरती, मान माननियो करती ।
अंगे ना व्रह धरती, तो अमपर थई हेल री ॥ ५

तामस स्वभाववाली सखियाँ मनको आकर्षित कर रही थीं, मानिनियाँ गर्व कर रही थीं, उनके मनमें विरह था ही नहीं. इसलिए हम सभीको विरहकी यह कठिन घड़ी देखनी पड़ी है.

आतुर करी सरवे जन, मीठडां बोले वचन ।
हेतसुं हरतो मन, एवो अलबेल री ॥ ६

सब सखियोंको आतुर बनाकर प्रियतम मधुर वचन कहते हैं और प्रेमसे सबका मन आकर्षित करते हैं. श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण इस प्रकार छैल-छबीले बन गए हैं.

हवे न मूकुं अधखिण, धुतारो छे अतिघण ।
पल ना वालुं पांपण, भूलियो पेहेल री ॥ ७

अब हम प्रियतमको आधे क्षणके लिए भी नहीं छोड़ेंगी क्योंकि ये तो छलिया हैं. अब आँखोंकी पलकें भी बन्द नहीं करेंगी. पहेले ही हमसे भूल हो चुकी है.

इन्द्रावती कहे साथ, हवे न कीजे विश्वास ।
खिण न मूकिए पास, एवी बांधो वेल री ॥ ८

इन्द्रावती सखियोंसे कहती है, अब प्रियतमका विश्वास मत करना. उन्हें एक क्षणके लिए भी मत छोड़ना. लताओंकी भाँति उन्हें अपने प्रेमबन्धनमें बाँध लो.

प्रकरण ३६ चौपाई ७१५

राग : धोलनी चाल

जुओ रे सखियो तमे वाणी वालातणी, बोले ते बोल सोहामणां रे ।
मीठी मधुरी वात करे, हुं तो लउं ते मुखनां भामणां रे ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे सखियो ! तुम श्रीकृष्णकी वाणीको तो सुनो. वे कैसे मधुर वचन बोलते हैं ? मैं तो उनकी इस मुख-माधुरी पर न्योछावर होती हूँ.

हाव सुभाव करे वालो हेते, गुण ने घणां वालातणां रे ।
रामत करतां रंग रेल करे, झकझोल मांहे नहीं मणां रे ॥ २

प्रियतम बड़े स्नेह पूर्वक भाव-भङ्गिमा दिखाते हैं. उनमें अपार गुण हैं. रामत करते समय आनन्दका प्रवाह बहा देते हैं. प्रेमकी मस्तीमें कभी भी कमी आने नहीं देते हैं.

जुओ रे सखियो मारा जीवनी वातडी, मारा मनमां ते एम ज थाय ।
नयणां उपर नेह धरी, हुं तो धरुं वालाजीने पाय ॥ ३

सखियो ! मेरे हृदयकी बात तो सुनो. मेरे मनमें ऐसी इच्छा जागृत होती है कि मैं अपनी आँखोंमें स्नेह पूर्वक उनके चरणकमल स्थापित कर लूँ.

सुण सुन्दरी एक वात कहुं खरी, ए ते एम केम थाय ।
नयणां उपर केम करीस, ए तो नहीं धरवा दिए पाय ॥ ४

इसके उत्तरमें दूसरी सखी कहती है, हे बहन ! मैं तुम्हें एक सत्य बात कहती हूँ. ऐसा कैसे सम्भव होगा ? नेत्रों पर प्रियतमके चरणकमल कैसे धारण करोगी ? वे तो अपने चरणोंको ऐसे रखने नहीं देंगे.

जो हुं एम करुं बहेनी, मारा जीवनी दाझ तो जाय ।
कोय विध करी छेतरुं वालो, तो मुने कहेजो वाय वाय ॥ ५

इन्द्रावती कहती है, यदि ऐसा करनेमें मैं सफल हो जाऊँ तो मेरे हृदयका ताप मिट जाएगा. यदि किसी भी रीतिसे मैं प्रियतमको बहकानेका प्रयत्न करूँ तो मेरी प्रशंसा करना.

सुणो रे वालैया वात कहुं, तमारा भूषण बाजे भली भांत ।
लई चरणने निरखुं नेत्रे, मुने लागी रही छे खांत ॥ ६

इन्द्रावती प्रियतमसे कहती है, हे स्वामी ! आप मेरी बात सुनिए. आपके चरण कमलोंके आभूषण मधुर ध्वनि करते हैं. मेरे मनकी उत्कट इच्छा है

कि मैं आपके चरण पकड़कर उन्हें अपनी आँखोंसे भली प्रकार देख लूँ.

जुओ रे सखियो मारा भूषण बाजतां, झांझरियां ते बोले रसाल ।
लेनी पग धरुं तुझ आगल, पण बीजी म करजे आल ॥ ७

प्रियतम कहने लगे, देखो सखियो ! मेरे आभूषण मधुर ध्वनिसे बज रहे हैं उनमें भी झाँझरियोंसे तो रस भरी ध्वनि निकल रही है. यदि तुम मेरे पाँव पकड़ना चाहती हो तो मैं तुम्हारे सामने पाँव रखता हूँ किन्तु मुझसे दूसरी कोई चालाकी मत करना.

लई चरण ने भेला नयणां, वाले जोयुं विचारी चित ।
वटकी चरण ने लीधां वेगलां, जाणी इन्द्रावती रामत ॥ ८

इन्द्रावतीने प्रियतमके चरण पकड़कर अपने नेत्रोंसे लगाया. श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण मनमें विचार करने लगे तो उन्हें पता चला कि इन्द्रावती खेल कर रही है. उन्होंने तुरन्त झटक कर अपने चरण कमल वापस खींच लिए.

वाले वेगे लीधी कंठ बांहोंडी, बेठां अंग भीडीने हेतमां ।
नेह थयो घणो नयणासुं, दिए नेत्र ने चुमन खांतमां ॥ ९

प्रियतमने तत्काल इन्द्रावतीको बाहें डालकर उसे गलेसे लगाया और प्रेमपूर्वक बैठ गए. इन्द्रावतीके नयनोंमें प्यार भरा था इसलिए स्वामीने प्रेमसे उनकी आँखें चूम ली.

रंग रेल करी रसबस थयां, सखी स्याम घणां अमृतमां ।
लथबथ थई कलोल थयां, ए तो कूपी रह्यां बेहु चितमां ॥ १०

इस प्रकार रङ्गरेलियाँ करते हुए सखियाँ तथा श्यामसुन्दर अमृत रसमें एकरस हो गए. प्रेममें भीग कर कलोल करने लगे और दोनों एक दूसरेके चित्तमें अङ्कित हुए.

कहे इन्द्रावती सुणो रे साथजी, वाले सुख दीधां घणां घणां ।
नवलो नेह वधारयो रमतां, गुण किहां कहुं वालातणां ॥ ११

इन्द्रावती कहती है, सखियो ! प्रियतमने हमें अनेक प्रकारसे अत्यधिक सुख

दिए है. रास लीला करते-करते अनूठा स्नेह बढ़ाया है. ऐसे धनीके गुण कहाँ तक गाऊँ ?

प्रकरण ३७ चौपाई ७२६

राग : केदारो

बलियामां दीसे बल, अंग आछो निरमल ।
नयणां कटाख्ये वल, पांपण चलवे पल, अजब अख्यात ॥ १

इन्द्रावती कहती है कि बलशाली प्रियतममें विशेष बल दिखाई देता है. उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग स्वच्छ और पवित्र हैं. नेत्रोंमें भी कटाक्ष करनेकी अद्भुत शक्ति है. पलकें क्षण-क्षणमें युक्ति पूर्वक चलाते हैं जिनकी अपूर्व शोभा वर्णनातीत है.

जनम संघाती जाण्यो, मन तो उपर माण्यो ।
सुन्दरी चितसुं आण्यो, विविध पेरे वखाण्यो, वालानी विख्यात ॥ २

हे सखी ! प्रियतमको जन्मसे साथी मानकर हमारा मन उनमें ही रम गया है. इस प्रकार वे सखियोंके चित्तमें अङ्कित हुए हैं. इसलिए उनकी ख्यातिकी प्रशंसा विभिन्न ढँगसे हुई है.

वालोजी वसेके हित, चालतो उपर चित ।
इछा मन जे इछत, खरी साथनी पूरे खांत, भलो भली भांत ॥ ३

प्रियतम हम सभी पर विशेष रूपसे प्रेम करते हैं. हमारी इच्छा अनुसार ही चलते हैं. हमारे मनकी सभी इच्छाओंको वे भली-भाँति पूर्ण करते हैं.

इन्द्रावती कहे खरुं, मूलनो संघाती वरुं ।
ए धन रुदयामां धरुं, अंगथी अलगो ना करुं, खरी मुने खांत ॥ ४

इन्द्रावती सत्य कहती है कि प्रियतम श्रीकृष्ण मूल परमधामके सम्बन्धी हैं. इसलिए मैं उनको वरण करती हूँ तथा उनका स्वरूप हृदयमें धारण करती हूँ. मेरी दृढ़ इच्छा है कि मैं उनको स्वयंसे दूर होने न दूँ.

वरजीने दउं वीड, भीडतां न करुं जीड ।
अंग मांहें हुती पीड, काम केरी भाजुं भीड, जो जो मारी वात ॥ ५

मैं अपने प्रियतम धनीके गले लग जाऊँ, इसमें विलम्ब नहीं करूँगी. मेरे

अङ्ग-प्रत्यङ्गमें जो पीड़ा हो रही है उसे प्रियतमके मिलन द्वारा शान्त कर दूँ. आप सभी मेरी बात पर ध्यान दें.

बांहोंडी कंठमां घाली, एकीगमां लीधो टाली ।
लई चाली अणियाली, सखी मुख हाथ ताली, जोई रह्यो साथ ॥ ६

प्रियतम धनीके कण्ठमें बाँहें डालकर इन्द्रावतीने उन्हें एक ओर ले लिया. तीक्ष्णनयना (इन्द्रावती) की यह चाल सब सखियाँ होठमें अङ्गुली रखकर देखती ही रह गई.

रामत करती रंगे, चुमन देवंती वंगे ।
उमंग आवियो संगे, भेली मुख भीडे अंगे, मूके नहीं बाथ ॥ ७

इन्द्रावती सखी प्रेममें मग्न होकर प्रियतमके साथ आनन्द पूर्वक रामत करती है. तिरछी होकर उनको चुम्बन देती है. इतना उमंग आया कि बाथ भरकर अधरपान कर रही है. उनसे अलग होती ही नहीं है.

रंगना करती रोल, झीलती मांहें झकोल ।
करी मुख चकचोल, जोरावर झलाबोल, लेवा न दे स्वांस ॥ ८

रङ्ग रेलियाँ करती हुई इन्द्रावती प्रेमके सागरमें स्नान कर रही है. अधरपान करते हुए प्रियतम उसे प्रेमकी इस मस्तीमें भींचते हैं कि श्वाँस भी लेने नहीं देते.

पिउनां अधुर पिए, अमृत घूंटडे लिए ।
सामा वली पोते दिए, देवंतां मुख नव विहे, अंग प्रेम वास ॥ ९

इन्द्रावती भी प्रियतमके अधरोंका पान करती हुई अमृतके घूँट पी रही है. परस्पर अधरामृत प्रदान करनेमें वे डरते नहीं हैं क्योंकि उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें प्रेमकी सुगन्धि बसी हुई है.

वली इछा जुई धरे, फूदडी फेरसुं फरे ।
जोर अति घणों करे, इन्द्रावती काम सरे, रमे पीउ रास ॥ १०

पुनः दूसरी इच्छा पैदा होती है. वारंवार गोल-गोल घूमती हुई अधिक जोर लगाती है. इस प्रकार प्रियतम रास खेल रहे हैं जिससे इन्द्रावतीकी कामना पूरी हो जाती है.

फूदडी मेलीने हाथ, चटकासुं घाली बाथ ।
रामत करे निघात, कंठ बांहोंडी फरे साथ, रमे प्राणनाथ ॥ ११

अब फिरकीकी रामत छोड़कर हाथकी रामत आरम्भ करती है. मटक-मटककर चलती हुई इन्द्रावती बाथ भरती है, गलेमें बाँहें डालकर घूमती हुई रामत करती है. इस प्रकार प्राणनाथ (श्रीकृष्ण) भी प्रेमरंगमें रंगे हुए हैं.

वली लिए हाथ ताली, फरती देवंती वाली ।
बेठंती उठंती वाली, रामत वचे रसाली, विविध विलास ॥ १२

पुनः गोल गोल घूमते हुए हाथोंकी ताली देते हैं. बीच बीचमें बैठकर उठते हैं और पुनः फिरकी करते हैं. इस प्रकार रसीली रामतमें विभिन्न प्रकारके विलास करते हैं.

छटके रामत मेली, वालाजी संघाते गेहेली ।
आलिंघन लिए ठेली, चुमन दिए पिउ पहेली, मुख आसपास ॥ १३

प्रियतमके साथ प्रेममें मस्त बनी हुई इन्द्रावतीने छटकते हुए रामत छोड़कर वालाजीका आलिंगन किया और उनसे पहले ही उनके मुखके आसपास चूमा.

सरवे जोवंतां सुन्दरी, रामत तो घणी करी ।
पिउं कंठ बाहो धरी, इन्द्रावती वाले वरी, जोइए कोण मुकावे हाथ ॥ १४

सब सखियोंके देखते-देखते ऐसे बहुत-से खेल हुए. इन्द्रावतीने प्रियतमके गलेमें बाँह डालकर उनका वरण किया. अब भला उनके हाथ कौन छुड़ा सकता है ?

प्रकरण ३८ चौपाई ७४०

केसरबाईनो झगडो

आवी केसरबाई कहे रे बहेनी, सुणो वात करुं तमसुं ।
भली रामत वालासुं रंगे करी, हवे मूको रमे अमसुं ॥ १

अब केसरबाईने आकर कहा, अरी बहन इन्द्रावती ! सुनो, मैं तुम्हें एक बात कहती हूँ. तुमने प्रियतमके साथ अच्छी तरह आनन्द पूर्वक रामत की.

अब तुम श्यामसुन्दर श्रीकृष्णको छोड़ दो. वे अब हमारे साथ रामत करेंगे.

हुं तो नहीं रे मूकुं मारो नाहोजी, तमे जोर करो जथा वाक ।
आवी वलगो वालाजीने हाथ, आ तां देखे छे सैयर साथ ॥ २

इन्द्रावती सखी कहने लगी, मैं तो अपने प्रियतम धनीको नहीं छोड़ूँगी. व्यर्थमें तुम क्यों जोर कर रही हो. इतनेमें केसरबाईने आकर प्रियतमके हाथ पकड़ लिए. इस दृश्यको सभी सखियाँ देख रहीं हैं.

इन्द्रावती कहे अमसुं रमतां, केसरबाई करो एम कांय ।
तमे हाथ आवी वालाजीने वलगो, पण हुं नव मूकुं बांय ॥ ३

इन्द्रावती कहती है, हे केसरबाई ! प्रियतम हमारे साथ खेल रहे हैं. ऐसे समय तुम ऐसा क्यों कर रही हो ? चाहे तुम आकर उनके हाथ पकड़ भी लो किन्तु मैं उनकी बाँहें नहीं छोड़ूँगी.

हुं कंठ बांहोंडी वालीने ऊभी, मारो प्राणतणो ए नाथ ।
नेहेचे सखी हुं नहीं रे मूकुं, तमे कां करो वलगती वात ॥ ४

मैं तो प्रियतमके गलेमें बाँहें डालकर खड़ी हूँ. वे मेरे प्राणोंके नाथ हैं. हे केसरबाई ! मैं तो निश्चय ही उन्हें नहीं छोड़ूँगी. तुम ऐसी व्यर्थ बातें क्यों कर रही हो ?

अनेक प्रकार करो रे बहेनी, हुं नहीं मूकुं प्राणनो नाथ ।
बीजी रामत जई करो रे बहेनी, आ तां ऊभो छे एवडो साथ ॥ ५

हे बहन ! तुम चाहे जितना प्रयत्न करो किन्तु मैं अपने प्राणोंके नाथको नहीं छोड़ूँगी. तुम जाकर अन्य कोई रामत करो, बड़ी संख्यामें सखियाँ यहाँ पर खड़ीं हैं.

केम रे मूकुं कहे केसरबाई, तमने रमतां थै घणी वार ।
हवे तमे केम नहीं मूको, मारा प्राणतणो आधार ॥ ६

केसरबाई भी कहती है, हे इन्द्रावती ! मैं भी प्रियतमको कैसे छोड़ दूँ ?

उनके साथ रामत करते हुए तुम्हें अधिक समय हो गया है. अब तुम मेरे प्राणनाथको क्यों नहीं छोडती हो ?

सुनो केसरबाई वात अमारी, इन्द्रावती कहे आ वार ।
लाख वातो जो करो रे बहेनी, पण हुं नहीं मूकुं निरधार ॥ ७

इन्द्रावती कहती है, हे केसरबाई ! मेरी बात सुनो इस बार तुम भले ही लाख प्रयत्न करो किन्तु प्रियतमको मैं कदापि नहीं छोडूँगी.

कहे केसरबाई अमसुं इन्द्रावती, कां करो एवडुं बल ।
एटला लगे तमे रामत कीधी, हवे नहीं मूकुं पाणीवल ॥ ८

केसरबाई कहती है, हे इन्द्रावती ! तुम हमारे साथ इतना जोर क्यों कर रही हो ? इतनी देर तक तुमने प्रियतमके साथ रामतें कीं, अब मैं क्षणमात्रके लिए भी नहीं छोडूँगी.

बीजी सखी इहां नहीं रे बापडी, आंहीं तो इन्द्रावती नार ।
जोर करो जोइए केटलुं केसरबाई, केम ने मूकावो आधार ॥ ९

तब इन्द्रावती कहती है, यहाँ कोई साधारण (निस्सहाय) सखी नहीं है अपितु प्रियतमकी अंगना इन्द्रावती है. इसलिए हे केसरबाई ! देखें तुम कितना जोर लगाती हो और प्रियतमसे कैसे छुड़वाती हो ?

एटला दिवस थया अमने रमतां, पण कोणे न कीधुं एम ।
भोला ढालनी वात जुई छे, जोइए जोर करी जीतो केम ॥ १०

हमें खेलते हुए इतने दिन हो गए, किन्तु किसीने भी तुम्हारी तरह (रोक टोक) नहीं किया. सीधी-सादी बात तो और ही होती है, किन्तु बल पूर्वक तुम जीतना चाहती हो तो देखें कैसे जीतती हो ?

वेढ देखीने वालोजी हंसिया, वलगे मांहों मांहें नार ।
कोई केने नमी न दिए, आ तां बंने जाणे झुंझार ॥ ११

दोनोंका हठ देखकर प्रियतम मुस्कराने लगे. दोनों परस्पर उलझ रहीं हैं. एक दूसरीसे झुकना नहीं चाहती. ये तो दोनों ही मानो आक्रामक हो गईं हैं.

सिखामण दिए रे वालोजी, कोई ना नमे रे लगार ।
त्यारे रूप कीधां रंगे रमवा, संतोषी सरवे नार ॥ १२

प्रियतमने दोनोंको समझाया किन्तु दोनोंमें एक भी नहीं झुकती है. तब प्रियतमने सबके साथ रामत करनेके लिए अलग अलग रूप धारण किए और सखियोंको सन्तुष्ट किया.

केसरबाई जाणे अमकणे आव्या, इन्द्रावती जाणे अम पास ।
सघलीसुं सनेह करी, वन मांहें कीधां विलास ॥ १३

केसरबाई समझने लगी कि प्रियतम मेरे पास आ गए और इन्द्रावती मानती है कि प्रियतम मेरे साथ हैं. इस प्रकार प्रियतमने वृन्दावनमें सबके साथ प्रेमपूर्वक आनन्द विलास किया.

इन्द्रावती केसरबाई मलियुं, बंने कहे एम ।
ओसियाली थैयो मन मांहें, जुओ आपण कीधुं छे केम ॥ १४

इन्द्रावती और केसरबाई जब परस्पर मिलीं तब दोनों यह कहकर अन्दरसे लज्जित हुईं कि देखो, हमने ऐसा क्या किया (विवाद कर हम लोगोंने लज्जास्पद कार्य किया).

भीडीने मलियुं बंने उछरंगे, भाजी हैडानी हाम ।
इन्द्रावती कहे केसरबाई, वाले पूरण कीधां मन काम ॥ १५

तत्पश्चात् दोनों प्रेमपूर्वक एक दूसरेसे गले लगीं और अपने हृदयकी कामना पूरी की. इन्द्रावती कहती है, हे केसरबाई ! प्रियतमने हमारी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण कीं.

प्रकरण ३९ चौपाई ७५५

राग : केदारो छंद

छेडो न छटके, अंग न अटके, भरे पांउं चटके, मानवंती मटके ।
लिए रंग लटके, घुटावे अधुर घटके, वली वली सटके ॥ १

इन्द्रावती कहती है, रास लीला करते समय किसीकी भी साड़ीका पल्लू छटका नहीं. किसीके अङ्ग भी रुके नहीं. सब सखियाँ लचकती हुई चलतीं

हैं, लटक चालसे रासके रङ्गका आनन्द लेतीं हैं, अधरामृतका आदान प्रदान करतीं हैं एवं वारंवार आलिङ्गन करतीं हैं.

खांत घणी खटके, रमवा रंगे रास री ।
रमती रास कामनी, जामती चन्द्र जामनी ॥ २

रासलीला करनेके लिए तीव्र चाहना ही उनकी अन्तरात्मामें खटकती है. कामिनी सखियाँ रास खेल रही हैं. ऐसा लगता है मानों चन्द्रमाकी चाँदनी सम्पूर्ण कलाओंके साथ स्थिर हो गई है.

मली वल्लभे माननी, भलंती रंगे भामनी ।
स्यामाजी संगे स्यामनी, बांहोंडी कंठे कामनी ॥ ३

ताणती अंगे आमनी, मुख बीडी सोहे पाननी ।
एम रमत सकल साथ री ॥ ४

मानिनी सखियाँ श्रीकृष्णसे मिलकर प्रेमरङ्गमें एकरूप हो जातीं हैं. श्रीश्यामाजी और श्यामसुन्दरके साथ गलेमें बाँहें डालकर सखियाँ एक दूसरेकी ओर खींचतीं हैं. मुखमें पानका बीड़ा शोभा दे रहा है. इस प्रकार सखियाँ रामत करतीं हैं.

मारो साथ रमे रे सोहामणो, कांई रामत रमे रंग ।
वालाजीसुं वातो करे अख्यातो, उलट भीडे अंग ॥ ५

मेरी सखियाँ प्रेममें मग्न होकर अत्यन्त सुन्दर ढंगसे रासकी रामत कर रहीं हैं. वे प्रियतमके साथ आमोद-प्रमोदकी बातें भी करतीं हैं और आवेशमें आकर परस्पर अङ्गोंको मोड़कर आलिङ्गनबद्ध होतीं हैं.

बांहोंडी वाले भूषण संभाले, रखे खूंचे कोई नंग ।
लिए बाथो वालाजी संघातो, उनमद बल अनंग ॥ ६

कतिपय सखियाँ अपने बाँहोंको मोड़कर आभूषणोंको संभाल लेतीं हैं, ताकि कोई भी रत्न अङ्गमें चुभ न जाए. अनेक सखियाँ कामना वश उन्मादिनी बनकर प्रियतमको अङ्कपाशमें भर लेतीं हैं.

छटके रमे पाखल भमे, रामत न करे भंग ।
छेलाइए छेके अंग वसेके, सखी सरवे सुचंग ॥ ७

छटकती हुई चालसे खेलती हुई प्रियतमके चारों ओर घूमती हैं किन्तु रामतमें किसी भी प्रकारका भंग पड़ने नहीं देतीं. भाव भंगिमाओंको प्रदर्शित करनेके आशयसे सखियाँ अपने अङ्गोंको विशेष रूपसे मोड़ती हुई अति चतुराईसे खेलतीं हैं.

केटलीक सुन्दरी उलट भरी, आवी वालाजीने पास ।
उमंग आणे आप वखाणे, व्रह विनता गयो नास ॥ ८

हर्ष और उल्लाससे पूर्ण होकर कई सखियाँ प्रियतमके पास आतीं हैं. अन्य सखियाँ अपने उत्साहकी स्वयं प्रशंसा करतीं हैं. इस प्रकार सखियोंकी विरह-वेदना दूर हो गई.

गीत गाय रंग थाय, विविध पेरे विलास ।
जुजवी जोडे एकठी दोडे, मारा वालाजीसुं करवा हांस ॥ ९

सखियाँ प्रेमानन्दमें मग्न होकर श्रीकृष्णके गुणानुवाद गातीं हैं. भाँति-भाँतिके विनोद भी करतीं हैं. अलग-अलग जोड़ी बनाकर अथवा एकसाथ मिलकर प्रियतमके साथ हास्य विनोद करनेके लिए दौड़तीं हैं.

वालैए विमासी अंग उलासी, देह धर्‌या अनेक ।
सखियो सघली जुजवी मली, मारा वालाजीसुं रमे विसेक ॥ १०

प्रियतम धनीने सखियोंको आनन्दमग्न देखकर विचार पूर्वक कई स्वरूप धारण किए. तब सभी सखियाँ प्रियतमसे अलग-अलग मिलीं और विशेष रूपसे खेल खेलने लगीं.

अंगडां वाले नयणां चाले, उपजावे रंग रेल ।
बोले बंगे आवे रंगे, जाणे पहेले भणियो पेस ॥ ११

सखियाँ खेलमें अपनी अङ्गमुद्रा, कटाक्ष तथा व्यङ्गोक्तिसे प्रेमानन्द उत्पन्न करतीं हैं. वे इस प्रकार खेल रहीं हैं मानों उन्होंने खेलकी युक्तियाँ पहलेसे

ही सीख ली हो.

अति उछरंगे वाध्यो संगे, उमंग अंग न माय ।
वालाजीनी बांहे कंठ वलाय, रमतां ताणी जाय ॥ १२

अतिशय उत्साहके साथ रामत करते करते प्रेमानन्द भी बढ़ने लगा. उनके अङ्गमें उमङ्ग समा नहीं रहा था. (सखियाँ) प्रियतमकी बाहें अपने कण्ठमें डालकर उनसे रामत करते-करते उन्हें खींचकर ले जातीं हैं.

बांहोंडी झाली वनमां घाली, रामत रमे अति दाए ।
वनमां विगते जुजवी जुगते, रंग मन इछा थाए ॥ १३

वे प्रियतमके गलेमें बाँह डालकर वनमें ले जातीं हैं और अनेक युक्तियोंसे रामत करतीं हैं. इस प्रकार वनमें भाँति-भाँति युक्तियाँ प्रयुक्तकर अलग-अलग खेलतीं हैं ताकि मनमें ऐसी रङ्गीली इच्छाएँ बनी रहें.

एक निरत करे फेरी फरे, छेक वाले तेणे ताय ।
एक दिए ठेक वली वसेक, रेत उडाडे पाय ॥ १४

एक सखी नृत्य करती हुई घूमती है. दूसरी सखी उसी समय श्रीकृष्णजीको रोकती है. तीसरी अपने पाँवसे रेत उड़ाती हुई छलाङ्ग लगाती है.

एक घूमे घूमरडे कोइक दोडे, वचन गाय रसाल ।
एक लिए ताली दिए वाली, साम सामी पडताल ॥ १५

कोई सखी गोल-गोल घूमती है. कोई दौड़ती हुई मधुर वाणीसे गाती है. कोई सखी दूसरी सखीके साथ मिलकर आमने-सामने ताली देती है.

एक चढे वने इछा गमे, हींचे हिंचोले डाल ।
एक कोणियां रमे गाय गमे, प्रेमतणी दिए गाल ॥ १६

कोई सखी इच्छानुसार वनमें जाकर वृक्ष पर चढ़ती है तो दूसरी सखी डाली पकड़कर झूला झूलती है. कई सखियाँ कुहनीकी रामत (कोणियाँ) खेलतीं हैं. इस प्रकार सखियाँ अपनी इच्छानुसार खेलतीं हैं, गातीं हैं तथा प्रेम भरे शब्दोंमें एक दूसरेको उलाहना देतीं हैं.

एक फरे फेरी कर धरी, बांहोंडी कंठ आधार ।
एक फूदडी फरे रामत करे, रंग थाय रसाल ॥ १७

कई सखियाँ श्रीकृष्णके गलेमें बाँह डालकर घूमतीं हैं तो कोई फूदड़ी रामत करती हुई घूमती है. इस प्रकार रसभरी रामतें हो रहीं हैं.

मोरलिया नाचे रंगे राचे, सबद करे टहुंकार ।
वांदरडा पाय ऊभा थाय, लिए गुलांटो सार ॥ १८

इन सखियोंकी रामत देखकर मोर भी आनन्दित होकर टुहुकार करते हुए नृत्य करते हैं. वानर भी पैर पर खड़े होकर गुलाटियाँ खा रहे हैं.

पसु पंखी वासे मन उलासे, आनंदियो अपार ।
वन कोलांभे वेलो आवे, फूलडां करे बहेकार ॥ १९

पशु पक्षी भी पासमें आकर हर्ष और उल्लासके साथ अपार आनन्द ले रहे हैं. वनकी लताएँ नव पल्लवित होकर पुष्पित हो रहीं हैं, उनके फूल सुगन्धि फैला रहे हैं.

चांदलियो तेजे जुए हेजे, नीचो आवी निरधार ।
जल जमुनानां वाध्यां घणां, आघा न वहे लगार ॥ २०

चन्द्रमा अपनी चाँदनी द्वारा बड़े प्रेमसे रामत देख रहा है. ऐसा लगता है कि वह निश्चय ही झुककर नीचे आ गया हो. यमुनाजीका जल भी रास देखनेके लिए उमड़ पड़ा है, किन्तु वह आगे नहीं बह रहा है. उसकी गति रुक गई है.

पडछंदा बाजे भोम विराजे, पडताले धमकार ।
सघली संगे उमंग अंगे, अजब रमे आधार ॥ २१

सखियोंके पाँवकी धमकसे पृथ्वी प्रतिध्वनित हो रही है. इस धमककी ध्वनि सर्वत्र फैल गई है. सब सखियाँ अङ्गोपाङ्गमें प्रियतमके साथ अद्भुतरूपसे रामत कर रहीं हैं.

भूषण बाजे धरणी गाजे, वृन्दावन होहोकार ।
अमृत वा वाय लहेरो लिए वनराय, अंग उपजावे करार ॥ २२

आभूषणोंकी ध्वनिसे धरती गूँज उठी है. वृन्दावनमें सर्वत्र हर्षध्वनि फैल रही

है. अमृतमय वायुके वहनेसे वनसृष्टि लहरा रही है, इससे अंग प्रत्यंगमें शान्तिका संचार हो रहा है.

एम केटलीक भांते रमियां खांते, रामत रंग अपार ।
कहे इन्द्रावती एणी पेरे लीजे, वालो सुख तणो सिरदार ॥ २३

इस प्रकार सखियोंने अपनी इच्छानुसार अपार रामतें कीं. इन्द्रावती सखियोंसे कहती है, प्रियतम श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण अपार सुखोंके स्वामी हैं. उनसे अखण्ड सुख प्राप्त करो.

प्रकरण ४० चौपाई ७७८

राग : मारु

ऊभा ने रहो रे वाला ऊभा ने रहो, हजी आयत छे अति घणी ।
रामत रमाडो अमने, उलट जे अमतणी ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम ! आप ठहर जाइए. हमारे मनमें और भी रामत करने की इच्छा है. इसलिए आप हमें इच्छानुसार खेल खेलाइए.

अनेक रंगे रमाडियां, केटलां लउं तेनां नाम ।
सखी सखी प्रते जुजवा, सहुनां पूरण कीधां मनकाम ॥ २

प्रियतमने हमें विविध प्रकारसे प्रेम और आनन्दकी रामतें खेलाईं. उनके कितने नाम लूँ ? प्रत्येक सखीके साथ अलग-अलग होकर उन्होंने सबके मनोरथ पूर्ण किए.

आ भोमनो रंग उजलो, कांई तेज तणो अंबार ।
वस्तर भूषण आपना, सुं कहुं सरूप सिणगार ॥ ३

वृन्दावनकी इस भूमिका रंग उज्ज्वल है, मानो यह प्रकाशमान ज्योतिका पुञ्ज है. सुन्दरसाथके वस्त्र, आभूषण तथा प्रियतमके स्वरूप-शृङ्गारका वर्णन कैसे करूँ ?

नेहकलंक दीसे चांदलो, नहीं कलातणो कोई पार ।
उठे अलेखे किरणे, सहु झलकारों झलकार ॥ ४

चन्द्रमा भी कलंकहीन निर्मल दिखाई देता है. उसकी कलाओंका कोई अन्त

नहीं है. उससे अनेक किरणें निकल रहीं हैं जिसके कारण चारों ओर झिलमिलाहट फैल गई है.

वन वेलडियुं छाइयुं, रलियामणां फूल कै रंग ।
वाय सीतल रंग प्रेमल, कांई अंगडे वाध्यो उमंग ॥ ५

वन वृक्ष और बेलियोंसे छाया हुआ है उनमें अनेक प्रकारके सुन्दर पुष्प खिले हुए हैं. शीतल वायु वहनेसे सुगन्धि फैल रही है. इसके कारण अङ्ग-अङ्गमें उत्साह और उल्लास भरा हुआ है.

वली रस वनमां छे घणां, मीठी पंखीडानी वाण ।
ए वन मूकाय नहीं, रूडो अवसर ए परमाण ॥ ६

इस वृन्दावनमें प्रेम उत्पन्न करने वाले तथा प्रेमको बढ़ाने वाले अनेक तत्त्व हैं. यहाँ पक्षियोंकी मधुर कलरव सुनाई देती है. ऐसे वृन्दावनको छोड़ना तो अति कठिन है क्योंकि यह सुन्दर अवसर अति सार्थक है.

अनेक विलास कीधां वनमां, मली सहुए एकांत ।
ए सुखनी वातो सी कहुं, कांई रमियां अनेक भांत ॥ ७

हम सभीने एकान्तमें मिलकर वृन्दानवमें अनेक प्रकारके हास विलास किए. यहाँ रामत खेलते हुए विभिन्न प्रकारसे प्राप्त सुखका वर्णन कैसे करूँ ?

हवे एक मनोरथ एह छे, आपण रमिए एणी रीते ।
बाथ लीजे बंने बल करी, जोइए कोण हारे कोण जीते ॥ ८

हे प्रियतम ! अब हमारी एक (अन्तिम) अभिलाषा है कि हम परस्पर बल पूर्वक आलिंगन करते हुए खेलें. देखें कौन हारता है और कौन जीतता है.

झलके झीणी रेतडी, नहीं कांकरडी लगार ।
थाय रूडी इहां रामत, आपण रमिए आधार ॥ ९

इस भूमिकी (यमुनाजीके किनारेकी) बारीक रेत चमक रही है. उसमें एक भी कङ्कड़ नहीं दिखाई देता है. इसलिए यहाँ अच्छी तरह खेल सकेंगे. हे जीवनाधार ! हम यहीं रामत करें.

सखियो तमे ऊभा रहो, जेवुं होय तेवुं कहेजो ।
बंने लउं अमे बाथडी, तमे साख ते साची देजो ॥ १०

इन्द्रावती कहती है, हे सखियो ! तुम सब यहाँ खड़ी रहो. हम दोनों परस्पर मिल जाते हैं. तुम साक्षी बनना. तुम जैसा भी हो सत्य कहना.

दोडी लीधी कंठ बांहोंडी, बंने करी होहोकार ।
सखियुं मनमां आनंदियुं, सुख देखी थयो करार ॥ ११

इन्द्रावती सखीने दौड़कर प्रियतमके गलेमें बाँहें डाल ली. दोनोंने हर्ष ध्वनि करते हुए एक दूसरेको बाहुपाशमें भर लिया. सखियाँ मनमें आनन्दित हुईं और दोनोंकी यह सुखमय रामत देखकर उनके मनमें सन्तोष हुआ.

चरण आंटी भुज बंध वाली, कोई ना नमे रे अभंग ।
बाथो लिए बंने बल करी, रस चढतो जाय रंग ॥ १२

पैरोंसे पैर मिलाते हुए हाथके बन्धनोंको कसकर वे परस्पर लिपट गए. उनमेंसे कोई भी अपने आपको शिथिल नहीं होने देते. दोनों बल पूर्वक परस्पर बाथ भर रहे हैं. इस प्रकार रसरंग बढ़ता जा रहा है.

वालो वलाका देवाने, नीचा नमाव्यां चरण ।
हो हो वालोजी हारिया, हंसी हंसी पडे सहु धरण ॥ १३

प्रियतमने दाँव लगानेके लिए ज्योंही पैरोंको नीचे झुकाया कि ''देखो-देखो प्रियतम हार गए'' कहती हुई सखियाँ हँसने लगीं और धरती पर गिर कर लोटपोट हो गईं.

सखियो कहे अमे जीतियुं, सुख उपनुं आसाधार ।
ताली दई दई हरखियुं, लडथडे पडे सहु नार ॥ १४

सखियाँ कहने लगीं, हम सब जीत गईं. सबको असाधारण सुख प्राप्त हुआ. वे सभी ताली बजा-बजाकर प्रसन्नता पूर्वक हँसने लगीं और लड़खड़ाती हुई पृथ्वी पर गिर पड़ीं.

अणची कां करो रे सखियो, हुं जाणुं छुं तमारुं जोर ।
जीत्या विना एवडी उलट, कां करो एवडो सोर ॥ १५

प्रियतम कहने लगे, हे सखियो ! तुम अनुचित क्यों कर रही हो ? तुम्हारी शक्तिको मैं अच्छी तरह जानता हूँ. जीते बिना ही उलटा इतना शोर क्यों मचा रही हो ?

हार्‌या हार्‌या अमने कां कहो, आवो लीजे बीजी बाथ ।
जे हारसे ते हवडा जोसुं, तमे साची कहेजो सहु साथ ॥ १६

प्रियतम कहते हैं, ''हार गए हार गए'' ऐसे क्यों कहती हो ? आओ फिर दूसरी बार बाथ भर लें. कौन हारता है इसका तुरन्त ही पता चल जाएगा. परन्तु तुम सब सत्य बोलना.

आवो वली बीजी बाथो लीजिए, एक पूठीने अनेक ।
हवडा हरावुं तमने, वली हंसावुं वसेक ॥ १७

आओ, फिर बाथ भरते हैं. एक नहीं अनेक बार. मैं आपको हरा कर सबको विशेष हँसाऊँगी.

कहे इन्द्रावती हुं बलवंती, सुणजो सखियो वात ।
नेहेचे तमने ऊंचुं जोवरावुं, वली रामत करुं अख्यात ॥ १८

इन्द्रावती सखियोंको कहती है, सुनो मैं अधिक शक्तिशालिनी हूँ. प्रियतमको हराकर अवश्य ही तुम सबका सिर ऊँचा रखूँगी और पुनः विशेष रामत रचाऊँगी.

प्रकरण ४१ चौपाई ७९६

[प्रकरण ४२ और ४३ का अर्थ करनेकी परम्परा न होनेसे इन दोनों प्रकरणोंकी मूल चौपाइयाँ ही दी गई हैं.]

छंदनी चाल

एणे समे रामत गमे, वालो विलसी लिए सोसी ।
अधुरी मधुरी अमृत घूंटे, छोले छूटे लिए लूंटे ॥ १

लथबथ, हथसथ, अंगसंग, रंगबंगचंग, चोली चूंथी ,
भाजी भूसी, हांसी सांसी, जाणी पाणी, नैणी माणी ,
वदू वाणी, रहोजी होजी, माजी कांजी, भाखुं जाखुं ,
रंगे राखुं, समारुं सिणगारजी ॥ २

वली वसेखे, राखुं रेखे, लऊं लेखुं, जोऊं जोखुं ,
प्रेमे पेखुं, घसी मसी, आवी रसी, हसी खसी बसी ,
भीसी रीसी खीसी, जरडी मरडी, करडी खरडी ॥ ३

खंडी खांडी छांडी मांडी, मेली भेली, भूमी चूमी गाली लाली ,
लोपी चापी, लाजी भाजी, दाझी काढी आंजी हांजी ,
जीती जोपे, रूडी रीते, उठी इन्द्रावती आ वार जी ॥ ४

प्रकरण ४२ चौपाई ८००

राग : धन्या छंद

छेल छंछेरीने लीधी बाथ जुगते, रामत कीधी अति रंगजी ।
स्याम सुन्दरी बंने सरखी जोड, जाणिए एकै अंगजी ॥ १

वली रामत मांडी एक जुगते, जाणिए सघली अभंगजी ।
रामत करतां आलिंघन लेतां, लटके दिए चुमनजी ॥ २

रमतां भीडे कठण कुचसुं, छबकेसुं रंग लेतजी ।
अमृत पिए वालोजी रमतां, अधुर इन्द्रावती देतजी ॥ ३

अधुर लई मुख मांहें मारे वाले, आयत कीधी अपारजी ।
भूषण उठियां उठियां अंगो अंगे, रहो रहो समरथ सार आधारजी ॥ ४

रम्यां रम्यां मारा मारा वाला वाला, पाछी पाछी रामत कोय ना रही ।
हवे ने हवे आधार, आयत पूरण थई ॥ ५

सम सम दऊं दऊं स्याम स्याम सुणो सुणो मम मम भीडो एणी भांतजी ।
बोली बोली न न सकुं बलिया रे बलिया, पूरी पूरी मारी मारी खांतजी ॥ ६

दई दई सम सम थाकी थाकी तमने, कां करो भीडा भीडजी ।
आयत आयत आवे अंगो अंगे, त्यारे न देखो पीडजी ॥ ७

मन मन मनोरथ पूर्या पूर्या वाला वाला, वली वली लागुं पायजी ।
केही केही पेरे पेरे कहुं कहुं तमने, स्वांस स्वांस हैडे मुझायजी ॥ ८

कर कर जोडी जोडी कहुं कहुं वाला वाला, वली वली मान ज मागुंजी ।
मेलो मेलो मुखथी वात करूं, नमी नमी चरणे लागुंजी ॥ ९

जेवी अमने आयत हुती, तमे तेवा रमाड्यां रंगजी ।
साथ सकलमां एम सुख दीधां, इन्द्रावती पामी आनंदजी ॥ १०

प्रकरण ४३ चौपाई ८१०

राग : मलार

सखी सखी प्रते स्याम, वालेजीए देह धर्या ।
कांई वल्लभसुं आ वार, आनंद अति कर्या ॥ १

इन्द्रावती कहती है, प्रियतम श्रीकृष्णजीने प्रत्येक सखीके साथ अलग-अलग रूप धारण किया. इस बार सब सखियोंने श्रीकृष्णके साथ आनन्द विलास किया.

मारा पूरण मनोरथ जेह, थयां वरसुं मली ।
कांई रही नहीं लवलेस, वालाजीसुं रंग रली ॥ २

मेरे मनमें जो कामनाएँ थीं वे प्रियतम धनीसे मिलकर पूरी हो गईं. मैं प्रियतमके रंगमें रंग गई हूँ, अब मेरी कोई भी इच्छा शेष नहीं रही है.

अमे जेम कह्युं वाले तेम, कीधी रामत घणी ।
हाम हुती हैडा मांहें, वाले टाली अमतणी ॥ ३

हमारे कथनानुसार प्रियतमने अनेक रामतें कीं. इस प्रकार हृदयकी सम्पूर्ण चाहना प्रियतमने परिपूर्ण कर दी.

एणे समे जे सुख, थयां जे साथमां ।
कां जाणे वल्लभ, कां जाणे मारी आतमा ॥ ४

इस समय सखियोंको जो सुख प्राप्त हुआ, उसे या तो प्रियतम जानते हैं या मेरी आत्मा जानती है.

जेहना मनमां जेह, उछाह हुता घणां ।
सुख दीधां तेहने तेह, पार नहीं तेहतणां ॥ ५

जिसके मनमें जैसा उत्साह था उसे प्रियतमने उसी प्रकारका सुख देकर पूर्ण किया. उस प्रेम और आनन्दकी कोई सीमा नहीं है.

एम रामत कीधी वन मांहें, रमीने आवियां ।
ए सुख आ वन मांहें, भला भमाडियां ॥ ६

इस प्रकार वृन्दावनमें रामतें हुईं. सब सखियाँ रास लीला कर (यमुनाजीके तट पर) आ गईं. प्रियतमने वनमें ऐसे अनन्त सुख दिए.

कहे इन्द्रावती साथ, एनी वातो जेटली ।
न कहेवाय कोटमो भाग, मारे अंग एटली ॥ ७

इन्द्रावती कहती है, हे सखियो ! श्यामसुन्दर श्रीकृष्णकी रामतसे सम्बन्धित जो बातें हैं इसके करोडवाँ भागका भी वर्णन करना कठिन है अर्थात् उसका वर्णन नहीं हो सकता है. मेरी जिह्वासे तो बस इतना ही वर्णन हो सका है.

प्रकरण ४४ चौपाई ८१७

राग : गोडी झीलणां

अनी हां रे झीलण रंग सोहामणां रे, आपण झीलसुं वालाजीने साथ ।
रामत रमी सहु आवियां, कांई पूरण थयो रंग रास ॥ १

इन्द्रावती कहती है, सखियो ! जल क्रीड़ाका आनन्द बड़ा ही सुन्दर है. अब हम प्रियतमके साथ यमुना जलमें स्नान करेंगी. हम सब रास लीला पूरी कर यमुनाजीके तट पर आईं हैं. हमारी रासकी रामत प्रेम और आनन्द पूर्वक पूरी हो गई है.

श्री राज कहे स्यामाजी सुणो, कांई तमारा मनमां जेह ।
साथ सहुने मनोरथ, कांई रह्यो छे एक एह ॥ २

श्रीराजजी कहते हैं, हे श्यामाजी ! सुनो, तुम्हारे मनमें जो कुछ भी हो उसे निःसंकोच कहो. श्यामाजी कहती हैं, अब सब सखियोंका एक ही मनोरथ शेष रहा है.

अंगे उमंग उपाइने, भेला नाहिए ते भली भांत ।
झीलणां कीजे मन गमतां, खरी पूरुं तमारी खांत ॥ ३

अङ्गोंमें उत्साह भरकर हम सभी एक साथ यमुनाजीमें अच्छी तरह स्नान करें. श्रीकृष्णजी उन्हें सन्तोष देते हुए कहते हैं, तुम सब इच्छानुसार जल क्रीड़ा करो. तुम्हारी यह इच्छा भी भली-भाँति पूरी करता हूँ.

वेलडीए कुसम प्रेमल, कांई वन झलूवे वाए ।
फले रस चढ्या कै भांतनां, भोम सोभा वाधती जाए ॥ ४

लताओं पर सुगन्धित फूल खिले हैं. वन भी वायुके झकोरोंसे झूल रहे हैं. वृक्षों पर भाँति- भाँतिके फल रससे परिपूर्ण हैं. इस प्रकार वृन्दावनकी भूमिकी शोभा बढ़ रही है.

जल उछले उछरंगमां, लहेरडियो ले रे तरंग ।
पसुपंखीना सबद सोहामणां, कांई उलट पसर्‌यो अंग ॥ ५

यमुनाजीका जल भी उत्साहमें आकर उछलता है. उसमें बड़ी-बड़ी लहरें ऊठ रहीं हैं. पशुपक्षियोंकी मधुर ध्वनि भी अंग-प्रत्यंगमें आनन्दकी स्फूरणा कर रही हैं. इसलिए सबका हृदय आनन्दित है.

साथ मलीने भेलो थयो, आव्यो ते आनंद मांहे ।
अमे सखियो त्रट उपर, वालाजीनी ग्रही बांहे ॥ ६

समग्र सखियाँ एकत्र हुईं. सब आनन्दमग्न होकर नदीके तट पर आईं. इन्द्रावती कहती है, हम सब सखियोंने मिलकर यमुनाजीके तट पर प्रियतमकी बाँहें पकड़ ली.

वाघा वधारी कांठे मूकियां, कांई वस्तर पहेरया झीलण ।
सखी एक बीजीने आनंदमां, जल मांहें लागी ठेलण ॥ ७

वस्त्र उतारकर किनारे पर रख दिए गए और जलक्रीड़ाके लिए योग्य वस्त्र धारण किए. सब सखियाँ आनन्दमग्न होकर एक दूसरेको पानीमें धकेलने लगीं.

त्रट जोईने जलमां सांचर्यां, साथ वालो स्यामाजी संग ।
परियाणीने थया सहु जुजवा, जल मांहें कीजे आनंद ॥ ८

यमुनाजीका सुन्दर स्वच्छ तट देखकर समस्त सखियोंने श्रीकृष्णजी एवं श्रीश्यामाजीके साथ जलमें प्रवेश किया. परस्पर परामर्श करके सब अलग-अलग हुए और जलका आनन्द लेने लगे.

एकीगमां साथ स्यामाजी, कांई बीजी गमां प्राणनाथ ।
क्रीडा कीजिए जलमां, विलसिए वालाजीने साथ ॥ ९

एक ओर सखियाँ एवं श्यामाजी तथा दूसरी ओर प्राणनाथ-श्रीकृष्ण. इस प्रकार यमुनाजीमें जलक्रीड़ा करते हुए प्रियतमके साथ विलास भी करें.

जल उछाले उछरंगसुं, सहु वालाजीने छांटे ।
वालोजी छांटे एणीविधसुं, त्यारे सरव नासंतियो कांठे ॥ १०

सखियाँ आनन्द पूर्वक जल उछालती हुई प्रियतम पर छिटकतीं हैं. जब प्रियतम भी उनकी ओर पानी छिटकते हैं तब सखियाँ किनारेकी ओर भाग जातीं हैं.

वली सामी थाय सखियो, जल छांटतियो छोले ।
वालोजी उछाले जल जोरसुं, त्यारे नासंतियो टोले ॥ ११

फिर सब सखियाँ प्रियतमके समक्ष आकर बड़े जोरसे पानी छिटकतीं हैं. प्रियतम जब उनकी ओर जोरदार पानी उछालते हैं तब वे सब टोली बनाकर भाग जातीं हैं.

वली आवतियों उमंगसुं, वालो वीट्यो ते चारे गम ।
सूझे नहीं कांई जल आडे, आंखे आवी गयो छे तम ॥ १२

फिर सभी आनन्दमें आकर प्रियतमको चारों ओरसे घेरकर पानी उछालतीं हैं. पानीकी छींटें इतनी जोरसे उड़ रही हैं कि कुछ भी दिखाई नहीं देता है. मानों आँखोंके सामने अन्धकार छा गया हो.

एणे समे हवे जे थयुं, बाई इन्द्रावतीनुं काम ।
विधे विधे विलसी वरसुं, भाजी हैडानी हाम ॥ १३

इस समय जो भी हुआ उसके कारण इन्द्रावती सखीका काम पूर्ण हुआ.

उन्होंने प्रियतम धनीके साथ विभिन्न रीतिसे आनन्द विलास किया और अपने हृदयकी कामना पूरी की.

एम जल क्रीडा करी, पछे नाह्या ते पिउजी ।
घणां रस लीधां अंग चोलतां, वालैयाने विलसी ॥ १४

इस प्रकार जल क्रीड़ा करके प्रियतमने स्नान किया. उनके शरीरको रगड़-रगड़कर स्नान कराते हुए सखियोंने अति आनन्द विलास किया.

स्यामाजीने नवराविया, पेरे पेरे ते घणी प्रीत ।
साथ सहु एणी विधे, कांई नाह्यो छे रूडी रीत ॥ १५

इसके बाद श्रीश्यामाजीको बड़ी प्रीतिसे नहलाया. तत्पश्चात् समस्त सखियोंने भी इसी प्रकार आनन्द पूर्वक स्नान किया.

सुन्दरबाई इन्द्रावती, कांई रत्नावती संग ।
लालबाई पहेलां निसरयां, सिणगार कीधा, सरवा अंग ॥ १६

सुन्दरबाई, इन्द्रावती, रत्नावती और लालबाई ये चारों स्नान करके सबसे पहले बाहर निकल आईं और आते ही वस्त्राभूषण पहन कर शृङ्गारसे सुसज्जित हुईं.

वस्तर भूषण स्यामाजीने, पहेराव्यां भली भांत ।
अधवीच आवीने वालैए, वेण गूंथी करी खांत ॥ १७

फिर उन्होंने मिलकर श्रीश्यामाजीको सुन्दर ढंगसे वस्त्र आभूषण पहनाए. बीचमें ही आकर प्रियतमने अत्यन्त उत्साहके साथ श्रीश्यामाजीकी वेणी गूँथ दी.

सिणगार सरवे सजी करी, स्यामाजी घणुं सोहे ।
दरपण लइने हाथमां, मन वालानुं मोहे ॥ १८

सम्पूर्ण शृङ्गारसे सजी हुई श्रीश्यामाजी अत्यन्त सुन्दर दिखाई देने लगीं. उन्होंने हाथमें दर्पण लेकर प्रियतमका मन मोहित किया.

आसबाई कमलावती, कांई फूलबाई मल्यां ।
चंपावती चारे मली, सिणगार कीधां भेलां ॥ १९

तत्पश्चात् आसबाई, कमलावती, फूलबाई और चम्पावती इन चारों सखियोंने

मिलकर एक साथ शृङ्गार किया.

चार सखी मली श्रीराजने, कराव्या सिणगार ।
वस्तर भूषण विधोगते, कांई सोभ्या ते प्राण आधार ॥ २०

इन चारों सखियोंने मिलकर श्रीराजजीको शृङ्गार करवाया. सुन्दर ढङ्गसे वस्त्राभूषण धारण करने पर प्राणाधार प्रियतम अतीव सुशोभित दिखाई देने लगे.

एक बीजीने करावियां, सिणगार सरवे एम ।
चितडुं देइने में जोइयुं, कांई साथनो अतंत प्रेम ॥ २१

इस प्रकार सखियोंने परस्पर शृङ्गार कर एक दूसरेको तैयार किया. इन्द्रावती कहती है, मैंने सबका शृङ्गार ध्यान पूर्वक देखा. वास्तवमें सबके हृदयमें परस्पर अथाह प्रेम है.

परसेवे वस्तर साथनां, नाहवा समे उतार्यां जेह ।
श्रीराज बेठा तेह उपर, तमे प्रेम ते जो जो एह ॥ २२

रास खेलते समय पसीनेसे भीगे हुए वस्त्रोंको सखियोंने स्नान करते समय उतार दिया था. श्रीराजजी इन वस्त्रों पर जाकर बैठ गए. हे सखियो ! तुम प्रियतमके इस अथाह प्रेमको तो देखो.

जमुनाजीने कांठडे, कांई द्रूमवेलीनी छांहे ।
साथ सहु मलीने सामटो, आव्यो ते आनंद मांहे ॥ २३

यमुनाजीके तट पर वृक्षों तथा बेलियोंकी छायामें सब सखियाँ एकत्रित होकर आनन्दमग्न हो गईं.

बेठा मली आरोगवा, सोभित जुजवी पांत ।
सो सखीसुं इन्द्रावती, थया प्रीसने भली भांत ॥ २४

सभी मिलकर भोजन करनेके लिए अलग अलग पङ्क्तियोंमें सुशोभित हुईं. इन्द्रावती अपनी टोलीकी सभी सखियोंके साथ युक्तिपूर्वक परोसनेके लिए तत्पर हो गई.

राग : वेराडी भोग

फरतण फेर बाजोटिया, रंग पाकी परवाली ।
कांबी पडगी जे कांगरी, जाणे रहिए निहाली ॥ १

श्रीराजजीके भोजनके लिए वहाँ एक गोल चौकी रखी गई है. उसका रङ्ग मूँगेकी भाँति पक्का लाल है. चौकीकी चारों किनारी पर चित्रांकन किया हुआ है. वह इतनी सुन्दर लगती है कि मानों देखते ही रह जाए.

चारे गमां वाल्या चाकला, बेठां वाली पलांठी ।
सोभा मारा वालाजीनी सी कहुं, जे आतमाए दीठी ॥ २

चौकीके चारों ओर चाकले (छोटे आसन) बिछाए हुए हैं. उसके ऊपर प्रियतम पालथी मारकर बैठ गए. उस समय आत्माओंने श्रीराजजीकी जो अपूर्व शोभा देखी है उसका वर्णन कैसे किया जाए ?

श्रीठकुराणीजी श्रीराजसुं, भेलां बेसे सदाय ।
आसबाई सुन्दरबाई, बेठां एणी अदाय ॥ ३

श्रीश्यामाजी श्रीराजजीके साथ सदैव जैसे बैठती हैं उसी प्रकार आसाबाई और सुन्दरबाई भी एकसाथमें बैठ गईं.

हाथ पखाल्या पात्रमां, जुजवी जुगते ।
पासे साथ बेठो मली, सहु कोय एणी विगते ॥ ४

श्रीराज श्यामाजीने जिस प्रकार पात्रमें हाथ धोए. उसी प्रकार पासमें बैठे हुए अन्य सभी सखियोंने भी हाथ धोए.

उपर वन रंग छाइयो, जाणे मंडप रचियो ।
प्रीसणे साथ जे हुतो, ते तो रंग मांहें मचियो ॥ ५

बैठकके ऊपर वनराजिका सौन्दर्य ऐसा छाया हुआ है कि मानों मण्डपकी रचना हुई है. परोसनेके लिए तत्पर सखियाँ तो आनन्द और उल्लाससे भावविभोर हो गईं हैं.

थाली धात वसेकनी, जुगते अजवाली ।
लाल जडाव लोटे जल, लई प्रेमे पखाली ॥ ६

भोजन परोसनेके लिए रखी हुई थालियाँ भी किसी विशिष्ट धातुकी हैं. उन्हें

अच्छी तरह पोंछकर साफ किया गया है. लोटा भी लाल रत्नोंसे जड़ा हुआ है. उसे भी प्रेम पूर्वक साफकर उसमें जल भरा है.

वाटका फूल कचोलियो, ते तो जुगते जडिया ।
अजवाली ने पखालिया, थाली मांहें मलिया ॥ ७

छोटी बड़ी कटोरियाँ युक्तिपूर्वक जड़कर बनाई हुई हैं. उन सबको अच्छी तरह साफ करके पानीसे धोया गया है. इसके बाद उन सबको बड़ी थालीमें रखा है.

वली नितारी अजवालियां, रूमाल संघाते ।
प्रीसे छे सारी सुखडी, विध विध कै भांते ॥ ८

कटौरियोंको पुनः साफकरके पोंछकर थालीमें रखा. तत्पश्चात् सुखड़ी आदि अनेक प्रकारके उत्कृष्ट खाद्यपदार्थ परोसी जाने लगी.

बाई भागवंती भली पेरे, प्रीसे सुखडी सारी ।
कहुं केटली घणी भांतनी, सरवे मूकी संभारी ॥ ९

भागवन्ती बाई सुखड़ी आदि मिठाई अच्छी तरह परोसती है. व्यञ्जनोंके कितने प्रकारोंका वर्णन करूँ ! वह सबको सम्भालकर परोस रही है.

पकवान सरवे प्रीसी करी, साक मूक्यां छे घणां ।
कंदमूल भांत भांतनां, अलेखे अथाणां ॥ १०

सब प्रकारके पक्वान्न (पकवान) परोसनेके बाद विभिन्न प्रकारकी सब्जियाँ परोसी गईं. अलग-अलग प्रकारके कन्दमूल तथा विभिन्न प्रकारका अचार भी परोसा गया.

साक ते सुकवणी तणां, कै सेक्यां सुतलियां ।
विध विध मेवा वन फल, अति उतम गलियां ॥ ११

इनमें अनेक प्रकारके सूखे साग भी थे और कई अच्छी तरहसे तले हुए थे विभिन्न प्रकारके मेवे, पके हुए वन्य फल इत्यादि भी उत्तम प्रकारसे परोसे गए.

आरोग्या अति हेतसुं, राज साथ संघाते ।
प्रीसंतां प्रेम जे में दीठो, ते न कहेवाय भांते ॥ १२

श्रीराजजीने सब सखियोंके साथ अत्यन्त प्रेमसे भोजन किया, परोसते हुए मैंने (इन्द्रावतीने) जो प्रेम देखा उसका वर्णन नहीं हो सकता है.

कंचन रंग झारी भरी, जल वच मांहें लीधो ।
श्री इन्द्रावतीजीने कोलियो, श्री राजे मुख मांहें दीधो ॥ १३

प्रियतमने भोजन करते समय बीचमें ही सुनहरे रङ्गकी झारीका जल पान किया, उन्होंने इन्द्रावतीके मुखमें भोजनका एक ग्रास भी डाल दिया.

हरष थयो जे एणे समे, साथे सहु कोइए दीठो ।
हंसियां रमियां साथसुं, घणो लाग्यो छे मीठो ॥ १४

इस समय अतीव हर्ष हुआ उसे सभी सखियोंने देखा. वे परस्पर हँस रही थीं, खेल रही थीं. सभीको बड़ा अच्छा लग रहा था.

आरोग्या आनंदसुं, जेणे जे भाव्यां ।
दूध दधी ते उपर, लाडबाई लई आव्यां ॥ १५

सभीने इच्छानुसार आनन्दपूर्वक भोजन किया. भोजनोपरान्त लाडबाई दूध और दही लेकर आई.

ते लीधां चल्लू करावियां, बेठां वांसे तकियो दई ।
थाल बाजोट उपाडियां, लोयुं मुख रूमाल लई ॥ १६

भोजनके पश्चात् सबको चुल्लु करवाया. सभी पीठके पीछे तकिए रखकर बैठ गईं. भोजनकी थालियाँ एवं चौकियाँ उठा ली गईं और रूमाल लेकर मुख पोंछा गया.

फोफल काथो चूना जावंत्री, केसर कपूर घाली ।
उपर लवंग दई करी, पान बीडी वाली ॥ १७

सुपारी, कत्था, चूना, जावित्री, केसर और कपूर मिश्रित पानका बीड़ा ऊपरसे लवंग खोंसकर तैयार किया गया.

बीडी ते लई आरोगिया, वली लीधी सहु साथ ।
साथ हुतो जे प्रीसणे, सखियोने प्रीसे प्राणनाथ ॥ १८

श्रीराजजी तथा श्रीश्यामाजीने पानके बीड़े लिए. फिर सभी सुन्दरसाथने भी ले लिए. जो सखियाँ (इन्द्रावती एवं उनकी टोली) भोजन परोसनेमें लगी थी अब उन्हें प्राणोंके नाथ श्रीकृष्णजी स्वयं भोजन परोसने लगे.

आरोग्या सहु अति रंगे, बीडी लीधी श्री मुख ।
बेठा मली वातो करवा, वाणी लेवा सुख ॥ १९

परोसने वाली सब सखियोंने अति आनन्दपूर्वक भोजन किया. फिर मुखमें पानका बीड़ा ले लिया. सभी एकत्रित होकर बातें करने लगीं. सखियाँ प्रियतमकी वाणीका सुख लेनेके लिए एकत्रित होकर बैठ गईं.

कहे इन्द्रावती साथजी, वाले विलास जो कीधा ।
चढी आव्या अंगे अधिका, वचे व्रह जो दीधा ॥ २०

इन्द्रावती कहती है, हे सखियो ! प्रियतमने हमारे साथ अच्छी तरह आनन्द विलास किया. परन्तु बीचमें (रामत करते समय) अन्तर्धान होकर जो विरह दिया वह अङ्गमें उभरकर आ गया.

प्रकरण ४६ चौपाई ८६१

राग : गोडी रामग्री

वाला वालमजी मारा, जी रे प्रीतम अमारा ॥ (टेक) ।
तमे रास रंगे रमाडियां, पण सांभलो मारी वात ।
अम उपर एवडी, तमे कां कीधी प्राणनाथ ॥ १

इन्द्रावती उपर्युक्त अन्तर्धान समयके विरहका दुःख याद कर कहती है, हे मेरे प्राणवल्लभ ! आपने अति आनन्दपूर्वक रास खेलाया. किन्तु हमारी प्रार्थना भी सुनिए, आपने अन्तर्धान होकर हमें विरहका इतना बड़ा दुःख क्यों दिया ?

अवगुण एवडा अमतणां, किहां हुता वालम ।
एम अमने एकलां, मूकी गया वृन्दावन ॥ २

हे प्रियतम ! हमारेमें ऐसे क्या अवगुण थे कि आप हमें वृन्दावनमें अकेले छोड़कर चले गए ?

तमे अमथी अलगा थया, त्यारे व्रह थयो अति जोर ।
तमे वनमां मूकी गया, अमे कीधा घणां बकोर ॥ ३

जब आप हमसे अलग हो गए उस समय हमारे लिए आपका विरह अति दुःखदायी बन गया. आप हमें वनमें छोड़कर चले गए. हमलोगोंने बहुत विलाप किया.

तम विना जे घडी गई, अमे जाण्यां जुग अनेक ।
ए दुख मारो साथ जाणे, के जाणे जीव वसेक ॥ ४

हे प्रियतम ! आपकी अनुपस्थितिमें जो समय बीता उसकी एक-एक घड़ी हमारे लिए युगके समान बन गई. यह दुःख या तो सखियाँ जानतीं हैं या मेरी आत्मा विशेष रूपसे जानती है.

ए दुखनी वातो केही कहुं, जीव जाणे मन मांहे ।
जे अम उपर थई एवडी, त्यारे तमे हुता क्यांहे ॥ ५

इस विरह वेदनाको कैसे कहूँ ? इसे तो हमारा अन्तर्मन ही जानता है. जब हम पर ऐसी बीत रही थी तब आप कहाँ थे ?

हवे न मूकुं अलगो वाला, पल मात्र तमने ।
तमारा मनमां नहीं, पण दुख लाग्युं अमने ॥ ६

हे प्रियतम ! अब आपको हम एक क्षणके लिए भी नहीं छोड़ेंगी. आपके मनमें तो कुछ भी दुःख नहीं है, परन्तु हमारे लिए तो वह दुःख असह्य हुआ.

पालखी अमे करुं रे वाला, तमे बेसो तेहज मांहे ।
अमे उपाडीने चालिए, हवे नहीं मूकुं खिण क्यांहे ॥ ७

हे प्रियतम ! आपको बैठानेके लिए हम अपने हाथोंकी पालकी बनातीं हैं. आप उस पर बैठ जाएँ. हम उस पालकीको उठाकर चलेंगी. अब एक क्षणके लिए भी आपको अकेले नहीं छोड़ेंगी.

हुं अलगो न थाऊं रे सखियो, आपणी आतमा एक ।
रामत करतां जुजवी, कांई दीसे छे अनेक ॥ ८

प्रियतम कहते हैं, हे सखियो ! मैं तुमसे अब अलग नहीं होऊँगा. अपनी आत्मा तो एक ही है. मात्र रामत करते हुए लीलाके लिए अलग-अलग स्वरूपोंमें दिखाई देती है.

सखियो वात हुं केही करुं, जीव मारो नरम ।
वल्लभ मारा जीवनी प्रीतम, अलगी करुं हुं केम ॥ ९

हे सखियो ! मैं क्या कहूँ ? मेरा हृदय तो अत्यधिक कोमल है. तुम तो मेरे लिए प्राणोंसे भी अधिक प्रिय हो. इसलिए मैं तुम्हें कैसे अलग कर सकता हूँ ?

तमथी अलगो जे रहुं, ते जीव मारे न खमाय ।
एक पलक मांहें रे सखियो, कोटान कोट जुग थाय ॥ १०

यदि मैं तुमसे अलग हो जाऊँगा तो मेरी आत्मा इसे सहन नहीं कर पाएगी. क्योंकि वियोगका एक-एक पल करोड़ों युगोंके समान प्रतीत होता है.

व्रह तमने दोहेलो लाग्यो, मुने तेथी जोर ।
मुख करमाणां नव सहुं, तो केम करावुं बकोर ॥ ११

वह वियोग तुम्हें जितना असह्य लगा मेरे लिए तो इससे भी अधिक कष्टदायी हो गया. जब मैं तुम्हारा मलिन चेहरा देख ही नहीं सकता तो फिर तुम्हें विलाप कैसे करवा सकता हूँ ?

जेम कहो तेम करुं रे सखियो, बांध्यां जीव जीवन ।
अधखिण अलगो न थाऊं, करार करो तमे मन ॥ १२

हे सखियो ! तुम जैसा कहोगी मैं वैसा ही करूँगा. मेरी आत्मा तो तुम्हारी आत्मासे जुड़ी हुई है. इसलिए आधे क्षणके लिए भी मैं तुमसे अलग नहीं होऊँगा. तुम अपने मनमें धैर्य धारण करो.

एवडां दुख ते कां करो, हुं दऊं एम केम छेह ।
तमे मारा प्राणनां प्रीतम, बांध्या मूल सनेह ॥ १३

तुम इतनी अधिक दु:खी क्यों होती हो ? मैं तुम्हें वियोग क्यों दूँगा ? तुम तो मुझे प्राणोंसे भी अधिक प्यारी हो. अपना स्नेह तो मूल परमधामसे ही बँधा हुआ है.

प्राणपें वल्लभ छो मुने, एम करुं हुं केम ।
में वृन्दावन मूक्युं नथी, तमे कां कहो मुने एम ॥ १४

तुम तो मुझे प्राणोंसे भी अधिक प्रिय हो तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों करूँगा ? मैंने तो वृन्दावन छोड़ा ही नहीं है, तो फिर तुम मुझे इस प्रकार क्यों कह रही हो ?

चित उपर चालुं रे सखिओ, तमे मारा जीवन ।
जेम कहो तेम करुं रे सुन्दरी, कां दुख आणो मन ॥ १५

हे सखियो ! मैं तुम्हारी इच्छा अनुसार ही चलूँगा. तुम मेरे प्राणोंके जीवन हो. हे सुन्दरी ! तुम जैसे कहोगी मैं वैसा ही करूँगा. तुम अपने मनमें दु:खका अनुभव क्यों कर रही हो ?

आतमना आधार छो मारा, जीवसुं जीव सनेह ।
करुं वात जीवन सखी, मुख मांहेंथी कहो जेह ॥ १६

तुम सभी मेरी आत्माके आधाररूप हो. आत्माका सम्बन्ध आत्माके साथ ही लगा हुआ है. इसलिए मेरे जीवनाधार सखी ! मैं वही बात करूँगा जो तुम मुझे अपने मुखसे कहोगी.

में तां एम न जाण्युं रे वाला, करसो एम निघात ।
नाहोजी हुं तो नेह जाणती, आपण मूल संघात ॥ १७

सखियाँ कहतीं हैं, हे प्रियतम ! हम लोगोंने तो ऐसा समझा ही नहीं था कि आप हमें ऐसा कठोर दु:ख भी देंगे. हे प्रियतम ! हम तो मात्र एक प्रेमको ही जानती थीं, वही हमारा मूल (परमधामका) सम्बन्ध है.

एम आंखडी न चढाविए तेने, जे होय पोतानां तन ।
जाणिए मेलो नथी जनमनो, उथले रास वचन ॥ १८

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम ! यदि हम आपसे अभिन्न (एक ही तन) हैं तो आपको हम पर इतना क्रोध नहीं करना चाहिए. उथले वचन (वंशी सुनकर आने पर वापस लौट जानेके लिए कहे गए कठोर परिसंवाद) सुननेसे ऐसा लगा मानो जन्मसे ही हमारा और आपका कोई सम्बन्ध ही न हो.

अमे तुंने जोपे जाणुं, बीजो न जाणे कोई जन ।
अमसुं छेडा छोडीने ऊभो, जाणिए नेह निसंन ॥ १९

उस समय हमने आपको अच्छी तरह परखा था. दूसरा कोई होता तो आपकी पहचान कर भी नहीं पाता. आप तो सबसे सम्बन्ध तोड़कर दूर रह गए. हम यह जानती थीं कि प्रियतमका प्रेम बालकोंकी भाँति निष्कपट है.

सांभलो सखियो वात कहुं, में जोयो मायानो पास ।
केम रमाय रामत रैणी, मन उछरंगे रास ॥ २०

प्रियतम कहते हैं, हे सखियो ! सुनो मैं अपनी बात करता हूँ. उस समय तुम्हारे हृदयमें मायाका बन्धन है या नहीं उसीकी मैंने परीक्षा ली थी. यदि ऐसा नहीं किया होता तो पूर्ण उत्साह और आनन्दके साथ रासकी रामत कैसे खेली जाती ?

ते माटे बोल कह्या में कठण, जोवाने विस्वास ।
नव दीठो कोई फेर चितमां, हवे हुं तमारे पास ॥ २१

तुम्हारा पूर्ण विश्वास और प्रेम देखनेके लिए ही मैंने ऐसे कठोर वचन कहे थे. मैंने तुम्हारे हृदयमें थोड़ा-सा भी मायाका प्रभाव नहीं देखा. अब मैं सदैव तुम्हारे पास ही हूँ.

एनो तमे जवाब दीधो, केम रोतां मूक्यां वन ।
नहीं विसरे दुख ते व्रहनां, अमने जे उतपन ॥ २२

इन्द्रावती कहती है, उपर्युक्त कथनका उत्तर तो आपने दे दिया, किन्तु फिर

हमें वनमें रोते हुए क्यों छोड़ दिया ? वह वियोगजन्य दुःख तो भुलाया नहीं जा सकता.

घणुं ज साले व्रह वालैया, जे दीधुं तमे अमने ।
केटली वात संभारुं दुखनी, हवे सुं कहुं तमने ॥ २३

हे प्रियतम ! वह आपका दिया हुआ विरहजन्य दुःख हमें बहुत ही खटक रहा है. दुःखकी उन बातोंको कहाँ तक याद करूँ. और आपसे क्या कहूँ ?

कां जाणो एवडो अंतर, हुं अलगो न थाऊं ।
तमने मेली वनमां, हुं ते किहां जाऊं ॥ २४

प्रियतम कहने लगे, हे सखियो ! तुम हमारे बीचमें इतना अन्तर क्यों समझ रही हो ? मैं तुमसे कभी अलग नहीं था. तुम सबको वनमें छोड़कर मैं कहाँ जा सकता हूँ ?

व्रह तमारो नव सहुं, गायुं तमारुं गाऊं ।
अंग मारुं अलगुं न करुं, प्रेम तमने पाऊं ॥ २५

मैं तुम्हारा विरह सहन नहीं कर सकता. तुम्हारे ही प्रेमके गीत सदैव गाता हूँ. मैं स्वयंको तुमसे अलग कर ही नहीं सकता. मैं तुम्हें प्रेम रसका पान कराता हूँ.

अमे ठाम सघलां जोया रे वाला, क्यांहें न दीठो कोए ।
जो तमे हुता वनमां, तो व्रह केणी पेरे होए ॥ २६

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम ! उस समय हम लोगोंने आपको सर्वत्र ढूँढ़ा परन्तु किसीने कहीं भी नहीं देखा. यदि आप वनमें ही होते तो हमें विरहका अनुभव कैसे हो सकता था ?

वन वेलडियो जोई सरवे, घणे दुखे घणुं रोए ।
घणी जुगते जोयां तमने, पण केणे न दीठो कोए ॥ २७

हमने वन, वृक्षों और बेलियोंमें जाकर आपको सर्वत्र ढूँढ़ा. हम अत्यन्त दुःखी होकर बहुत रोईं. हमने आपको अच्छी तरह ढूँढ़ा परन्तु कहीं भी नहीं देखा.

तमे कहो छो वनमां हुता, तो कां नव लीधी सार ।
अमे वन वन हेठे विलखियुं, त्यारे कां नव आव्या आधार ॥ २८

आप कहते हैं कि आप वृन्दावनमें ही थे, तो आपने हमारा ध्यान क्यों नहीं रखा ? वनमें वृक्षोंके नीचे हम व्याकुल होकर घोर विलाप करती हुई आपको ढूँढ़ रही थीं तो आप क्यों नहीं पधारे ?

जो तमे ना हुता वेगला, तो कां नव सुणी पुकार ।
अमने देखी रोवंतां, केम खम्यां एवडी वार ॥ २९

हे प्रियतम ! यदि आप हमसे अलग नहीं हुए थे तो आपने हमारी पुकार क्यों नहीं सुनी ? हमें रोती हुई देखकर इतने समय तक हमारे विरहको आपने कैसे सहन किया ?

बोलो ते सरवे वात झूठी, वनमां ना हुता निरधार ।
नेहेचे जाणुं नाहोजी, तमे झूठा बोल्या अपार ॥ ३०

हे प्रियतम ! आप सब कुछ झूठ बोल रहे हैं. आप वृन्दावनमें थे ही नहीं. हम जानतीं हैं कि आप निश्चय ही झूठ बोल रहे हैं.

जो व्रह अमारो होय तमने, तो केम बेसो करार ।
तम विना खिण जुग थई, वन भोम थई खांडा धार ॥ ३१

यदि हमारा विरह आपको दुःख दे रहा था तो आप शान्त-चित्त होकर क्यों बैठे रहे ? आपकी अनुपस्थितिमें हमें एक क्षण भी युग जैसा लगा. वनकी भूमि भी हमारे लिए तलवारकी धार बन गई थी.

दाझ घणी थई देहमां, लागी कालजडे झाल ।
जाणुं जीव नहीं रहे, निसरसे ततकाल ॥ ३२

हमारे शरीरके अंग प्रत्यंगमें विरहाग्निकी ज्वाला भड़क रही थी, हृदयमें विरहाग्नि धधक रही थी. हमें लगता था कि हमारे प्राण नहीं रहेंगे, तत्काल निकल जाएँगे.

एवो व्रह खमी रह्यो, में जाणुं जीव निनाल ।
आसा अमने नव मूके, नहीं तो देह छाडुं ततकाल ॥ ३३

इस प्रकारका दारुण विरह हम सहन करतीं रहीं. हम जानती थीं कि हमारे

प्राणका सम्बन्ध केवल आपसे जुड़ा हुआ है. इसलिए आपसे मिलनेकी आशा बनी रही अन्यथा तुरन्त शरीर छोड़ देतीं.

तमे कहेसो जे एम कहे छे, नेहेचे जाणो जीव मांय ।
तमारा सम जो तम विना, एक अधखिण में न खमाय ॥ ३४

आप कहेंगे कि ये सखियाँ ऐसे ही कह रहीं हैं, किन्तु आप यह निश्चित मान लें कि हमारे जीवकी यही दशा थी. आपकी सौगन्ध है कि आपके बिना आधेक्षणके लिए भी रहा नहीं जा रहा था.

सखियो तमे साचुं कह्युं, ए वीती छे मुने वात ।
तमने व्रह उपनूं मारो, हुं कहुं तेहनी भांत ॥ ३५

प्रियतम श्रीकृष्णजी कहते हैं, हे सखियो ! तुमने सत्य ही कहा है. यह घटना मेरे साथ भी घटी है. तुम्हारा विरह मुझे भी असह्य हो रहा था. मैं उस विषयमें कह रहा हूँ.

आपण रंग भर रमतां, वृख आडो आव्यो खिण एक ।
तमे प्रेमे जाण्युं कै जुग वीत्या, एम दीठां दुख अनेक ॥ ३६

जब हम प्रेमानन्दमें मग्न होकर रामत कर रहे थे तो उस समय एक वृक्ष आड़े आ गया. प्रेममें निमग्न होनेके कारण तुम्हें ऐसा आभास हुआ कि कई युग बीत गए. इस प्रकार क्षण मात्रमें अनेक दुःख दिखाई दिए.

ज्यारे पसरी जोगमाया, में इछा कीधी तमतणी ।
हुं वेण लऊं तिहां लगे, मुझ उपर थई घणी ॥ ३७
एक पल मांहें रे सखियो, कलप अनेक वितीत ।
ए दुख मारो जीव जाणे, सखी प्रेमतणी ए रीत ॥ ३८

श्रीकृष्ण पहेलेकी बात करते हुए कहते हैं कि जब योगमायाने रास मण्डलकी रचना की तो मुझे भी आप सबसे मिलनेकी इच्छा हुई. उस समय आपको बुलानेके लिए मैंने ज्यों ही वंशी हाथमें ली इतनी देर में तो न जाने मेरे ऊपर क्या-क्या बीती. अरी सखियो ! एक पलके अन्दर तो कितने कल्प

व्यतीत हो गए. यह विरहजन्य दुःख तो मेरा जीव ही जानता है. सखि ! प्रेमकी यही रीति होती है.

भीडी ते अंग इन्द्रावती, सखी कां करो तमे एम ।
जीवन मारा जीवनी, दुख करो एम केम ॥ ३९

इस प्रकार प्रियतमने इन्द्रावतीको गले लगाया और कहा, सखी ! तुम ऐसा क्यों कर रही हो ? तुम तो मेरी प्राणस्वरूपा हो इस प्रकार दुःखी क्यों होती हो ?

चित चोरी लीधुं दई चुमन, सखी कहो करुं हुं तेम ।
मारा जीव थकी अलगी नव करुं, जुओ अलवी थैयो जेम ॥ ४०

तब प्रियतमने चूमते हुए इन्द्रावतीका चित्त चुरा लिया और कहने लगे, हे सखी ! तुम जैसा कहोगी मैं वैसा ही करूँगा. मैं तुम्हें अपने प्राणोंसे कभी अलग नहीं करूँगा. मैंने देख लिया कि तुम किस प्रकार दुःखी हुई हो.

सखियो मारी वात सुणो, कां करो ते एवडां दुख ।
पूरुं मनोरथ तमतणां, सघली वाते दऊं सुख ॥ ४१

हे सखियो ! तुम मेरी बात सुनो. तुम इतनी अधिक दुःखी क्यों हो रही हो ? मैं तुम्हारे मनोरथ पूर्ण करूँगा और तुम्हें सभी प्रकारसे सुख दूँगा.

मारु अंग वालुं तमतणे, वचन वालुं जिभ्या मुख ।
बोलावुं ते मीठे बोलडे, जोऊं सकोमल चख ॥ ४२

मैं अपना शरीर ही तुम पर समर्पित करता हूँ. अपनी जीभके साथ वचन भी तुम्हें ही सौंपता हूँ. मीठी वाणीसे तुम्हें पुकारूँगा और कोमल नयनोंसे तुम्हें निहारता रहूँगा.

हवे वाला हुं एटलुं मागुं, खिण एक अलगां न थैए ।
जिहां अमने व्रह नहीं, चालो ते घर जैए ॥ ४३

तब इन्द्रावती सखी इस प्रकार कहने लगी, हे प्रियतम ! अब मैं इतना ही माँगती हूँ कि आप एक क्षणके लिए भी हमसे अलग न हों. जहाँ हमें कभी भी विरह सहन न करना पड़े, चलिए, ऐसे घरमें चलें.

मागी दुख सुखनी रामत, ते वाले कीधी आ वार ।
मन चित रंगे रमाडियां, कांई आपणने आधार ॥ ४४

हे सखियो ! हमने दुःख-सुखका खेल (परमधाममें) माँगा था, उसे प्रियतमने यहाँ इस समय दिखाया. मन और चित्तके अनुकूल प्रियतम धनीने हमें कुछ इस प्रकार रमण करवाया.

वृन्दावन देखाडियुं, रास रमाड्यां रंग ।
पूरव जनमनी प्रीतडी, ते हवडा आंणी अंग ॥ ४५

प्रियतमने हमे अपूर्व वृन्दावन दिखाया और रसपूर्ण रास रमण करवाया. पूर्वजन्म अर्थात् मूल परमधामके प्रेम और स्नेह अब हमारे अंग अंगमें प्रकट हुए हैं.

इन्द्रावती कहे अमने वाला, भला रमाड्यां रास ।
पछे ते घर मूलगे, वालो तेडी चाल्या सहु साथ ॥ ४६
वाला वालमजी मारा, जी रे प्रीतम अमारा ॥

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम ! आपने हमे सुन्दर ढङ्गसे रास रमण करवाया. तदुपरान्त प्रियतम श्रीकृष्णजी समस्त सखियोंको साथ लेकर (बुलाकर) मूल घर परमधामकी ओर चले.

प्रकरण ४७ चौपाई ९०७

श्री रास ग्रन्थ (किताब अंजील) सम्पूर्ण

पहले बीज उदय हुआ, पुरी जहां नौतन ।
सब पुरियों में उत्तम, हुई धन धन ॥

ए मधे जे पुरी कहावे, नौतन जेहनुं नाम ।
उत्तम चौदे भवनमां, जिहां वालानो विश्राम ॥

– *महामति श्री प्राणनाथ*

श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर